॥ इतिहास तिमिरनाशक ॥

ITIHAS TIMIRNASAK.

HISTORY OF INDIA,
IN THREE PARTS,
BY RAJA SIVAPRASAD, C.S.I.,

Fellow of the University of Calcutta, and late Inspector of the Second Circle, Department Public Instruction, North-Western Provinces and Oudh.

तीन हिस्सों में

मुताबिक़ हुक्म जनाब नव्वाब अनरबल लेफ़्टिनेंट
गवर्नर बहादुर ममालिक शिमाल व मग़रिब और
चीफ़ कमिश्नर अवध

राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द (३) ने बनाया

दूसरा हिस्सा

PART II.

इलाहाबाद सरकारी छापेख़ाने में छापा गया था
विद्यार्थियों के लाभके लिये

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छपा
जून सन् १८८८ ई० ॥

2nd edition, 1500 copies. | दूसरी बार १५०० पुस्तकें
Price, per copy, 3 annas | मोल फ़ी पुस्तक ≡) आने



॥ इतिहास तिमिरनाशक ॥

ITIHAS TIMIRNASAK.

HISTORY OF INDIA,
IN THREE PARTS,

BY RAJA SIVAPRASAD, C.S.I.,

Fellow of the University of Calcutta, and late Inspector of the Second Circle, Department Public Instruction, North-Western Provinces and Oudh.

तीन हिस्सों में

मुताबिक़ हुक्म जनाब नव्वाब अनरबल लेफ़्टिनेंट गवर्नर बहादुर ममालिक शिमाल व मग़रिब और चीफ़ कमिश्नर अवध

राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द (३) ने बनाया

दूसरा हिस्सा

PART II.

इलाहाबाद सरकारी छापेख़ाने में छापा गया था

विद्यार्थियों के लाभके लिये

लखनऊ

मुंशीनवल किशोर के छापेख़ाने में छपा

मई सन् १८८८ ई०

PREFACE.

In this I have endeavoured (a thing nearly impossible) to unite fulness of information with brevity of narrative, and I trust, that from it, may be derived a tolerably clear idea of the origin and progress of the British Empire in India.

S. P.

इत्तिला

जो लफ़्ज़ फ़ारसी हर्फ़ों के सबब आइनेतारीख़नुमा में दूसरी तरह पर लिखे हैं उन के नीचे लकीर खींच दी है और फ़िहरिस्त आगे लिखी है :—

इतिहास तिमिरनाशक में	आइनेतारीख़नुमा में
महाद्वीप	बर्रिआज़म
भगवान	मालिक
ईश्वर	मालिक
राजधानी	दारुल् हुकूमत
ईश्वर की कृपा	मालिक की मिह्रबानी
स्त्रियां	औरतें
अर्थ	मानी
परलोक	इन्तिक़ाल
परमेश्वर	मालिक पैदा करने वाला
कृपानिधान दयावान क्षमासागर जगत उजागर श्रीमती महारानी इम्प्रेस विक्टोरिया	मादिनि करम मख़्ज़नि रहम अफ़ु मंताक़ शुह्रे आफ़ाक़ आली जनाब क़मर रकाब शाहंशाह फ़लक बारगाह मलिकेमुअ़ज़्ज़मा क़ैसरहिंद विक्टोरिया दाम इक़बालहा

इतिहास तिमिरनाशक

दूसरा हिस्सा

आगे अंगरेज़ों को यहां आने के लिये समुद्र का रास्ता मालूम न था जहाज़ी तिजारत यहां से ख़ाली ईरान अरब और मिसर वा चीनवालों के साथ जारी थी यानी ये लोग अपने जहाज़ अरब और बंगाले ही की खाड़ी के अंदर चलाया करते थे। समुद्र को बे हद और अपार समझ कर कभी उन खाड़ियों के बाहर न जाते थे॥ और यह तो कब उन का हियाव हो सकता था कि हिंद के समुद्र से निकल कर अफ़्रीका के पच्छम अटलांटिक समुद्र में पहुंचते। लेकिन जो सब चीज़ें हिंदुस्तान से जहाज़ों पर मिसर और बसरे को जाती थीं और फ़िर वहां से खुश्की और तरी की राह फ़रंगिस्तान में पहुंचती थीं उन की तिजारत में इतना फ़ाइदा उठता था कि फ़रंगिस्तान वाले यहां की सीधी राह पाने के लिये निहायत बेचैन थे और हर तरफ़ से उस को ढूंढ़ खोज कर रहे थे॥ कोई* यह समझ कर कि ज़मीन गोल है हिंदुस्तान आने के लिये अपना जहाज़ सीधा पच्छम को चलाता और अमरिका के किनारे जा अटकता। कोई † यह समझ कर कि पुराने महाद्वीप के चारों तरफ़ समुद्र है किनारे किनारे उत्तर को ले जाता और वहां उत्तर समुद्र के जमे हुए बर्फ़ में फंस रहता॥ और कोई ‡ यह समझ कर कि अफ़्रीका के पूरब हिंदुस्तान है उस के गिर्द घूमने को निकलता पर आधी दूर जाके मारे तूफ़ान के पीछे मुड़ आता। और उस जगह का नाम तूफ़ानी अंतरीप रखता॥ यहां तक कि सन १४९७ में पुर्तगाल के बादशाह इमानुअल ने वास्कोडिगामा को तीन जहाज़ लेकर दखन

---

* कोलम्बस॥ † डच और अंगरेज़॥ ‡ बार्थोलोम्यू डिआज़॥

की राह हिंदुस्तान जानेका हुक्म दिया उस ने न कुछ तूफ़ान का ख़याल किया न तूफ़ानी अंतरीप का। चलतेचलते ग्यारह महीने के लगभग अर्से में अफ़्रीका घूमकर मलीबार के किनारे कल्लीकोट में लंगर आ डाला॥ उस वक़्त वहां के राजा का नाम पुर्तगाल वालों ने शामोरिम् लिखा है वह तो इन की ख़ातिर्दारी करना चाहता था लेकिन अरब वालों ने डाह खा के उस का दिल इन से फेर दिया। वास्कोडिगामा ने जबयह मालूम किया तुर्त लंगर उठा के पाल अपने मुल्क की तरफ़ उड़ाया॥ दूसरे साल पुर्तगाल के बादशाहने १३ जहाज़रवाना किये। और उन पर आठ पादरी और १२०० सिपाही भीभेजे॥ अल्वारिज़् काब्रल उनका अफ़्सर था। छः जहाज़ इन में से कल्लीकोट पहुंचे राजा इन की भीड़ भाड़ देख कर दब्दबे में आ गया॥ जिन हिंदुओं को वास्कोडिगामा जाते वक़्त यहां से पकड़ ले गया था और अब अल्वारिज़् काब्रल वापसलाया था उन्हों ने पुर्तगाल का बहुत बढ़ावे के साथ बयान किया निदान राजा ने पुर्तगाल वालोंको कल्लीकोट में कोठी खोलने की परवानगी दी। और फिर धीरे धीरे उन्हों ने और भीजगह कोठी खोलनी शुरू की॥ सन् १५१० में बिजयपुर वालों से गोवा छीन लिया। और तबसे वहीं बराबर उनका यहांदारुल-हुकूमत बना रहा॥

पुर्तगाल वालोंकी देखादेखी डच और फ़रासीस वाले भी अपने जहाज़ इधर लाने लगे। फिर यह कबहोसकताथा कि १५९९ ई० अंगरेज़ चुपचाप बैठे रहते॥ सन् १५९९ में इंगलिस्तान के कुछ आदमियों ने साझा करके तीस लाख रुपये पूंजी के तौर पर इकट्ठाकिये। और उस वक़्तकी मलिका क्वीन अलीज़ेबथ्से इस मज़मून की एक सनद लेली कि पंदरह बरस तक बे उनकीपर-वानगी कोई दूसरा आदमी उनके मुल्क का पूरबमें तिजारत न करने पावे॥ साझियोंको अंगरेज़ोमें कम्पनीकहतेहैं इसीलिये इन साझियोंका नाम ईस्टइंडिया कम्पनी*पड़गया। इनका जलसा

*मशरिक़ी हिंदुस्तान के साझी।

जो साल में चार बार यानी सिमाहीवार हुआ करताथा कोर्ट आफ़ प्रोप्राइटर्स यानी मालिकों की कचहरी कहलाया॥ उसमें जो पांच हज़ार रुपये और उस से ऊपर के हिस्से दार थे उन्हें राय देने का इख़तियार था। और आईन क़ानून बनाना और नफ़े का बांटना भी इन्हीं के हाथ था॥ बाक़ी सब काम के लिये यह अपने दर्मियान से साल के साल चौबीस आदमी कारबारी मुक़र्रर कर देते थे इस चौबीसी का नाम कोर्ट आफ़ डैरेक्टर्स रहा बीस हज़ार से कम का हिस्सेदार डैरेक्टर नहीं हो सकता था। और उन का मीरमजलिस चेअरमैनकहलाता था॥ हिंदुस्तान में होते होते तीन इहाते हो गये। यानी कलकत्ता बम्बई मंदराज और तीनोंमें तीन प्रेसिडेंट या गवर्नर अपनी अपनी कौंसल समेत रहने लगे॥ उस वक़्त मुलकी साहिब लोगों के चार दर्जे थे। पांच बरस तकमुतसद्दी पांच से आठ तक कोठीवाले आठ से ग्यारह तक छोटे सौदागर और ग्यारह बरस हिन्दुस्तान में रहने के बाद बड़े सौदागर कहलाते थे इन्हीं बड़े सौदागरोंमें से पुराने साहिबों को चुन कर कौंसल का मेम्बर बनाते थे॥

निदान सन् १६०६ में सर हिनरी मिडलटन इस कम्पनी- १६०६ ई० का भेजा हुआ तीन जहाज़ लेकर सूरत में आया लेकिनख़रीद फ़रोख़त के बाब में हाकिम से तक़रार हो जाने के सबब उस वक़्त वहां कोठी खोलने की परवानगी नहीं मिली। सन् १६१३में १६१३ ई० जहांगीर ने इन्हेंसूरत घोघा खंभात और अहमदाबाद में और फिर थोड़ेही दिनों बाद शाहजहांने सिंध और बंगाले में भी कोठियां खोलने की परवानगी दी॥ महसूल साढ़े तीन रुपया सैकड़ा ठहरा यह उसवक़्तकिसके ख़यालमें था कि इसीकम्पनी के नौकर उस की औलाद और उस के जानशीन को क़ैद कर के रंगून ले जावेंगे। और सारे हिंदुस्तान में अपना सिक्का चलावेंगे॥

सन् १६३६ में इन्हों ने चंद्रगिरि के राजा से जो बिजय- १६३६ ई० नगर वालों की औलादमें से था परवानगीलेकर मंदराजबसाया

१६६८ ई० और वहां सेंटजार्ज किला बनाया ॥ सन् १६६८में इंगलिस्तानके बादशाह दूसरे चार्लस ने बम्बई का टापूजो उसने पुर्तगाल वालों से जहेज़ में पाया था । सौरुपये साल ख़राज परकम्पनी को दे डाला ॥ कलकत्ता भी उन दिनों निरा एक गांवसाथा । छोटानटी और गोबिंदपुर इनदोनों गावों के साथ उस की सनद दिल्ली के बादशाह से लेकर वहां इन्हों ने फोर्ट विलियम क़िला बनाया ॥

१७१५ ई० सन् १७१५ में कलकत्ते के प्रेसिडेंट ने कुछ तुहफ़ातिहाइफ़ के साथ दो साहिबों को एलचियों के तौर पर फर्रुख़सियर के दर्बार में भेजा । बादशाह उन दिनों बीमार था ॥ मर्ज़ीभगवान की इन्हीं एलचियों के साथ हमिल्टन नाम जो डाकृर था । उसी के इलाज से चंगा हुआ ॥ हुक्म दिया इनाम मांग जो मांगेगा । मुहमांगा पावेगा ॥ इस ने अपने लिये तो कुछ न मांगा पर अर्ज़ किया कि अगर जहांपनाह खुश हैं तो कम्पनी को बंगाले में अड़तीस गांव की ज़मींदारी ख़रीदने की परवानगी मिले । और कलकत्ते के प्रेसिडेंट की दस्तक से जो माल रवाना हो महसूल के लिये उस की तलाशी न ली जावे ॥ सच पूछो तो डाकृर हमिल्टन ने बड़ी हिम्मत का काम किया । अपना नुकसान सह के अपने मुल्क वालों का फ़ाइदा चाहना हक़ीक़त में बड़ी हिम्मत का काम है बादशाह ने इसकी दोनों बातों को मान लिया ॥ उनदिनों में हिंदुस्तानसे छीटऔरसूती कपड़ा इंगलिस्तान को बहुत जाताथा अंगरेज़ोंकाइरादाथाकि कलकत्ते के गिर्द ज़मींदारी लेकर इतने जुलाहे बसावें किफिर कपड़ों की तलाश गांवगांव न करनीपड़े। क्याअपरम्पारमहिमा है सर्वशक्तिमान जगदीश्वर की कि यहां के जुलाहे तो जुलाहे ही बने रहे और इंगलिस्तान वाले जहाज़ भर भर कर अब यहां सूती कपड़े पहुंचाने लगे ॥ निदान ज़मींदारीतोउस वक़् बंगाले के सूबेदारने अंगरेज़ोंके हाथ नहीं लगनेदीज़मींदारोंको बेचनेकी मनाही करदी ॥ लेकिनइसके मालपरमहसूल

मुआफ़हो जानेसे उसे बहुत नुक़सान पहुंचा। प्रेसिडेंटनेंसारा माल अपनी दस्तक से मंगाना और रवाना करना शुरू किया यानी जो माल कम्पनी का नहीं था उसको भी अपनेऔरदूसरे साहिबों के फ़ाइदे के लिये दस्तक दे कर महसूल कोतलाथों से बचाने लगा॥

इस अर्से में फ़रासीसियोंने पटुच्चेरीको मज़बूत करलिया था। जब सन् १७४४ में इंगलिस्तान और फ़रासीस के दर्मियान १७४४ ई० दुश्मनी पैदा हुई तो उन्होंने हज़ार दो हज़ार सिपाहोंमिलाकर मंदराज घेर लिया॥ अंगरेज़ वहां उस वक़्त ३०० से ज़ियादा न थे पांच दिन घिरे रह कर फ़रासीसियों के क़ौल क़रार पर दर्वाज़ा खोल दिया। और जो कुछ था उन के हवालेकिया॥ लेकिन थोड़े ही दिनों बाद कुछ अंगरेज़ी जंगी जहाज़ आगये तो उन्हों ने मंदराज में भी क़बज़ा किया और पटुच्चेरीभाघेरा। पर महीने भर बाद बरसात आजाने के सबब घेरा उठा लेना पड़ा॥

तनजोर का राजा प्रतापसिंह नाबालिग़ था उस के भाई साहूजी ने अंगरेज़ों से कहा कि तनजोर वाले प्रतापसिंह से नाराज़ और मुझसे राज़ी हैं अगर गद्दी दिला दो देवीकोटे का क़िला और ज़िला तुम्हारे हवाले करूं अंगरेज़ी फ़ौज चढ़गयी। क्लाइव तब लेफ़्टिनेंट था धावा इसी के नाम से हुआ क़िला टूटने पर प्रतापसिंह ने देवीकोटा अंगरेज़ों को दे दिया और साहूजी के खाने को कुछ सालाना मुक़र्रर कर दिया अंगरेज़ी सर्कार इस बात से राज़ी हो गयी॥

पटुच्चेरी का फ़रासीसी गवर्नर डूप्ले अंगरेज़ोंसे बड़ी लागरखता था। जोबातइसमुल्कमें अबअंगरेज़ों कोहै वह उसेफ़रासीसियों केलिये हासिल किया चाहताथा॥ सन् १७४८ मेंदखनकेसूबेदार १७४८ ई० आसिफ़जाह के मरनेपर* जब उसके बेटे पोतों में तकरारहुई

* यह १०४ बरस का होकर मरा॥

गये। और जो बेचारे बेख़बरी में क़िले के अंदर रहे वह दूसरे दिन सिराजुद्दौला की क़ैदमें आये॥ जब उनके अफ़सर हालवेल साहिब को मुश्कें बांध कर उस के साम्हने लाये उसने तुर्त उस की मुश्कें खुलवा दीं और कहा कि ख़ातिरजमा रक्खो तुम्हारा कुछ नुक़सान न होने पावेगा। लेकिन रात को जब कैदियों के रखने के लिये कोई मकान न मिला तो सिराजुद्दौला के आदमियों ने १४६ अंगरेज़ो को एक कोठरी में जो कुल १८ फ़ुट लंबी और १४ फ़ुट चौड़ी थी बंद कर दिया॥ इसकोठरी का नाम अंगरेज़ो में "ब्लेकहोल" यानी काली बिल रक्खागया है जो कुछ उन क़ैदियों के जी पर रात को बीती उन्हीं काजी जानता होगा बहुतेरे घायल थे बहुतेरे शराब के नशे में गर्मी की शिद्दत थी प्यास निहायत थी। सुबह को जब दर्वाज़ा खुला कुल २३ जीते निकले सो शकल उनकी भी मुर्दों कीसी बनगयी थी॥ हालवेल साहिब को सिराजुद्दौला के साम्हने ले गये उस ने इस की कुछ भी दाद फ़र्याद न सुनी यही पूछता रहा कि बतलाओ अंगरेज़ों ने ख़ज़ाना कहां गाड़ा है और उसके और दो और अंगरेज़ों के पैरोंमें बेड़ियां डलवा कर इन तीनों को तोएक खुली कश्ती परक़ैद रहने के लिये मुर्शिदाबाद भेजा औरबाक़ी को छोड़ दिया। मुर्शिदाबाद में अलीवर्दीख़ां की बेगम ने इन तीनों को भी सिराजुद्दौला से सिफ़ारिश करके छुड़वा दिया॥ जब यह ख़बर मंदराज में पहुंची वहां वालोंने ९००गोरे और १५०० सिपाही दे कर क्लाइव को जो अब इंगलिस्तान सेलेफ़्टि-नंट कर्नल हो आया था १० जहाज़ों परकलकत्ते रवानाकिया।

१७५७ ई० दूसरी जनवरी सन्१७५७ को क्लाइवने कलकत्ता लिया॥ तीसरी फ़रवरी को सिराजुद्दौला ४०००० आदमियों की भीड़ भाड़ ले-कर कलकत्ते के पास पहुंचा लेकिन क्लाइव ने क़िले से निकल कर उस पर एक ऐसा हल्ला किया कि अगर्चि उसहल्लेमें क्लाइव को १२० गोरे १०० सिपाही और दो तोपें खोकर फिरक़िले में पनाह लेनी पड़ी। पर सिराजुद्दौला ने २२ अफ़सर और ६०० आदमियों के मारे जाने से घबरा कर इस शर्त पर सुलह कर

ली ॥ कि जो कुछ कम्पनी का माल असबाब लूट और ज़ब्तीमें आया था सब लौटा दिया जावे कम्पनी के आदमी कलकत्ते में क़िला चाहे जैसा मज़बूत बनावें। टकसाल अपनी जारी करें ॥ अठतीसों गांव पर जिन की सनद १७१७ से उन्हों ने पायीथी अपना क़ब्ज़ा रक्खें। और महसूल की मुआफ़ी के लिये उन की दस्तक काफ़ी समझी जावें ॥ इस में शक नहीं कि यह शर्त सिराजुद्दौलाने ख़ाली भुलावा देने और क़ाबूपाने के लिये की थी। जी में उस के दग़ा थी ॥ वह अंगरेज़ों से दिली नफ़रत रखता था और फ़रासीसियोंकी पच्छ करताथा। बल्कि उन्हें नौकर भी रखने लगा था ॥ क्लाइव ने ख़ूब समझ लिया था कि इस मुल्क में या तो अंगरेज़ ही रहेंगे और या फरासीसी, दोनोंका हर्गिज़ गुज़ारा नहीं। एक नियाम में दो तलवारों का रहना कभी होता नहीं ॥ पस जब सिराजुद्दौलाने फ़रासीसियों का सहारा ढूंढ़ा। तो क्लाइव को ख़ामख़ाह उसका इलाज करनापड़ा ॥ सिराजुद्दौलासे सब नाख़ुश थे। उसके ज़ुल्म से लोग तंग आगये थे ॥ हर एक को उस के हाथ से अपनी इज़्ज़त का ख़ौफ़ था। हर एक अपने जी में उसका ज़वाल चाहता था ॥ निदान उसके बख़शी अलीवर्दीख़ांके दामाद मीर-जाफ़र और उसके दीवान रायदुल्लभ और * जगतसेठ महताब राय ने अपनी जान माल और इज़्ज़त आबरू उस ज़ालिम के हाथ से बचाने को मुर्शिदाबाद के रज़ीडंट वाट्स साहिब की मारिफ़त क्लाइव के पास यह पयाम भेजा कि अगर आप सिराजु-द्दौला की जगह पर मीरजाफ़र को सूबेदार बनाओ तो हम सब आपकी मदद करते हैं। क्लाइवने कहला भेजा कि "ख़ातिर्जमा रक्खो मैं ५००० आदमी लेकर आता हूं जिन्होंने आज तक कभी पीठ नहीं दिखलायी अगर तुम सिराजुद्दौला को गिरफ़्तार न कर सको हमलोग ज़रूर उसे मुल्क से निकाल सकते हैं" ॥ और फिर साथ ही उन शर्तों पर जो सिराजुद्दौला के साथ ठहरी थीं

---

* इस किताब बनाने वाले के परदादा के चचेरे भाई ॥

मीरजाफ़र से एक अ़हदनामा लिखवा लिया लेकिन उस में इतना और बढ़ाया गया कि कलकत्ते से दखन कालपी तक कम्पनी की ज़मींदारी समझी जावे फ़रासीसियों का जो कुछ हो वह अंगरेज़ों का और फ़रासीसी हमेशा के लिये बंगाले से निकाल दिये जावें। और मीरजाफ़र की तरफ़ से करोड़ रुपये कम्पनी को पचास लाख कलकत्ते के अंगरेज़ों को बीस लाख हिंदुस्तानियों को सात लाख अर्मनियों को पचास लाख सिपाही और जहाज़ियों को और दस लाख कौंसल के मेम्बरों को नुक़्सानी के तौर पर मिलें॥

सेठ अमीचंद का कलकत्ते में चार लाख रुपया लूटा गया था। और कुछ और भी नुक़्सान हुआ था॥ वह सिराजुद्दौला के ज़रा मुंह लग गया था। और इस सबब से वाट्स साहिब का भी उससे बहुत काम निकलता था॥ वाट्स साहिब ने अमीचंद को भी इस मश्वरे में शरीक किया। लेकिन अमीचंद को लालच ने घेरा॥ कहा कि जो कुछ अंगरेज़ों को ख़ज़ाने से मिले ५) सैकड़ा मुझे दो नहीं तो मैं अभी सिराजुद्दौला से यह सारा भेद खोल दूंगा वाट्स ने क्लाइव को लिखा क्लाइव ने देखा कि अमीचंद तो हम सब को आफ़त में डाला चाहता है नाचार दो काग़ज़ों पर दो तरह का अ़हदनामा लिखा लाल काग़ज़ पर जो अ़हदनामा लिखा उसमें तो अमीचंद को ५) सैकड़ा देने का इक़रार था। और सफ़ेद काग़ज़ पर जो लिखा उस में उस का नाम ही न था॥ इन दोनों काग़ज़ों पर जब कौंसल वालों के दस्तख़त होने लगे अडमिरल यानी अमीरुल बहर वाट्सन ने लाल काग़ज़ पर दस्तख़त करने से इनकार किया लेकिन कौंसल वालों ने उसका दस्तख़त आप बना लिया गोया फ़ार्सी मसल पर "गर ज़रूरत बुवद रवा बाशद" काम किया॥

निदान क्लाइव तीन हज़ार आदमी और ९ तोप लेकर कलकत्ते से निकला। सिराजुद्दौला भी पचास हज़ार सवार पियादे और ४० से ऊपर तोपें लेकर पलासी तक आया॥ चालीस पचास

फ़रासीसी भी उस के साथ थे तेईसवीं मई को इसी जगह लड़ाई हुई। सिराजुद्दौला ने पगड़ी उतारकर मीरजाफ़रके पैरों पर रखदी॥ और कहा कि अब मुआफ़ कीजिये। लेकिनउसने यही सलाह दी कि आज लड़ाई मौकूफ़ रखिये॥ फ़ौज पीछे हटा लीजिये कल लड़ेंगे और राय दुल्लभ ने अर्ज़ की कि हज़ूर का मुर्शिदाबाद ही तशरीफ़ ले चलना बिहतर है। बसइसीमें ख़ैर है॥

निदान सिराजुद्दौला की फ़ौज का मुड़ना था। औरअंगरेज़ों का चीतों की तरह हिरनों पर लपकना॥ सिराजुद्दौलाकीफ़ौज भागी। अंगरेज़ों ने छ मील तक पीछा किया यही पलासीकी फ़तह गोया हिंदुस्तान में अंगरेज़ी अमल्दारी की नेवजमी॥

सिराजुद्दौला के पैर मुर्शिदाबाद में भी न जमे भरोसा तो उसे किसीका थाही नहीं और भरोसा उसे तबहो सकता जब उस ने किसी के साथ कुछ भलाई की होती। एक बेगमऔरएक ख़ोजा साथ ले कर भागा लेकिन राजमहल के पास एक फ़क़ीर ने उसे पहचान लिया सिराजुद्दौला ने किसी ज़माने में उस के नाक कान कटवाये थे फ़क़ीर ने तुर्त वहां के हाकिम से ख़बर कर दी। वह मीरजाफ़र का भाई था सिराजुद्दौलाको बांध कर मुर्शिदाबाद भेज दिया मीरजाफ़र को कुछ किसी क़दर रहम आया। लेकिन उस का बेटा मीरननिरापत्थरथा॥ वे अपने बाप की इत्तिला के उसकी जान ले डाली। सिराजुद्दौला की उमर तब तक बीस बरस की भी नहीं हुई थी॥

ख़ज़ाने की जब मौजूदात ली गयी डेढ़करोड़रुपयाशुमार में आया। तो भी अहदनामे के बमूजिब सबके देने को काफ़ी न था॥ तब यह ठहरा कि आधा तो चुका दियाजावे। और आधा तीन क़िस्तों में तीन सालके दर्मियान दिया जावे॥ क्लाइव को मीरजाफ़र ने अहदनामे केसिवाय सोलहलाखरुपया और दिया अमीचंद जी फूलेहुये थे। उन्हों ने अपने हिसाब से अपने हिस्से का रुपया तीस पैंतीस लाख जोड़ रक्खा था जब अहदनामा पढ़ा गया और इन्हों ने अपना नाम न सुना

घबराये ॥ और बोल उठे कि साहिब वह तो लाल काग़ज़ पर था । क्लाइव ने जवाबदियाकिठीक लेकिनयह सफ़ेद काग़ज़पर है वह लाल काग़ज़ ख़ाली आपको सब्ज़ बाग़ दिखलानेकेलिये था आप को इस में से एक पैसा भी नहीं मिलेगा ॥ अमीचंद ग़श खा के ज़मीन पर गिर पड़ा । नौकर पालकी में डाल के घर ले गये डेढ बरस के अंदर पागल हो के मर गया

१७५८ ई० उधर दखन में अंगरेज़ और फ़रासीसियों की लड़ाई न मिटी । कौंटलाली ने भी जो १७५८ में फ़रासीसियों की तरफ़ से यहां का गवर्नर जेनरल हो कर आया था डुप्ले की तरह अंगरेज़ों को उखाड़ना और फ़रासीसियों की अमल्दारी को फैलाना चाहा यहां तक कि अंगरेज़ों ने मौसली पट्टन उनसे छीन कर दखन के सूबेदार सलाबतजंग से उस की और कई और ज़िलों की अपने नाम सनद लिखवाली ॥ और यहभी उस से इक़रार ले लिया कि वह फ़रासीसियोंसे कभीकुछ सरोकार न रक्खे और सन् १७६१ में सिवाय कल्लीकोट और सूरत की कोठियों के और कुछभी फरासीसियोंके क़ब्ज़ेमें न छोड़ाकहते हैं कि जब अंगरेज़ों ने पटुच्चेरी लिया और उस पर अंगरेज़ी निशान चढ़ाया क़िले और जहाज़ों पर की तोपें सलामी से गोया कान बहरे करती थींहज़ार तोपों की सलामी कुछहंसी ठट्ठा न थी ॥ लाली बुरी तरह से फ़रासीसमें क़तलकियागया। और फिर तभी से फ़रासीसियों ने निराश होकर यहां अपनी अमल्दारी जमाने का ख़याल बिलकुल छोड़ दिया ॥ हिंदुस्तान के दिन अच्छे थे क्योंकि अंगरेज़ी अमलदारी में अमर

---

* अफ़सोसहै कि क्लाइव ऐसेमर्दसे ऐसी बातज़हूरमें आवे। पर क्या करें ईश्वर को मंज़ूर है कि आदमी का कोईकामबेऐब न रहे ॥ इस मुल्क में अंगरेज़ी अमलदारी शुरू से आज तक मुआमले की सफ़ाई और क़ौल क़रारकी सचाई में गोयाधोबी का धोया हुआ सफ़ेद कपड़ा रहा है । ख़ाली इसी अमीचंद ने उस में यह एक छींटा सा लगा दिया है ॥

हज़ार ऐब हों तो भी फ़रासीसी अमल्दारी से करोड़ दर्जे हम उसको बिह्तर कहेंगे। फ़रासीसियों की जहां कहीं ग़ैर मुल्क में अमल्दारी हुई सिवाय लूट क़त्ल और रअय्यत की तबाही के और कुछ भी सुनने में नहीं आया और अंगरेज़ों ने जिस जगह क़बज़ा किया दिन पर दिन उस की तरक़्क़ी होती गयी जिन लोगों ने फ़रासीस की तवारीख़ पढ़ी है और वहां वालों के सुभाव से अच्छे वाक़िफ़ हैं कभी हमारे इस लिखने पर अंगरेज़ों की ख़ुशामद का शुबहा न करेंगे॥

सन् १७५९ में दिल्ली के वलीअह्द आलीगुहर ने अपने बाप बादशाह आलमगीरसानी से नाराज़ हो कर अवध के सूबेदार की बहकावट से बिहार पर चढ़ाई की लेकिन क्लाइव मीर-जाफ़र की मदद को पहुंच गया। इस लिये वलीअहदको भागना पड़ा॥ बादशाह ने जो ज़मींदारी कम्पनी को दी थी उस की मालगुज़ारी तीस लाख रुपये के क़रीब जगतसेठकी सिफ़ारिश से जागीर के तौर पर ख़िताब के साथ दे कर क्लाइव को अपने अमीरों में शुमार कर लिया। और वलीअह्द की गिरफ़्तारीके लिये शुक्का भी लिख दिया॥ १७५९ ई०

सन् १७६० में क्लाइव इंगलिस्तान को गया और वहां अपने बादशाह से बड़ी इज़्ज़त के साथ लार्ड का ख़िताब पाया। ऐसा दौलतमंद हो कर आज तक कभी कोई यहां से फ़रंगिस्तान को नहीं लौटा॥ वलीअह्द अपने बाप के मारे जाने पर अब बादशाह हुआ। शाहआलम अपना लक़ब रक्खा॥ फ़ौज ले कर बिहार पर चढ़ा। पटने के साम्हने आ पड़ा॥ अंगरेज़ों ने उसे फिर शिकस्त दी और पीछा किया। मीरनभी साथ था डेरे पर बिजली गिरने से मर गया॥ मीरजाफ़र के दामाद क़ासिमअलीख़ांको नीयत बिगड़ी उसने बर्दवान मेदनीपुर और चटगांव ये तीन ज़िले और पांचलाख रुपये कम्पनीको और बीस लाख कौंसलवालों को देने का क़रार करके अंगरेज़ों को इस बातपर राज़ीकर लियाकि मीरजाफ़र कोतोवह सूबेदारी से मौक़ूफ़ करें। और क़ासिमअलीख़ां को उस की जगह १७६० ई०

मसनद पर बिठायें ॥ बादशाह से भी चौबीस लाख रुपया साल अदा करने के इक़रार परसनद हासिल हो गयी क़ासिमअलीख़ां का इरादा मीरजाफ़र की जान लेने का था । लेकिन वह कलकत्ते में जा रहा इस से बचगया ॥ बहाने अंगरेज़ों के पास मीरजाफ़र की मौक़ूफ़ी के बहुतथे पहले वह क़िस्तों का रुपया बिलकुल अदा नहीं कर सका था । दूसरे बादशाह से लिखा पढ़ी करता था तीसरे डच लोगों से साज़िश रखता था ॥

उनदिनों में कम्पनीके नौकरों को तिजारतकी कुछमनाही न थी तनख़्वाह से बढ़ कर तिजारत में फ़ाइदा उठाते थे। पान सुपारी तमाकू वग़ैरः सब चीज़ की तिजारत करते थे जब कम्पनी की तरह कम्पनी के नौकरों ने भी माल परमहसूल देना बंद किया बल्कि जो लोग कम्पनी के नौकर नहीं थे उन के माल को भी अपने नाम से बे महसूल चलाने लगे क़ासिम अलीख़ां घबराया । अपनी आमदनी का एक बड़ा सा हिस्सा उड़ जाता देखा ॥ कौंसलवालों कोलिखा लेकिन कौंसल वाले भी तो तिजारत करते थे । अपने माल पर महसूल देना किसे अच्छा लगता है क़ासिमअलीख़ां का लिखनाकुछभी ख़याल में न लाये ॥ क़ासिमअलीख़ां ने गुस्सेमें आकर परमिट बिल्कुल मौक़ूफ़ कर दी यह बात सुन कर कि अब किसी के माल पर कुछ महसूल न लिया जायगा अंगरेज़ों के छक्के छूट गये क्योंकि फिर फ़र्क़ क्या बाक़ी रहा । जिसभाव इनकामाल पड़ता था उसीभाव औरों का भी पड़गया ॥ अंगरेजोंनेक़ासिमअलीख़ांसे कहा कि तुमसिवाय हमलोगोंके और किसीकामाल बे महसूल मत जाने दो और जबउसने इनकायहग़ैरवाजिब कहना न मान कर मुक़ाबले पर कमर बांधी इन्होंने उस की मौक़ूफ़ी और मीरजाफ़र की बहाली का इश्तिहार दे दिया । मीरजाफ़र ने इन्हें तीस लाख रुपया नक़द देने और बारह हज़ार सवार और बारह हज़ार पियादों का ख़र्च चलाने के लिये इक़रार नामा लिख दिया ॥ चौबीसवींजुलाईको अंगरेज़ी फ़ौज मुर्शिदाबाद में दाख़िल हुई और क़ासिमअलीख़ां वहांसे

पटने को तरफ़ भागा । रास्ते में उस को फ़ौज से और अंगरेज़ों से गढ़िया और उधवानाले में दो लड़ाइयांहुईं क़ासिमअ़लीख़ां की तरफ़ से समरू* जो साबिक़ फ़रासीसियों केयहां सार्जन्ट था ख़ूब लड़ा ॥ लेकिन फ़तह अंगरेज़ों की रही इस ख़ौफ़ से कि जगतसेठ अंगरेज़ों का मददगार है क़ासिमअ़लीख़ां ने उसे हवालात में अपने साथ रक्खा । जब मुंगेर से आगे बढ़ा जगत सेठ महताबराय और उस के भाई सरूपचंद को रास्ते में अपने हाथ से क़त्ल कर डाला ॥ साम्हने खड़ा करकेतीरों से मारा । उनके साथ एक उनका नमकहलाल ख़िदमतगार चुन्नी रहगया था ॥ बहुतेरा समझाया । लेकिनसाथ न छोड़ा ॥ जब क़ासिमअ़लीख़ां तीर चलाता। वह साम्हने आकरखड़ा हो जाता ॥ जबवह मरकर गिरगयाहै तब दोनों भाइयोंके तीर लगा है॥ पटने पहुंच कर उस ज़ालिम ने दो सौ के लगभग अंगरेज़ों को जिन्हें उसने क़ैद कर रक्खाथा । कटवा डाला ॥

अंगरेज़ों ने कर्मनासा नदी तक उसका पीछाकिया निदान वह इलाहाबादमें बादशाह के पासजाकर नव्वाब वज़ीरशुजा उद्दौला अवध के सूबेदार को कुछ फ़ौज के साथ चढ़ालाया । और पटने में अंगरेज़ों से लड़कर और शिकस्त खाकर फिर भागा ॥ अंगरेज़ों ने फिर पीछा किया । बक्सर में शुजा-उद्दौला से एक अच्छी लड़ाई हुई उसके साथ पचास साठ हज़ार सिपाह की भीड़ भाड़ थी और अंगरेज़ों के साथ कुल ८५७ गोरे और ६२१५ हिन्दुस्तानी सवार और पियादे लेकिन शुजाउद्दौला को शिकस्त खाकर भागनापड़ा ॥ उसके दो हज़ार आदमी इस लड़ाई में काम आये बादशाह ने अंगरेज़ों को इस फ़तह की मुबारकबाद दी और लिखा कि ख़ूब हुआ जो मैं अपने वज़ीर की क़ैद से छूटा और फिर वह उस तारीख़ से अंगरेज़ों की हिमायत में चला आया । अंगरेज़ी फ़ौज इलाहाबाद की तरफ़ बढ़ी । रास्ते में चनारगढ़ का क़िला घेरा ज़ियादा बनारस में रहगयी ॥

*Sombre

१७६५ ई० सन् १७६५ के शुरू में मीरजाफ़र इस दुन्यासे कूच कर गया। और उसके भाई नज्मुद्दौला को अंगरेज़ों ने मसनद पर बिठाया॥ इससे यह क़रार हो गया कि नाइब सूबेदार अंगरेज़ों की सलाह से मुक़र्रर हुआ करे और बे उनकी मंज़ूरी के मोकूफ़ न किया जावे॥

लार्डक्लाइव

तीसरी मई को लार्ड क्लाइव गवर्नर और कमांडर इनचीफ़ होकर फिर कलकत्तेमें पहुंचा। और इंतिज़ामकीदुरुस्तीकेलिये रायदुल्लभ और जगतसेठ ख़ुशहालचंदको मुहम्मदरज़ाख़ां नाइब सूबेदारके शामिल किया॥ जिसरोज़ लार्डक्लाइव कलकत्ते में पहुंचा। उसीरोज़ शुजाउद्दौला कोड़े में अंगरेज़ोंसे शिकस्त खाकर और सिवाय अंगरेज़ों पर भरोसारखनेके और कुछइलाज न देखकर जेनरल कार्नाकके पास चलाआया॥अंगरेज़ोंनेउसकी बहुत ख़ातिरदारी की। और पचासलाख रुपया लड़ाईका ख़र्च लेकर और इलाहाबाद और कोड़ाबादशाहको दिलवाकर सुलह करली॥ बनारस का राजा बलवंतसिंह बक्सर की लड़ाई में अंगरेज़ों से मिल गया था। बल्कि कहते हैं कि नव्वाबवज़ीर का जो मोरचा इसके सुपुर्द था इसने उस में अंगरेज़ी लश्कर चला आने दिया और यही नव्वाब वज़ीरकी शिकस्तका बड़ा सबबहुआ॥ इसी लिये इन्होंने सुलहनामे में यहभी लिखवा लिया कि शुजाउद्दौला बलवंतसिंह को किसीतरहपर न छेड़े। और कुछ नुक़सान न पहुंचावे॥

बादशाह से इस वादेपर कि छब्बीस लाख रुपया सालाना जिसका क़ौल क़रार मीरजाफ़र से हुआ था अब बराबर पहुंचा चला जायगा लार्ड क्लाइव ने कम्पनी के लिये बंगाला बिहार और उड़ेसा तीनों सूबों की दीवानी का फ़र्मान लिखवालिया। नाज़िम नाम को नज्मुद्दौला बनारहा॥ लेकिनउस से यह अह्द पैमान होगया कि सिवाय पचास लाख रुपया सालाना लेने के और कुछ सरोकार मुल्क से न रक्खे मुल्क काकामसब अंगरेज़ों के हाथमें रहे लार्ड क्लाइव लिखता

है कि नजमुद्दौला इस बातसे निहायत खुशहुआ और रुख़सत के वक़्त कहने लगा "अलहम्दु लिल्लाह अब तो जितने चाहेंगे महल बनावेंगे" ॥ सन् १७६६ में नजमुद्दौला मरगया और उस का भाई सैफ़ुद्दौला उस की जगह बैठा। सन् १७६७ में लार्ड क्लाइव इंगलिस्तान को चला गया ॥ १७६६ ई० १७६७ ई०

सन् १७६३ में जब इंगलिस्तान और फ़रासीस के दर्मियान सुलह हुई यहभी शर्त ठहर गयी कि सन् १७४९ में यहां जो सब फ़रासीसियों की कोठियां थीं उनके हवाले करदी जावें। लेकिन बंगाले की सूबेदारी के इलाक़े में न वह कुछ फ़ौज रक्खें और न कोई क़िला बनावें ॥ हिंदुस्तान में इसगयी बला को फिर जगह देना कुछ इंगलिस्तान वालों की दानाई का काम न था। सन १७६५ में दखन के सूबेदार निज़ामअली ने जो सन् १७६१ में अपने भाई सलाबतजंग को क़ैद करके मसनद पर बैठा था कर्नाटक के मुलक पर चढ़ाई की लेकिन मुहम्मद अली की मदद पर अंगरेज़ी फ़ौज को मैदान में देख करपीछे हटा ॥ लार्ड क्लाइव ने मुहम्मदअली को बादशाह से कर्नाटक की जुदा सनद दिलवा दी और गंतूर छोड़कर शिमाली सर्कार* की वैसी ही एक सनद कम्पनी के नाम लेली। परमंदराज की गवर्नमेंट ने ख़ौफ़ में आकर निज़ामअली को सालाना ख़राज देनेका क़रार कर लिया और यहभी लिख दिया कि अंगरेज़ी फ़ौज निज़ामअली की मदद करेगी ॥ इस ज़माने में मैसूर के राज पर हैदरअली का इख़्तियार होगया था। इस का बाप सिरेके नव्वाब की चाकरी में पियादे से फ़ौजदार बनगयाथा॥ और यह खुद मैसूर के दीवान ननजीराज की फ़ौज में रहते रहते और बहादुरी और जिगरे के काम करते करते ऐसाबढ़ा। कि वहां के राजा के लिये तो खाने को पिंशन मुक़र्रर करदिया और आप सारे मुल्क का मालिक हो गया ॥ बिदनौर में गड़ा ख़ज़ाना यानी दफ़ीना भी पाया। चारों तरफ़अपनी अमलदारी

---

*गंजाम बिजिगापट्टन राजमहेन्द्री मछलीबंदर और गंतूर यह पांचों ज़िले शिमाली सर्कार कहलाते हैं ॥

बढ़ाने लगा ॥ सन् १७६७ में निज़ामअली ने मैसूर परचढ़ाईकी। अंगरेज़ी फ़ौज भी इक़रार के मुवाफ़िक़ उसके साथहुई॥ तीसरी सितम्बर को हैदरअली ने अँगरेज़ी फ़ौज से लड़ कर शिकस्त खायी हैदरअली निज़ामअलीसे मिल गया । दोनों ने अंगरेज़ों का मुक़ाबला किया ॥ उन की भीड़ भाड़ सत्तर हज़ार आदमियों की थी और इनकी तरफ़ कुल बारह हज़ार लेकिनदुश्मनों ने शिकस्त खायी और उनकी ६४ तोप अंगरेज़ों के हाथ आयीं निदान निज़ामअली ने तो कुछ दे दिलाकर अंगरेज़ों से सुलह कर ली और हैदरअली लड़ता रहा । कभी उसका कुछ नुक़सान हो जाता कभी अंगरेज़ों का कभी इनका कोई क़िला उसके हाथ चला जाता और कभीउसका इनके हाथआ जाता॥
१७६८ ई० यहां तक कि सन् १७६८ में हैदर अलीनेभी अंगरेज़ों सेमेलकर लिया। इन्होंने उसकी जगहें उसे लौटा दीं उस ने इन की इन्हें दे दीं दोनों ने आपस में बचावके लिये एक दूसरेकोमदद करने का क़रार किया ॥

१७७०ई० सन् १७७० में सैफुद्दौला के मरने पर उस का भाई मुबारकुद्दौला बंगाले का सूबेदार हुआ । नाबालिग़ था कम्पनीनेकहा कि इस के लिये ख़ाली सोलह लाख रुपया साल देनाकाफ़ीहै इससे ज़ियादा देना कुछ ज़रूर नहीं चौंतीस लाख किफ़ायत
१७७३ ई० में आया ॥ सन् १७७३ में जब इंगलिस्तान की पार्लीमेंटवालों ने देखा कि कम्पनी लालच में आ कर और अपने नौकरों को कम तनख़ाहें देकर मुल्क का इंतिज़ामबिगाड़ती है औरक़र्ज़ भी बढ़ाती जाती है एक क़ानून ऐसा जारीकिया कि जिस से अढ़ाई लाख रुपये सालपर एक गवर्नर जेनरल मुकर्ररहो और उसकी कौंसल में चार मिम्बर अस्सी अस्सी हज़ार रुपयेसालाने के रहें । कम्पनी को गवर्नर जेनरलके मुक़र्ररकरनेका इख़्तियार मिले लेकिन मंज़ूरी उसकी बादशाह के हाथ रहे पांचवेंसाल गवर्नर जेनरल बदला जाय और कलकत्ते में एक सुप्रिम कोर्ट क़ाइम की जाय उसके तीनों जजबादशाह के हज़ूरसे मुक़र्रर हुआ करें ॥

वारन् हेस्टिंगज़् पहला गवर्नर जेनरल

पहला गवर्नर जेनरल जो यहां मुक़र्रर हुआ वारन हेस्टिंगज़ था। यह सन् १७५० में नौकर होकर आयाथा और इस वक़्त बंगाले की गवर्नरी के उहदे पर था॥

वारन् हेस्टिंगज़् ने जब देखा कि क्लाइव की तजवीज़ बमूजिब नव्वाब और कम्पनी की शराकत में हुकूमत रहनेसे कभी इंतिज़ाम दुरुस्त न होगा ज़िले ज़िलेमें अंगरेज़ी हाकिम भेज कर कलकत्ते में सदर बोर्ड आफ़ रेवन्यू और सदरनिज़ामत और सदर दीवानी की अदालतें मुक़र्रर कर दीं इस में शक नहीं कि हिंदुस्तानी फिर भी अंगरेज़ी उहदेदारोंके शरीक रहे। लेकिन नौकर सब कम्पनी के होगये॥ कलक्टरी और दीवानी के हाकिम का शरीक एक दीवान रहता था फ़ौजदारी के हाकिम के साथ ज़िलेका क़ाज़ी मुफ़्ती और मौलवी बैठता था। बोर्ड आफ़ रेवन्यू में एक हिंदुस्तानी रायरायांके ख़िताब से था॥

अब ज़रा हाल शाहआलम बादशाह का सुनो इसके दिल में फ़िर दिल्ली के दर्मियान तख़्त पर बैठने की हविस समायी। अंगरेज़ों ने कुछ मदद न की॥ इसने तुक्काजी हुलकर और महाजी संधिया के पास पयाम भेजा उन मरहठोंने सन् १७७१ में इसे दिल्ली लेजा कर तख़्त पर बैठा दिया। और इलाहाबाद और कोड़े का इलाक़ा उस से ज़बर्दस्ती अपनेनाम लिखवा लिया॥ अंगरेज़ों ने इस बहाने कि अबतो आपहमारे दुश्मनों से यानी मरहठों से मिलगये इलाहाबाद और कोड़ा दोनों ज़ब्त कर के पचास लाख पर शुजाउद्दौला के हाथबेच डाला। और लार्ड क्लाइव ने जो तीनों सूबों की दीवानी के बाबत् छब्बीस लाख रुपया साल देने का क़रार लिख दिया था वह बिल्कुल गोया पानी से धो डाला॥

शुजाउद्दौला मुद्दत से फ़िक्र में था कि रुहेलखंड रुहेलों से छीन ले क़ाबू न पाताथा। अब लड़ाईका ख़र्च और चालीस १७७४ ई०

लाख रुपया नक़द देना क़बूल कर के अंगरेज़ों को उनपरचढ़ा ले गया ॥ बेचारे रुहेले शिकस्तखाकर तीन तेरह होगये सिर्फ़ फ़ैजुल्लाहख़ां उनके सर्दारों में से बचरहा। शुजाउद्दौला ने उसे भी तंग किया और निचोड़ा लेकिन फिर रुहेलखंड में उसे पंदरह लाख का इलाक़ा (रामपुर) जागीर के तौरपर देदिया ॥

१७७५ ई० सन् १७७५ के शुरूमें शुजाउद्दौलादूसरी दुनया कोसिधारा और उस को मस्नद पर उस का बेटा आसिफ़ुद्दौला बैठा ॥ कौंसल वालों की यह राय ठहरी कि शुजाउद्दौलासेजोअहद पैमान हुए थे वह उसी की ज़िंदगी भर के लिये थे। आसिफ़ुद्दौला के साथ तब बहाल रहेंगे जब वह बनारसकाइलाक़ा कम्पनी को नज़र करे और अंगरेज़ी फ़ौज का ख़र्च बढ़ा कर दो लाख साठ हज़ार रुपया महीना कर दे ॥ मसल मशहूर है ज़बर्दस्त का ठेंगा सिरपर आसिफ़ुद्दौला को नाचार बनारस का इलाक़ा भी देना पड़ा। और फ़ौज का ख़र्च भी बढ़ाना पड़ा ॥

सन् १७६१ में बालाजीराव पेशवा के मरने पर और फिर सन् १७७२ में उस के बड़े लड़के माधवराव पेशवा के मरने पर उस का भाई रघुनाथराव जिसे राघोबा भी कहते हैं उस के छोटे लड़के नारायणराव पेशवा को मार कर आप पेशवा बन बैठाथा । पर जब सुना कि नारायणराव की रानी के लड़का हुआ और सेंधिया और हुलकर उस की पच्छ पर हैं डर कर गुजरात की तरफ़ भाग गया ॥ और बम्बई में अंगरेज़ों से मदद चाही। बम्बई वालों ने सालसिट का टापूऔर उस के पास बस्सीन का बंदर जो उस वक्त मरहठों के कब्ज़े में था कम्पनी के नाम लिखवा कर कुछ फ़ौज दे दी ॥ पर कलकत्ते की कौंसल वालों ने यह बात मंज़ूर न की। और

१७७६ ई० अपना अजंट पूना भेज कर पुरंदर के दर्मियान सन् १७७६ई० में नारायणराव के लड़के से जो रघुनाथराव के भागने पर पेशवा हो गया था ख़ाली सालसिट का टापू लेकर और बस्सीन का दावा छोड़ कर सुलह कर ली ॥

सन् १७७८ में पेशवा के मंत्रियों में यानी अहलकारों में १७७८ ई०
फूटपड़ी। नान्हा फ़डनवीस ने तो पेशवा की तरफ़ रह कर
सेंधिया से मदद ली और बाबू सखाराम ने रघुनाथराव की
तरफ़ हो कर अंगरेज़ों से मदद मांगी॥ जब अंगरेज़ी फ़ौज
से पूना कुल आठ कोस रह गया। कर्नेल इजर्टन और
कर्नेल कोबर्न उसके अफ़सरों ने तोपें तालाब में डाल कर
फ़ौज को पीछे हटने का हुक्म दिया॥ और जब दूसरे दिन
वरगांव में पेशवा की फ़ौज ने आ घेरा। सालसिट पेशवा को
और भड़ोच सेंधिया को दे कर कम्पनी की तरफ़ से
अहदनामा लिख दिया॥ कोर्ट आफ़ डाइरेक्टर्स ने दोनों
अफ़सरों को इस क़ुसूर में मोक़ूफ़ किया बम्बई के गवर्नर ने
उस अहद नामे को जो उन्होंने वरगांव में लिखा था बिल्कुल
नामंजूर किया और गवर्नर जेनरल ने भी यही मुनासिब
समझा॥ क्योंकि उन अफ़सरोंने अहदनामा लिखतेवक्त यह भी
साफ़ ज़ाहिर करदिया था किहमको अहदनामा लिखनेका पूरा
इख़्तियार हासिल नहीं है निदान इसी बात पर फिर लड़ाई
शुरू हुई। उस अंगरेज़ी फ़ौजने जो जेनरल गोडार्डके तहतमें
कलकत्ते से मदद के लिये बम्बई गई थी अहमदाबादमें दख़ल
कर लिया और सेंधिया और हुलकर ने उससे ऐसी शिकस्त
खायी कि अपना सारा डेराडंडा अंगरेज़ी बहादुरों के लियेछोड़ १७८० ई०
भागे कुछ न बन आयी॥

गोहद के राना * का कम्पनी के साथ अहदनामा हो गया
था। अब सेंधिया उसके इलाक़े की तरफ़ झुका॥ तो उसनेभी
अंगरेज़ों से मदद चाही कप्तान पोफ़म ने जो कुछ थोड़ी सी
सिपाह लिये जेनरल गोडार्ड की फ़ौज से शामिल होने को
जातीथा। गवर्नमेंट का हुक्म पा कर तुर्त मरहठों को गोहद
के इलाक़े से मार हटाया और फिर उनका लहार का क़िला
फ़तह करता हुआ ग्वालियर का क़िला जा घेरा॥ यह क़िला
मज़बूती में मशहूर है खड़े पहाड़ पर बना है॥ वहां वाले

* जो अब धौल पुर बाड़ी का राना कहलाता है॥

समझे हुए थे कि अगर दस आदमी भी क़िले में ख़ाली पत्थर लुढ़काने को हों हमला करके दुश्मन कभी उस तक न पहुंच सकेगा चाहेवहलाखों फ़ौजक्यों न लावे। और अबतो (सन् १७७६) सेंधिया के एक हज़ार सिपाही चुने हुए लड़ाई के सब सामान समेत उसके अंदर मौजूदथे पोफ़म हैरान था किस ढब उस पहाड़ पर चढ़े॥ इत्तिफ़ाक़से एकचोर उसे ऐसा मिलगयाकि जो क़िले में चोरी करनेके लिये एक छुपीहुई पगडंडी से उसपहाड़ पर चढ़ जाया करता था। पोफ़म ने यह रास्ता उससे मालूम कर लिया। दूसरेदिन सूरज निकलने से पहले आगे आप हुआ और पीछे फ़ौज सीढ़ियां लगाकर रस्से लटकाकर खूंटियां गाड़ कर घासकी जड़ें पकड़कर यह उस वक़्त नहीं मालूम होताथा कि आदमी हैं या बंदर सबके सब बात की बात में उसी राह पहाड़ों पर पहुंच दीवारों को डांक क़िले के अंदर दाख़िल हो गये। मरहठों ने जो यकायक आंख मलते हुए अपने बिस्तरों से उठ कर दुश्मनों को क़िलेके अंदर मौतकी तरह सिरपर पाया छक्के छूट गये उसीदम क़िला छोड़ भागे॥ उधर गोडार्ड ने बस्सीन लिया और बम्बई की फ़ौज ने कड्डन में पेशवा के सिपाहियों को भगाया इधर बंगाले की फ़ौज ने सिरौंज में सेंधिया के लशकर को एक और शिकस्त देदी लेकिन दखन में बखेड़ा बढ़ता देखकर और कौंसल वालों को अपने

१७८२ ई० ख़िलाफ़ पाकर गवर्नर जेनरल ने सेंधिया से तो इस शर्त पर सुलह करली कि सिवाय उस इलाक़े के जो गोहद के राना को दिया गया था बाक़ी जो कुछ जमना पार अंगरेज़ोंके हाथ लगा था सेंधिया कोलौटा दिया जाय और पेशवा से इस शर्त पर सुलह करली कि बस्सीन समेत जो कुछ अंगरेज़ों ने पुरंदर में सुलहनामा लिखेजाने के बाद फ़तह किया सब पेशवा को लौटा दिया जाय॥ और पेशवा कर्नाटकमें उनसब इलाक़ों को जो हैदरअली ने दबा लियेथे उससे अंगरेज़ों को दिलवा देवे। और सिवाय पुर्टगीज़ों के यानी पुर्तगालवालोंके और किसी फ़रंगी को अपने मुल्क में कुछ कार बार न करने

दे ॥ क्योंकि अंगरेज़ों को खटका फ़रासीसियों का था भड़ौंच संधिया के क़ब्ज़े में रहने दे। और अगर रघुनाथरावसंधिया की अमल्दारी में रहे तीन लाख रुपया साल उसे पेशवा के यहां से गुज़ारे को मिला करे ॥

सन् १७७८ में फ़रासीस और इंगलिस्तानके दर्मियान लड़ाई शुरू हो जाने के सबब अंगरेज़ों ने यहां से फ़रासीसियों को बिल्कुल बेदख़ल कर दिया। बंगाले की फ़ौजने चंदरनगरपर क़ब्ज़ा किया ॥ मंदराज की फ़ौज ने पटुच्चेरी लेकर उस का क़िलाढाह डाला। और कारीकाल और मछलीबंदर और माही भी छीन लिया ॥

हैदरअली से अंगरेज़ों का जो सुलहनामा हुआ था उस में शर्त थी कि बचाव के लिये दोनों एक दूसरे को मदद करें लेकिन जब मरहठों ने (१७७१)हैदरअली पर चढ़ाई की। तो अंगरेज़ों ने उसे कुछ भी मदद न दी ॥ इस बातकी उस के जी में बड़ी लाग थी। सन् १७८० में एकलाख फ़ौज लेकरचढ़ आया और अंगरेज़ी अमल्दारी में हर तरफ़ लूटमारमचादी ॥ जो सब फ़रासीसी वग़ैरः फ़रंगी और जगहों से निकालेगयेथे। अक्सर इस ने अपनी फ़ौज में भरती करलिये थे ॥ उन्हीं का बड़ा भरोसाथा। और तोपख़ाना भी उसका सौ तोपोंका अच्छा सिजिल था ॥ अंगरेज़ी फ़ौज जो मंदराज के पास इकट्ठा हुई कुल पांच हज़ार थी पहलीही लड़ाई में फ़ाश शिकस्त खायी ॥ जो बचे मंदराज चले आये बड़ी घबराहट पड़ी। लेकिनकलकत्ते से रुपये और सिपाह की मदद बहुत जल्द पहुंची ॥ तब तक हिंदूसिपाही जहाज़पर नहीं चढ़तेथे। इसीलिये सारीराह ख़ुश्की गये ॥ इनके पहुंचने पर सात हज़ार की जमाअत हो गयी। कुछ फ़ौज मदद के लियेबम्बई से भी आयी ॥ अंगरेज़ों को अपने क़िले और शहर बचानेकी फ़िक्र थी और दुश्मन को उनके लेनेकी ॥ ग़रज़ ख़ूब लड़ाइयां हुईं। दोनोंतरफ़ के बहादुरों ने अपनी अपनी बहादुरियां दिखलाईं ॥ कभीएक का कोई क़िला या शहर या गांव दूसरे के क़ब्ज़े में चला

जाता। कभी वह उसी को अपने क़ब्ज़े में ले आता या दूसरे का क़िला शहर और गांव जा दबाता॥ कभी एक की फ़ौज देखकर या उस की आमद सुन कर या रसद चुक जाने पर दूसरे की फ़ौज आपसे आप हट जाती। कभी थोड़ी होने पर भी जी खोल कर ऐसी लड़ती कि या तो फ़तह पाती या उसी जगह कट जाती॥ सन् १७८१ में पहली जुलाई को कड़ालूर की राह में आठ हज़ार अंगरेज़ी फ़ौज ने अस्सी हज़ार दुश्मन की फ़ौज को ऐसी शिकस्त दी कि उस के दस हज़ार आदमी खेत रहे। इन के घायल मिला कर भी तीन सो आदमी काम न आये॥ सत्ताईसवीं सितम्बर की लड़ाई में हैदरअली ने अपना तोपख़ाना बचाने को जान बूझ कर अपने पांच हज़ार सवार कटवा दिये। गोया किसी खेत की मूली थे॥

दिसम्बर में अस्सी बरस के ऊपर पहुंच कर हैदरअली इस दुनिया से उठ गया। और उस का बेटा टीपू उसकी जगह
१७८४ ई० मसनद पर बैठा॥ टीपू के मानी उस मुल्क की ज़बान में शेर है लड़ाई कुछ दिन और भी हुआ की। लेकिन ग्यारहवीं मई को सुलह हो गयी॥ जिस ने जिस का जो कुछ लिया था उसे वापस दे दिया। आगे के लिये अहदनामा लिख गया॥

इस अर्से में फ़रासीस और इंगलिस्तान के दर्मियान भी सुलह हो गयी थी। कहीं कुछ लड़ाई बाक़ी नहीं थी॥

सन् १७७५ से यानी जब से आसिफ़ुद्दौला ने बनारस का इलाक़ा कम्पनी को दे दिया। राजा चेत सिंह बनारस का राजा सर्कार कम्पनी अंगरेज़ बहादुर के ताबे हुआ॥ यह राजा बलवंतसिंह का बेटा था। पर ब्याही हुई रानी से न था॥ अंगरेज़ों ने बाईस लाख रुपया साल ख़राज मुक़र्रर करके उस इलाक़े की बहाली का अहदनामा राजा चेतसिंह के नाम लिख दिया। सन् १७७८ तक राजा चेतसिंह ने बराबर वह रुपया अदा किया॥ वारन हेस्टिंगज़ के दिल में राजा चेतसिंह की तरफ़ से रंज आ गया था। और उस का सबब यह था कि जिन दिनों में वारन हेस्टिंगज़ को कौंसल के कई मिम्बरों ने यहां से निकालना

चाहा था और आप कुल मुख़्तार हो गये थे राजा चेतसिंह का वकील उन मिम्बरों के पास जाया करता था॥ निदान हेस्टिंग्ज़ ने लड़ाइयां पेश होने के सबब फ़ौजख़र्च के लिये राजा से पांच लाख रुपया साल तलब किया। राजाने बहुतेरा कहा कि बाईस लाख का अहदनामा हो गया है लेकिन कमज़ोर की कौन सुनता है राजाको उस साल पांच लाख देना ही पड़ा॥ दूसरे साल इसकी तलबी के लिये सर्कारी सिपाह आयी राजा को पांच लाख रुपये के सिवाय सिपाह का ख़र्च भी देना पड़ा। तीसरे साल राजा ने इस की मुआफ़ी के लिये दो लाख रुपया हेस्टिंग्ज़ को कलकत्ते में अपने वकील के हाथ तुहफ़ा के तौर पर भेजा॥ हेस्टिंग्ज़ ने वह भी रक्खा पांच लाख भी लिया। और लाख रुपया जुर्माने के नाम से वसूल किया॥ सन् १७८१ में पांच लाख के सिवाय पहले तो दो हज़ार लेकिन फिर एक ही हज़ार सवार तलब किये। राजा ने आधे सवार आधे बंदूक़ची पियादे तय्यार किये॥ पर जब हेस्टिंग्ज़ इस पर भी राज़ी न हुआ। राजाने बीस लाख नज़राना दाख़िल करने का पैग़ाम भेजा॥ हेस्टिंग्ज़ ने पचास लाख तलब किया और बनारस की तरफ़ तरी की राह से रवाना हुआ। राजाने बक्सर में पहुंचकर पैरों पर पगड़ी रखदी लेकिन हेस्टिंग्ज़ का दिल इस पर भी न पसीजा॥ बनारस पहुंचकर शिवाले परयानी जहां राजा ठहरा था दो कम्पनी तिलंगों का पहरा भेजदिया। राजाने इसपर भी कुछ सिर न उठाया॥ लेकिन राजाके नौकर अपने मालिक का क़ैद होनासुनकर शिवाले के गिर्द घिरआये इस हुजूम की ख़बर पाकर हेस्टिंग्ज़ ने दो कम्पनी तिलंगों की और भेज दीं। राजा के आदमियों ने इन को अंदर जानेसे रोका कप्तान ने तोप सर की, बलवा हो गया तलवारें चलने लगीं॥ एक सर्कारी चोबदार चेतराम ने राजासे बड़ी बेअदबी की कहने लगा कि यहां एक२ सिपाही गवर्नर जेनरल है अगर तुम्हारा कोई आदमी ज़रा भी चूंकरेगा तुम्हारे और तुम्हारी रानियों के पैरों में रस्सियां बांध कर सरेबाज़ार खींचता हुआ

लार्ड साहिब के साम्हने लेजाऊंगा राजा ने पैर फैला दिया कि भाई ला रस्सी और बांध देर क्यों करता है। राजाके चचेरे भाई बाबू मनियारसिंह के मुंह से यह निकल गया कि किस्का मक्दूर है जो राजाके पैर में रस्सी बांधे चेतराम बोलाकि चेतसिंह और चेतराम की गुफ्तगूमें दूसरा कौनमसख़रा दख़ल देताहै॥ मनियारसिंह होंठ काट कर चुप होरहा जब बाहर बलवा हुआ। चेतराम अपनी मौत से अचेत उछल कर राजा से जा लिपटा और तिलंगों को पुकारा॥ जब तिलंगे तलवार ले कर राजा की तरफ़ दौड़े। राजा के साथियों ने झटपहरेमें से अपने हथियार उठालिये॥ बाबूमनियारसिंह के बेटे नन्कूसिंह ने एक ही तलवार में चेतराम का काम तमाम किया भीतर भी लड़ाई शुरूहोगयी तिलंगों के पास कारतूस नथा सब केसबमारेगये अगर राजा मनियारसिंह की सलाह मानता और अपनी सिपाह समेत उस बक्त माधोदास के बाग़ में जहां हेस्टिंग्ज़् का डेरा था और बे फ़ौज वह अकेला रह गया था जा कर उसे अपने क़ाबू में कर लेता और फिर मिन्नत समाजत से पेश आता। अपनी दिली मुराद को पाता॥ लेकिन राजाने सदानंद बख़्शीकी सलाह पसंदकी और खिड़की की राह पगड़ियों के वसीले से उतर किश्ती पर सवार हो गंगा पार रामनगर चला गया। और फिर वहां से कुछ दिन अपने क़िलों में ठहर कर जब सर्कार की हर तरफ़ फ़तह और अपने सिपाहियों की शिकस्त सुनी ग्वालियर को भाग गया॥ हेस्टिंग्ज़् ने बलवंतसिंह के नवासे राजा महीपनरायनसिंह को बनारस के राजपर बिठाया। गोया हक़ हक़दार कोपहुंचाया॥ लेकिन बेचारे चेतसिंह के निकालने से जैसा बिचारा था। वैसाकुछ ख़ज़ाना हाथ न लगा॥ कहतेहैं कि राजा चेतसिंहका दीवान बाबू औसानसिंह अपने मालिक से बिगड़ कर हेस्टिंग्ज़् से जा मिला था। और उसी ने उसके कान भरे थे कि राजा के पास करोड़ों रुपये का ख़ज़ाना है ज़रा सी धमकी में देदेगा॥

सन् १७८५ में हेस्टिंग्ज़ इस्तीफ़ा देकर इंगलिस्तान को चला गया। और मेकफ़र्सन* जो कौंसल का बड़ा मिम्बर था गवर्नर जेनरल के उहदे का काम अंजाम देने लगा॥ १७८५ ई०

उधर इंगलिस्तान में सन् १७८४ के दर्मियान पार्लीमेंट के हुक्म से एक महकमा बोर्ड आफ़ कंट्रोल का मुक़र्रर हो गया था उस में बादशाही कौंसल के छ वज़ीर बैठते थे। और वह कोर्ट आफ़ डैरेक्टर्स से बालादस्त थे॥ तिजारत के सिवाय हिंदुस्तान के सारे कामों पर उन को पूरा इख़्तियार था। और कोर्ट आफ़ डैरेक्टर्स को सब काम उन की मर्ज़ी के बमूजिब करना पड़ता था॥ गवर्नर और गवर्नर जेनरल भी उन्हीं की मंज़ूरी से मुक़र्रर होता था। निदान बोर्ड आफ़ कंट्रोल के मुक़र्रर होने से यहां के कामोंमें बड़ाफ़र्क़ आ गया॥ अब तक यहां वालों को निरी कम्पनी यानी सौदागरों कीएक जमाअ़त से काम था। और अब इंगलिस्तान के बादशाही वज़ीरों से काम पड़ा॥ दुश्मनों का ज़ोर घटा। और रअ़य्यत का भरोसा बढ़ा॥

लार्ड कार्नवालिस

सन् १७८६ में लार्ड कार्नवालिस गवर्नर जेनरल मुक़र्रर हुआ। और यहां आया॥ १७८६ ई०

त्रिवाङ्कोड़ के राजा से अंगरेज़ों का अ़हदनामा होगया था इसीलिये जब सन् १७८९ में टीपू ने नाहक़ तक़रार बढ़ा कर त्रिवाङ्कोड़ पर चढ़ाई की। अंगरेज़ों को राजा के बचावकेलिये टीपू पर चढ़ाई करनी पड़ी॥ लार्ड कार्नवालिस हैदराबाद के नव्वाब निज़ामुल्मुल्क और पेशवा से आपस की मददकाकौल क़रार ले कर ख़ुद मंदराज गया और टीपू के मुल्क मैसूर पर चढ़ाई कर दी। बम्बई से भी कुछ अंगरेज़ी फ़ौज आयी थी १७८९ ई०

*यह साहिब हिंदुस्तान में रोज़गार की तलाश को अर्काट के नव्वाब के मुख़्तार बन के आये थे॥

ज़िले ज़िले घाटे घाटे और क़िले क़िले लड़ाई होने लगी॥ जब टीपू के कई मज़बूती में मशहूर पहाड़ी क़िले सर्कार के क़बज़े में आ गये। और सर्कारी फ़ौज लड़ती भिड़ती फ़तह के
१७९२ ई० निशान उड़ाती सन् १७९२ में टीपू की राजधानी श्रीरंग पट्टन के अंदर जा पहुंची और क़रीब था कि क़िले पर जिस में टीपू घुसा हुआ था हमला करे॥ टीपू ने अपने दोनों लड़कों को ओल में लार्ड कार्नवालिस के पास भेज दिया। और तीन करोड़ तीस लाख रुपया लड़ाई का ख़र्च और आधा मुल्क अंगरेज़ और नव्वाब और मरहठों को दे कर आपस में सब के साथ सुलह रखने का अहदनामा लिख दिया॥ उस आधे मुल्क से जो टीपू ने दिया। अंगरेज़ों के हिस्से में मलीबार कुड़ग दिंदीगल और बारह महाल आया॥

१७९३ ई० सन् १७९३ में अंगरेज़ों को फ़रासीसियों से फिर लड़ाई छिड़ जाने के सबब पटुच्चेरी वग़ैरः उन के इलाक़ों में सर्कार ने अपना क़बज़ा कर लिया। लार्ड कार्नवालिस इंगलिस्तान को सिधारा बंगाले और बनारस में ज़मीदारों के साथ इस्तिमरारी बंदोबस्त इसी ने किया॥ जब तक रहेगा उसका नाम इस देस में नेकी के साथ बना रक्खेगा। लार्ड कार्नवालिस की जगह पर सरजान शोर जो कौंसल का अव्वल मिम्बर था गवर्नर जेनरल हुआ॥

१७९५ ई० सन् १७९५ में कर्नाटक का नव्वाब मुहम्मदअली मरगया। उस का बड़ा बेटा उमदतुलउमरा उस की जगह पर बैठा॥

१७९७ ई० सन् १७९७ में नव्वाब वज़ीर आसिफ़ुद्दौला मरगया। वज़ीरअली उसकी जगह पर बैठा॥ लेकिन पीछे से सर्कार को मालूम हुआ कि वह उस का असली लड़का नहीं है तब वज़ीरअली को मसनद से उठाकर आसिफ़ुद्दौला के भाई सआदतअलीख़ां को मसनद पर बिठाया। सआदतअलीख़ां ने अंगरेज़ों को अवध में दस हज़ार फ़ौज रखने के लिये छिहत्तर लाख रुपया साल ख़र्च देने का अहदनामा लिख दिया और इलाहाबाद का क़िला भी उन के हवाले किया॥

अर्ल आफ़ मानिंगटन यानी मार्किस आफ़ विलिज़्ली

सन् १७९८ में सरजान शोरने इंगलिस्तान जाकर लार्डटेन १७९८ ई० मौथका ख़िताब पाया। और यहां उसकी जगहपर अर्लआफ़-मौर्निंगटन जो फिर पीछे से ख़िताब पाकर मार्किस आफ़ विलिज़्ली कहलाया गवर्नर जेनरल होकर आया॥

अगर्चि टीपू ने मुश्किल के वक़्त अंगरेज़ों से सुलह करली थी। पर लागकी आगसे उसकी छाती बराबर जलती रही॥ मानिंगटन को साबित होगया कि वह फ़रासीसियों से ख़त किताबत रखता है। और उनकेमुल्कसे मदद मंगानेकीफ़िक्र करता है॥ यह बड़ा ज़बर्दस्त गवर्नर जेनरल था। झट पट मंदराज में फ़ौज जमा होनेका हुक्म दे दिया॥ और टीपूको लिख भेजा कि या तो मलीबार की तरफ़ समुद्र कनारेके सब इलाक़े दे कर और फ़ौज जमाहोने में जो ख़र्च पड़े उसे चुका-कर आगे को अहद नामा लिखदो कि फ़रासीसियों से कभी किसी तरहका कुछ सरोकार न रक्खोगे जो फ़रासीसी तुम्हारी अमल्दारी में हों तुर्त निकाल बाहरकरो और सर्कारी रज़ीडंट को अपने यहां रहनेकी जगह दो। नहीं तो सर्कार को अपनादुश्मन समझो॥ जब टीपूने इसका कुछ जवाब न दिया मंदराज़ और बम्बई दोनों तरफ़सेअंगरेज़ी फ़ौज ने उस के मुल्क पर चढ़ाई की। हैदराबाद के नव्वाब की फ़ौज भी अंगरेज़ों के साथ थी॥ पेशवा संधिया की बहकावट से अलग रहा। स्रीरंगपट्टनसे बीसकोस इधरअंगरेज़ोंकी टीपूसेलड़ाईहुई टीपू शिकस्त खाकर पीछेहटा॥ और यहसोच कर कि अंगरेज़ी फ़ौज उसी राह से आवेगी जिस से पहले आयीथी बिल्कुल घास और चारा जो उसमेंथा नास करवादिया। लेकिन जब सुना कि अंगरेज़ों ने दूसरी राहली उसका जी बिल्कुल टूट गया॥ और अपने सिपाहियों से साफ़ कहा कि अब मेरे दिन आन पहुंचे उन्होंने यही जवाब दिया कि आप के साथ हम भी कट मरेंगे॥ निदान अंगरेज़ोंनेजाकर स्रीरंगपट्टन घेर लिया नव्वाब और पेशवा की फ़ौज तो तमाशा देखती थी लेकिन

गवर्नर जेनरल सिपाहियों का काम करता था॥ चौथी मई को
१७९९ ई० क़िलेपर हमलाहुआ। और अंगरेज़ी निशान फहराया॥ टीपूकी
लाश हाथ लगी लड़के उसके हाज़िर होगये ९२९ तोप एक
लाख बंदूक़ साज़ सामान समेत और एक करोड़ एक लाखके
क़रीब नक़द और जवाहिर अंगरेज़ोंके हाथ लगा। क़ाइदे के
बमूजिब टीपूका सारामुल्क सर्कार और नव्वाब के दर्मियान
बटजाना चाहिये था। लेकिन गवर्नर जेनरल ने मुनासिब न
समझा कि नव्वाब की अमल्दारी ज़ियादा बढ़ाई जाय इसी
लिये कुछ तो आपस में बांट लिया। और बाक़ी मैसूर के
पुराने राजा के वारिसों में से जिसे हैदरअली ने वहां से
बेदख़ल कर दिया था चुनकर उसके हवाले किया। और शर्त
यह कर ली कि हिफाज़त के लिये फ़ौज उसमें सर्कारी रहेगी
ख़र्च सात लाख साल ज़िम्मे राजा के। और जब ज़रूरतपड़े
तो इन्तिज़ाम भी मुल्कका सर्कार अपने तौर पर करे॥

तंजोर का राजा तुलजाजी लावल्द होने के सबब एक
दस बरस के लड़के सर्वोजी को गोद लेकर मर गया था उसके
१८०० ई० भाई अमरसिंह ने गद्दीका दावा किया। सर्कार ने बहुततह-
क़ीक़ात के बाद गद्दी सर्वोजीकोदी लेकिनमुल्ककी आमदनी
से उसके लिये एक अच्छा सा पिंशन मुक़र्रर करके दीवानी
फ़ौजदारीका इख़तियार आपले लिया॥

सूरत के नव्वाब मरनेके पर यही हाल वहांका भी हुआ
और कर्नाटक के नव्वाब उमदतुलउमरा के मरने पर जब
उसके बेटे अलीहुसेन ने इन शर्तोंसे इंकार किया। तोउसके
१८०१ ई० चचेरे भाई अज़ीमुद्दौला को इन्हीं शर्तोंपर नव्वाब बनादिया॥

वज़ीरअली अवधसे निकाल कर बनारस में रक्खागयाथा।-
जब मालूम हुआ कि काबुल के बादशाह ज़मांशाह से ख़त
किताबत रखता है और फ़साद उठाया चाहता है तो उसे
कलकत्ते जानेका हुक्ममिला॥ वह इसबात से जलकरएकदिन
सुबह को चेरी साहिब अजंट के यहां जब चायपीनेको गया।
बातों ही बातों में उन्हें काट डाला॥ कप्तान कानवे साहिब

और ग्रेहम साहिब कोभी क़त्ल किया। फिर वहां से झपट कर डेविस साहिब जज की कोठी * पर पहुंचा॥ यह कोठी दुमंज़िली है साहिब एकबर्छा लेकर इस जवांमर्दीसे सीढ़ी पर आ खड़े हुए कि कोई क़दम न बढ़ासका। इसी अर्से में फ़ौज आ गयी डेविस साहिब बचगये वज़ीरअली भागा जयपुर चला गया॥ वहां के राजा ने उसे पकड़ कर अंगरेज़ों के हवाले कर दिया। लेकिन इतना क़रार करलिया॥ कि न वह मारा जावे न उस के पैर में बेड़ी डाली जावे। अंगरेज़ों ने उसे कलकत्ते ले जा कर क़िले में ऐसी एक कोठरी के अंदर क़ैद किया कि उस को पिंजरा ही कहना चाहिये †॥

सआादतअलीख़ां फ़ौजख़र्च न अदा कर सका इसी लिये सर्कार ने फ़ौजख़र्च के बदले दुआबे का मुल्क और रुहेलखण्ड उस से ले लिया। नया अहदनामा लिख गया कि नव्वाब रज़ीडंट की सलाह मुताबिक़ अपने मुल्क का इंतिज़ाम दुरुस्त करे और इस इंतिज़ामसे फ़र्रुख़ाबाद का नव्वाब भी सर्कारी पिंशनदार बन गया॥

टीपूपर फ़तह पानेके इनआममें गवर्नर जेनरलको मार्क्विस काख़िताबमिला इसी अर्सेमें फ़रासीसियों के हमलेसे मिसर को १८०२ ई० बचाने के लिये गोरोंके साथ कुछ हिंदुस्तानी फ़ौज भी यहांसे जहाज़ों पर भेजी गयी। और बड़ा नाम पैदा कर आयी॥

पेशवा अब तक गवर्नर जेनरल के कहने से बाहर रहा था लेकिन जब जसवंतराव हुल्कर ने बड़ी धूम धाम से उस पर चढ़ाई की तो उस ने घबरा कर गवर्नर जेनरल के कहने बमूजिब इस बात का अहदनामा लिख दिया कि किसी क़दर (६०००) सर्कारी फ़ौज उस के मुल्क में रहा करे। और उसका

*यह वही कोठी है जो अब महाराजाधिराज काशी नरेश बहादुर की है और नंदेसर की कहलाती है॥

†सन् १८५२ ई० में हमने देखी थी लेकिन अब कुछ तोड़ फोड़ होकर नयी इमारत बन जाने के सबब पता जाता रहा हम जो क़िले में गये कोई बतला न सका॥

ख़र्च उसी के मुल्क से लिया जावे ॥ इधर तो यह अहदनामा लिखा गया। उधर पूना के बाहर हुल्कर से शिकस्त खाकर पेशवा को समुद्र की तरफ़ भागना पड़ा ॥ अंगरेज़ोंने उसे अपने जहाज़ में पनाह दी और फिर बहुत सी फ़ौज इकट्ठा करके
१८०३ ई० पूना में पहुंचाया। हुल्कर ने सर्कारी सिपाह का मुक़ाबला न किया अपने मुल्क को चला आया ॥ गवर्नर जेनरल ने बहुतेरा चाहा कि पेशवा की तरह सेंधिया और बराड़ यानी नागपुर के राजा से भी अहदनामे हो जावें लेकिन जब देखा कि यह लोग सीधी तरह से न मानेंगे तो अपने भाई जेनरल विलिज़ली को जो फिर पीछेसे ऐसानामी इंगलिस्तान का कमांडर इनचीफ़ ड्यूक आफ़ वलिंगटन हुआ दखन से और लार्ड लेक कमांडर इनचीफ़ को उत्तर से इन दोनों के मुल्क पर चढ़ाई करने का हुक्म दिया दखन में अहमदनगर सर्कारी फ़ौज के हाथ आजाने से गोदावरी पार सेंधिया का बिल्कुल अमल जाता रहा। और उसी महीने में भड़ोंच भी सर्कार के क़ब्ज़े में आ गया ॥ इधर लार्डलेक ने क़न्नौज से कूच करके अलीगढ़ में सेंधिया की फ़ौज को जो पीरन साहिब फ़रासीसी के तहत में थी शिकस्त देकर दिल्ली की तरफ़ क़दम बढ़ाया। पीरन सेंधिया की नौकरी छोड़ कर अंगरेज़ों की हिमायत में चला आया ॥ दिल्ली में भी सेंधिया की फ़ौज एक फ़रासीसी के तहत में लड़ी। और तीन हज़ार आदमी काम आने के बाद खेत छोड़ भागी ॥ यहां लार्डलेक ने नाम के बादशाह अंधे शाहआलमसे मुलाक़ात की वह एक फटे पुराने छोटेसे शामियाने के नीचे बैठा था। लार्ड लेक को बहुत लंबा चौड़ा ख़िताब इनायत किया और उस बेचारे के पास देने को बाक़ी क्या रहा था ॥ निदान कर्नल अक्टरलोनी साहिब को जिन्हें अक्सर यहां वाले लोनी अख़तर भी कहते हैं कुछ सिपाहियों के साथ दिल्ली में छोड़ कर लार्ड लेक ने आगरा मरहठों से लिया और फिर लसवारी *में पहुंच कर मरहठों की फ़ौज

*या, लसवाड़ी आगरे से ७३ मील वायुकोन है ॥

को ऐसी भारी शिकस्त दी। कि सात हज़ार मारे गये और दो हज़ार क़ैद में आये गोया सेंधिया की कमर तोड़ डाली॥ उधर दखन में सर्कारी फ़ौज ने अहमदनगर लेने के बाद असाई की लड़ाई में मरहठों को बड़ी भारी शिकस्त देकर बुर्हानपुर और असीरगढ़ का मशहूर क़िला ले लिया। और फिर अरगांव की लड़ाई जीतकर और गाविलगढ़ का मज़बूत क़िला क़ब्ज़े में लाकर नागपुर के राजा की बाई को पचा दिया॥ निदान नागपुर के राजा ने कटक का इलाक़ा दे कर सर्कार से सुलह कर ली और साथ ही सेंधिया ने भी अहमद-नगर और भड़ोंचसे दस्तबर्दार होकर अहदनामा लिखदिया कि फिर कभी किसीफ़रासीसीको नौकर न रक्खे। पेशवाकोबुंदेलखंड पर दावा था इस लिये सर्कार ने वह इलाक़े जो दखन और गुजरात में उस से पाये थे बुंदेलखंड के बदलउसे लौटादिये॥

अब ख़ाली एक जसवंत राव हुल्कर इंदौर का राजाबाकी १८०४ ई० रह गया। कि जिस ने सर्कार के साम्हने सिर नहींझुकाया॥ वह अक्सर सर्कारी इलाकों को लूटा किया। और कोईवकील भी अपनी तरफ़ से नहीं भेजा॥ इस लिये उसपर चढ़ाई हुई पहले कुछ थोड़े से सिपाही कर्नल मानसन साहिब के तहत में उस के मुक़ाबले को गये और टोंक का क़िला दर्वाज़ा उड़ा कर फ़तह कर लिया लेकिन मुकंदरे के घाटे में यह सर्कारी फ़ौज का टुकड़ा धोखे में आ कर बेतरह हुल्कर की फ़ौजसे घिर गया। और बड़ी बड़ी मुश्किलोंसे वहांसे निकलकरलड़ता भिड़ता गर्मी और बरसात के सबब सैकड़ों तकलीफ़ें उठाता और नुक़सान सहता तीनतेरह हो कर आगरेपहुंचा॥ हुल्कर ख़ूब फूला। अब उसकी शेख़ी का क्या ठिकाना था॥ समझा कि जो हूं। मैं ही हूं॥ बीस हज़ार सिपाह और एकसौतीस तोपों से दिल्ली का शहर जा घेरा वहां सर्कारी फ़ौज कुलआठ सौ थी और तोप ग्यारह पर दिल्ली के रज़ीडंट अक्टरलोनी ने इसी मुट्ठी भर फ़ौज से ख़ूब मरहठों के दांत खट्टे किये। नौ दिन सिर पटक कर आख़िर चल दिये॥

हुल्करकी बहादुरी भागने में थी नामही इन का मरहठा है। यानी मारना और हट जाना किसी ने हुल्कर से पूछा था कि आप का राज कहां है जिसके छीनने का हम उपाय करें उसने जवाब दिया कि उतनी ज़मीन जिस पर मेरे घोड़े का साया पड़ता है॥ अगर मक़दूर हो। आओ छीन लो॥ निदान लेक तो इस आर्ज में था कि किसी तरह उस से दो चार हो तो फिर तमाशा दिखला दे। और वह इस के नाम से हवा होता था यहां वाले अक्सर अपनी बेवक़ूफ़ी से इस भगोड़े लुटेरेको बीर समझ कर जीते जी मन्नत की दहेड़ियां चढ़ाने लगे थे॥ एक दिन लेक ने चौबीस घंटे में तीस कोस का धावा मार कर फ़र्रुख़ाबाद के पास इसेजा दबाया। और उस लड़ाई में कम से कम तीन हज़ार आदमी उस के मारे गये लेकिन वह हाथ न लगा डीग की तरफ़भाग गया॥ डीग भरतपुर की अमलदारी में है भरतपुरके जाट राजा सूरजमल के बेटे रंजीतसिंह ने हुल्कर को पनाह दी। इस क़सूर की उसे भी सज़ा दीजानी मुनासिब समझी गयी॥ डीग का क़िला लेक ने फ़तह कर लिया। और जो कुछ उस में था अपनी फ़ौज को बांट दिया॥

१८०५ ई० तीसरी जनवरी को लेक ने भरतपुर घेरा नवीं को हमला किया लेकिन जब ख़ंदक़ के कनारे पहुंचे। तो मालूम हुआ कि पानी छाती भर गहरा है आदमी बहुत काम आये॥ इक्कीसवीं को दूसरी तरफ़ से हमला किया लेकिन वहांख़ंदक़ चौड़ी इतनी थी कि पुल जो बना लाये थे छोटा पड़ा। और जब सीढ़ी जोड़ कर बढ़ाना चाहा पानी में गिर पड़ा॥ इस में भी बहुत आदमी काम आये बाईसवीं को तीसरी तरफ़ से हमला किया हिंदुस्तानी सिपाही ख़ंदक़ पार हो कर दीवार पर चढ़ गये। लेकिन गोरों ने उस वक़्त साथ देनेसे इन्कार किया इस लिये उन्हेंभी लौटआना पड़ा ८९४आदमी खेतरहे॥ दूसरे दिन लेकने उन गोरों को जिन्होंने उदूलहुक्मी की थी बहुत शर्मिंदाकिया उन्होंने ग़ैरतमें आकर बड़ेज़ोर शोरसेचौथा

हमला किया लेकिन इस अर्से में क़िलेवालों ने बुर्ज और दीवार की मरम्मत कर ली थी। राह न मिली॥ हज़ारसे ऊपर आदमी मारे गये। निदान इन चार हमलों में तीन हज़ार से ऊपर सर्कारी फ़ौज का नुक़सान हुआ लोग थके मांदे और बे दिल होगये॥ गोला बारूत भी बाक़ी न रहा। रसदका सामान खर्चमें आ गया॥ नाचार लेक को फ़ौज हटानी पड़ी। यह इस मुल्क में एक ही क़िला है कि जिस के साम्हने से किसी सबब से भी कभी सर्कारी फ़ौज हटी॥ हमने भरतपुरवालों की जुबानी सुनाहै कि लड़ाई के वक़्त यह राजा रंजीतसिंह दोहर ओढ़े और हाथमें लट्ठ लिये क़िले की दीवारोंपर घूमता था और गोलंदाज़ और सिपाहियों से यही कहता रहता कि भाई "क़िला तिहारो ही है" और जब वे कहते कि आपयहां से हटजायें गोले ओले की तरह बरस रहे हैं तो जवाबदेता कि "भय्या जाके नामकी चीठी भगवान के घर तैं वामें बंधी आवतु है वाही को गोला लगतु है" और जब सुना कि लेक ने फ़ौज हटाली। बड़ी दूरंदेशी की अपने सब सर्दारों को जमा करके कहा कि भाइयो यह हम सब की ताक़त न थी कि अंगरेज़ों को हटा सकें यह निरी ईश्वर की कृपा है कि मेरी बात रह गयी॥ पर अब मुनासिब यह है कि हुल्कर से कह दो किसी तरफ़ को राह ले मेरा बूता नहीं कि अंगरेज़ों के दुश्मन को पनाह दूं और अपने लड़के कुंवर रणधीरसिंह को क़िले की कुञ्जी देकर लेक के पास भेज दिया लेक ने भरतपुर वालों की बड़ी ख़ातिर्दारी की राजाने बीस लाख रुपया लड़ाई का ख़र्च अदा करने का वादा किया। लेक ने सुलहनामे पर दस्तख़त कर दिया॥

लार्ड विलिज़्ली के इस भारी मंसूबे की क़दर कि हिंदुस्तानी फ़सादी रईसों को ज़ेर करके यकबारगी झगड़े फ़साद की जड़ मिटादे। और सारे मुल्क में अमन चैन जमा दे इंगलिस्तान में न हुई कम्पनी के शरीक आख़िर सौदागर थे। लड़ाई के ख़र्च से घबरा गये॥ इस बड़े नामी गवर्नरजेनरल

का ......ा मंज़ूर कर लिया। और लार्ड कार्नवालिस को जो सन् १७६३ में इस उहदे से इस्तीफ़ा देकर गया था फिर गवर्नर जेनरल मुक़र्रर कर के कलकत्ते को रवाना किया ॥ लार्ड कार्नवालिस की राय मार्क्विस विलिज़ली से बिल्कुल बख़िलाफ़ थी। बल्कि हम तो यही कहेंगे कि उस मालिक पैदा करनेवाले की राय के भी बख़िलाफ़ थी ॥ क्योंकि मार्क्विस विलिज़ली तो यहां के इन फ़सादी रईसों को ज़ेर कर के अखण्ड राज्य अपनी सर्कार का जमाना चाहता था। और लार्ड कार्नवालिस इन्हें बचाना बल्कि अक्सर इलाक़े जो सर्कारी तहतमेंआगये थे उन को भी लौटा देना ॥ कौन जाने यही सबब था कि तीसवीं जुलाई को तो वह कलकत्ते में पहुंचा। और पांचवीं अक्तूबर को ग़ाज़ीपुर में इस दुनियां से चलबसा ॥ मक़बरा इस का वहां देखने लाइक़ है सरजार्ज बार्लो जो उस वक़्त कौंसल के अव्वल मिम्बर थे गवर्नर जेनरल के उहदे का काम अंजाम देने लगे। और वही फिर उस उहदे पर बोर्ड आफ़ कंट्रोल की मंज़ूरी से मुक़र्रर हुए ॥

संधिया से फ़ौरन सुलह हो गयी और हुल्कर से पंजाब में व्यासा के कनारे जहां वह सिक्खों से मदद लेने को गया था अहदनामा लिखवा लिया। जयपुर और बूंदी पर से कि वहां के राजा सर्कार के वफ़ादार दोस्त थे हिफ़ाज़त काहाथ बिल्कुल खींच लिया और मरहठों का गोया इन्हें शिकारबना दिया ॥ जयपुर के वकील ने ख़ूब कहा था। कि "सर्कार ने अपना ईमान अपनी ज़ुरूरत के ताबे कर लिया ॥

१८०६ ई० इसी अर्से में कहीं मंदराज के कमांडर इनचीफ़ ने कोई हुक्म इस ढब का जारी कर दिया था कि पल्टन के सिपाही परेड पर कान में बाली पहन कर या माथे में तिलक लगाकर न जाया करें। और पोशाक भी कुछ नये किसम की पहनें ॥ सिपाहियों ने यह झूठा शुबहा करके कि सर्कारकोहमारेधर्म्म में दख़ल देना मंज़ूर है बिल्लूर के क़िले में जहां टीपू का घर बार नज़रबन्द रक्खा गया था। अंगरेज़ी अफ़सर और गोरों पर

यकायक हमला करदिया ॥ लेकिन जबकर्नेल जिलस्पीअरकाट से हिन्दुस्तानी और अंगरेज़ी रिसालेके सवार और तोपेंलेकर बिल्लूर में पहुंचा सिपाही कोई ४०० तो मारेगये। और बाक़ी कुछ क़ैद हुए और कुछ मुआफ़ करदिये गये ॥ दोनों पल्टनों का नाम जिनके सिपाहियों ने यह बलवा किया था फ़ौज की फ़िहरिस्त से कट गया। बाज़े ऐसा भी गुमान करते हैं कि इस में टीपू सुल्तानके घरवालों की साज़िसथी पर सुबूत नहीं मिला ॥ जो हो टीपू के घरवाले नज़रबन्द रहने को कलकत्ते भेजे गये और उनके पिंशन घटाये गये। मंदराज के गवर्नर लार्डविलियमबेंटिंक जिसे यहांवाले लार्डबिंटिक कहतेहैं और कमांडर इनचीफ़की बदनामी हुई दोनों बिलायत चले गये* ॥

लार्डमिनटो

आख़िर जुलाई सन् १८०७ में लार्डमिनटो गवर्नर जेनरल मुक़र्रर होकरआया ॥ और सर जार्जबार्लो लार्डबेंटिंक के उहदे पर मंदराज चला गया ॥ लार्डमिनटो को पांच बरसतक कुछ फ़ौज बुंदेलखंड में रखनी पड़ी सन् १८१२ में कालिंजर का क़िला हाथ लगा। और वहां का बखेड़ा तै हुआ ॥ १८०७ ई०

सर्कारको फ़रासीसके मशहूर शाहनशाह नेपोलियन बोनापार्ट की तरफ़ से हिन्दुस्तान पर हमला होने का खटकाथा और इनदिनोंमें उसका एक वकील भी बड़ी धूमधाम से ईरान के बादशाह के पास आया था ॥ इसलिये लार्डमिनटो ने बीच के मुल्कवाले यानी पंजाब और अफ़ग़ानिस्तान और ईरान के मालिकों से क़ौल क़रार कर लेना मुनासिब समझा ॥

पंजाब में रंजीतसिंह सिक्खों का राजा बन बैठाथा। और हर तरफ़से मुल्क दबाता चलाजाताथा॥ यहांतककि सतलज इस पार अपनी फ़ौजें उतार लाया। और जमना को अपनेराज की सरहद्द बनाना चाहा ॥ जब लार्ड मिनटो की तरफ़ से चार्लसमिटकाफ़उसके पास पहुंचा। वह इसके समझानेको पहले १८०८ ई०

*बिलायत से इस किताब में सब जगह इंगलिस्तान को बिलायत समझना चाहिये ॥

तौ कुछ ख़याल में नहीं लाया ॥ लेकिन अक्टरलोनी का फ़ौज समेत लुधियाने में पहुंचना सुनकर इस तरफ़ से बिल्कुल निरास हो गया । और सतलज को सरहद मानकर पच्चीसवीं
१८०९ ई० अप्रेल सन् १८०९ मेंदोस्तीके अहदनामेपर दस्तख़त करदिया ॥

अफ़ग़ानिस्तान के तख़्त पर अहमदशाह दुर्रानी का पोता शुजाउल्मुल्क था । उस के पास लार्डमिन्टो की तरफ़ से मौंटस्टुअर्ट एल्फ़िन्स्टन पहुंचा ॥ शुजाउल्मुल्क ने बड़ी ख़ातिर्दारी की लेकिन दोस्ती के लिये सर्कार से मदद के तौर पर कुछ रुपया मांगा वह लार्ड मिन्टो ने मंज़ूर नहीं किया। ईरान में इंगलिस्तान के ख़ुद बादशाहकी तरफ़से वकील आया और यहां से भी सरजान माल्कम भेजा गया ॥

मंदराज की फ़ौज में सिपाहियों के डेरोंकेख़र्च का अफ़्सरों कोठीके के तौर पर कुछ मुक़र्रर चलाआताथा । सरजार्जबार्लोने इस तरीक़े को मौक़ूफ़ करना चाहा ॥ इसमेंऔरकईऔरभीबातों में फ़ौजी और मुल्की साहिबों के दिलों के दर्मियान फ़र्क़ आ गया । गवर्नरकोबादशाहीफ़ौज और हिन्दुस्तानीसिपाहियों पर भरोसा था ॥ हुक्मदिया कि कम्पनी की पल्टनोंमेंजिनकीतरफ़ से खटका पैदा हुआथा गोरे और सिपाही अपनेअफ़्सरोंसेजुदा कर दिये जायें इस पर श्रीरंग पट्टन में अफ़सरों नेबलवा किया बादशाही फ़ौज को क़िले से बाहर निकाल दिया । औरबाहर छावनी परगोला चलाना शुरू किया ॥ चितलदुर्ग की सर्कारी फ़ौज भी इनके शामिल होने को आती थी । लेकिनबादशाही ड्रागून के रिसाले ने रास्ते ही में छितर बितर कर दी ॥ हैदराबाद में भी सर्कारी फ़ौज सर्कशी पर मुस्तइद हुई थी और जलना और मौसलीपट्टन की फ़ौज को शामिल होने के लिये चिट्ठी भेजीथी । लेकिन फिरकुछसमझ गयी॥ क़ुसूरमुआफ़ चाहा । लार्डमिन्टो उस वक़्त मंदराज में था ॥ बीस अफ़्सरों को मौक़ूफ़ किया । बाक़ी का क़ुसूर मुआफ़ कर दिया ॥

१८१३ ई० सन् १८१३ में सर्कार कम्पनी को पार्लामिंट से इस मुल्क को नयी सनदमिली । और उसकीशर्तोंके बमूजिब इंगलिस्तान

के तमाम सौदागरों को इस मुल्क में तिजारत करने की इजाज़त हासिल होगयी ॥ उसी साल के आख़िर में लार्डमिन्टो अपने काम से मुस्ताफ़ी हुआ । और अर्ल आफ़ माइरा गवर्नर जेनरल मुक़र्रर होकर आया ॥

अर्ल आफ़ माइरा

नयपालवाले बहुत दिनों से अपना राज बढ़ाते चलेआते थे । यहां तक कि अंगरेज़ी अमलदारी पर हाथ फैलाने लगे॥ जब समझाने बुझाने से कुछ काम नहीं निकला सर्कारनेलड़ाई १८१४ ई० की तयारी की राजा बालक था काम राज का काजी भीमसेन करता था । फ़ौजजंगी बारहही हज़ारथीपर उसकी मज़बूती और बहादुरी पर पूरा एतिबार था ॥ ३५०० आदमी जेनरल जिलस्पी के साथ सहारनपुर से देहरादून गये और वहां से अढ़ाई कोस के तफ़ावत पर नयपालियों के कलंगा नाम क़िले पर हमला किया क़िलेमें कुल छ सौ नयपाली थे लेकिन जेनरल जिलस्पी मारा गया । और सर्कारी फ़ौजको पीछेहटना पड़ा ॥ बीस पच्चीस दिन में जब दिल्ली से भारी तोपें आन पहुंची तीन दिन के गोले बरसने में क़िले के अंदर कुल सत्तर आदमी जीते बाक़ी रह गये । पर सर्कारी फ़ौज के हाथ वेभी नहीं लगे क़िलेदार के साथ किसी तरफ़ को निकल गये ॥ इन की इस जवांमर्दी से नयपालियों का दिल बहुत बढ़ा और सर्कारी फ़ौज को नुक़सान उठाना पड़ा । कलंगासे सर्कारीफ़ौज पच्छम सिरमौर की राजधानी नाहन के पास जैतक का क़िला लेने को गई । लेकिन वहां इसकी कोशिश बेफ़ाइदा हुई॥क़िले पर झंडा नयपालियों का फहराता रहा ४५०० आदमी जेनरल उड के साथ गोरखपुर की सहद्द से पालपा का क़िला लेने को रवाना हुए । लेकिन रास्ता जंगल झाड़ी और तराईमेंऐसा ख़राब पाया कि जब बीमार पड़ने लगे बुटवल से लौटकर गोरखपुर की छावनी में चले आये ॥ आठ हज़ार आदमीजेनरल मार्ली के साथ दानापुर से बेतिया होकर नयपाल की राजधानी काठमांडू लेने को चले लेकिन सहद्द पर पहुंचते

ही कुछ सिपाही कट जानेके सबब जेनरल मार्ली ऐसाबेदिल हो गया। कि सर्हद्द की हिफ़ाजत के लिये कुछथोड़ीसी फ़ौज छोड़कर बेतिया हट आया॥ और जब इतनी मदद पहुंची कि १३००० आदमी इसके तहत में हो गये तब भी क्या जाने इसके मनमें क्या समाई बे कहे सुने अचानक एक दिन सूरज निकलने से पहले फ़ौज से निकल कर किसी तरफ़ को चल दिया। इस अर्से में कर्नल गार्डनर ने रुहेलखण्डसेकमाऊं में घुस कर अलमोरेका क़िला नयपालियोंसेख़ालीकरवालिया॥ लेकिन कप्तान हिअर्सी जो उस से शामिल होने को जाता था। शिकस्त खाकर नयपालियों की क़ैद में पड़गया॥ निदान यहतो जिलस्पी और मार्ली सर्दारों की उतावली और बेदिली थी। अब जेनरल अक्टरलोनी को बहादुरीसुनो इसनेछहज़ार आदमी लेकर हंडूरकी राजधानी नालागढ़*नयपालियोंसे ख़ाली कराली॥ नयपालियों का राज इस वक़्त कोटकांगडे तक पहुंच गया था बिलकुल पहाड़ी राजाओं को उनके राज से बेदख़ल कर दिया था। या उन से भारी कर यानी ख़राज ठहराकर उन्हें अपनाजैलदार बनालियाथा॥ बहुतेरे राजा इन नयपा-लियों के निकाले सर्कारी फ़ौजकेसाथ ख़िदमत के लिये हाज़िर थे हमने इस लड़ाई काहालखुद राजारामसिंहनालागढ़वालेकी ज़ुबान से सुना है वहउस वक़्त जेनरल अक्टरलोनी के साथथा नालागढ़ से सर्कारी फ़ौज रामगढ़को तरफ़गयी नयपालियों का नामी जेनरल अमरसिंह थापा तीन हज़ार सिपाहीलेकरउसके बचाने को आया॥ जेनरल अक्टरलोनी ने भी अपनी मदद के लिये कुछ और सर्कारी फ़ौज के आ जानेका इन्तिज़ार करना मुनासिब जाना। और फिर बड़ी अक्लमन्दी के साथमलोनके मज़बूत क़िले को तरफ़ कूच किया जब नयपाली रामगढ़ से
१८१५ ई० मलौन के बचाने को चले रामगढ़ सहज में सर्कारके क़ब्ज़े में आगया॥ निदान सर्कारी फ़ौज तो उस पहाड़केनीचे जिसपर मलौन का क़िलाहै एक नदी के कनारेपड़ीथी और नयपालियों

* शिमला कोएजंटी के ताबे है॥

मलौन से सूरजगढ़ तक पहाड़ पर मोरचे जमाये थे। रैला और देवथल इसके बीचमें थे दोनों कमज़ोर थे॥ अक्टरलोनी ने मेजर इनिस के तहत में तो कुछ फ़ौज रैला परभेजी और कर्नैलटामसन को देवथल पर हमला करने का हुकम दिया। इसी तरह कप्तान शवर्स को किले के नीचे नयपालियों की छावनी लेने को रवाना किया॥ कप्तान शवर्स मारा गया। लेकिन रैला और देवथल सर्कारी फ़ौज के क़बज़े में आया॥ दूसरे दिन अमरसिंह ने भक्तिसिंह को इन्हें वहांसे निकालने के लिये बढ़ाया। और आप निशान के साथ बची हुई फ़ौज लेकर मदद को मुस्तइद रहा॥ नयपाली कमान की शकल भक्तिसिंह के पीछे अंगरेज़ी फ़ौज का दोनों कनारा दबाएशेरों की तरह इस तरह पर सीधे बढ़े आते थे कि अगर्चे सर्कारी तोपख़ाने से ज़ंजीरी गोले झाड़ू की तरह मैदान को दुश्मनों से साफ़ कर रहे थे इन नयपालियों के निशानों से सर्कारी तमाम तोपों पर कुल तीन अफ़सर और तीन ही गोलंदाज़ बाक़ी रह गये। बाक़ी सबकाम आये या घायल होकरबेकाम हो गये॥ दो घंटे तक कामिल लड़ाई होती रही। आख़िर अंगरेज़ी जवानों ने संगीनें बढ़ाईं और नयपालियों पर हमला कर दिया। पांव न ठहरसकेपीठ दिखाई॥ भक्तिसिंह की लोथ खेत रही अमरसिंह किले में घुसगया बीर और बहादुर दुश्मन भी इज़्ज़त के लाइक़ है जेनरल अक्टरलोनी ने भक्तिसिंह की लाश दुशाले में लपेट कर अमरसिंह के पास भिजवा दी॥ उसकी दो स्त्रियां उसके साथ सती हुईं सर्कारी फ़ौजरोज़ बरोज़क़िला लेने की तदबीरें करती जाती थी। यहांतक कि आठवीं मई को हमला कर देने की तयारी हुई॥ अमरसिंह ने अबअपनी ताक़त मुक़ाबले की न देखकर इस क़रार पर कि सर्कारउसके आदमियों को और जैतक के क़िलेवालों कोभी अपने हथियार और माल असबाब समेत नयपाल चला जाने दे किलों को ख़ाली करके जमना के पच्छम बिल्कुल इलाक़े छोड़ दिये। अमरसिंह के शिकस्त खाने से नयपाली सुस्तपड़गये॥ पयाम

सुलह का भेजा। लेकिन जब सर्कार ने देखा कि वह ख़ाली दिन बिताना चाहते हैं और दूसरे साल फिर लड़ने का सामान तयार करते जाते हैं सत्तरह हज़ार फ़ौज देकर जेनरल अकूरलोनी को कि अब ख़िताब मिलकर सर डेविड अकूरलोनी हो गया था नयपाल पर चढ़ाई करने का हुक्म दिया॥ इसने अपना लश्कर ऐसे ऐसे घाटे से और नाले खोलों से कि जहां घने जंगलों के सबब सूरज की किरण भी नहीं पहुंचती थी निकालकर मकावनपुर से कोस भर के अंदर आ डाला। और एक अच्छी लड़ाई लड़ा॥ ५०० आदमी नयपालियों के मारे गये क़िलेदार ने कि काली भीमसेन का भाई था कहला भेजा आप क्यों लड़ते हैं महाराज ने आप के कहने बमूजिब सुलहनामे पर दस्तख़त करदिया निदान इस सुलहनामे के बमूजिब काली नदी नयपाल की पच्छम सहद्द ठहरी। और शिकम के राजा की ज़मीन जो नयपालियों ने दबा ली थी पूरब में उसे लौटवा दी गयी॥ और काठमांडु में एक सर्कारी रज़ीडंट का रहना क़रार पाया। गवर्नर जेनरल को बादशाह के यहां से मार्क्किस आफ़ हेस्टिंग्ज़ का ख़िताब मिला और सर डेविड अकूरलोनी के नाम में शुकराना आया

इस में शक नहीं कि मरहटों का ज़ोर घटा दिया गया था। पर उनका हौसिला भूभल में दबेहुए अंगारे की तरह सुलगतारहा॥ पेशवा फिर भी इनका पेशवा बनने की आर्ज़ू रखता था। छुप छुप के नागपुर ग्वालियर और इन्दौर यानी भोसला सेंधिया और हुल्कर के पास पयाम भेजता रहताथा॥ बड़ोदेवाला गायकवाड़ सर्कार के कहने मेंथा। इसीलिये पेशवा उस से ख़ार खाता था॥ आपस की किसी तकरार के तसफ़िये के लिये जब सर्कार ने जान की ज़िम्मेवारी लेकर गायकवाड़ की तरफ़ से गंगाधरशास्त्रीको पेशवा के पास भिजवाया। पेशवा पंडरपुरमें था उसके मंत्री यानी दीवान त्रिम्बकजी ने उसे पंडरनाथ के दर्शन को बुलाया॥ जब वह दर्शन

करके मंदिर से डेरे की तरफ़ लौटा। पांच आदमियों ने पीछे से झपटकर उसका काम तमाम कर डाला॥ सर्कार जान गयी कि यह पेशवा के इशारे से हुआ। लेकिन उससे कुछ न कहकर त्रिम्बक को बम्बई के पास ठाणा के क़िले में क़ैद कर दिया॥ पेशवा को यह बहुत बुरा लगा। पर इलाज क्या था॥ इस अर्से में पिंडारों ने बड़ा ज़ुल्म मचादिया था यह निरेलुटेरेथे। हिंदू मुसल्मान सब क़ौमके आदमी उनमें शामिलथे॥ सवारीउनकी घोड़े से टट्टू तक। और हथियारउनके बंदूकसे निरेसोंटेतक॥ हज़ारोंही गिनती मेंथे मंज़िलोंका धावा मारतेथे। जहांजाते थे ठीकरे तक नहीं छोड़ते थे॥ हुल्कर और सेंधियाभेइनको नर्मदा कनारे इलाक़ेदेरक्खेथे। और दुश्मनोंका इलाक़ा तबाह करनेकोइन्हें बहुतअच्छा वसीला समझते थे॥ अबतकतोइन्हों ने पेशवा और हैदराबाद और नागपुरवाले के इलाकों को लूटा लेकिन अब सर्कारी अमल्दारी में भी धावा मारनाशुरूकिया। किसी साल बिहार का सूबा लूटा किसी साल सूरत जा घेरा किसी साल गंतूर और कड़पमें सिर जा निकाला॥ गवर्नर जेनरल को मालूम हो गया कि जब तक यह पिंडारे नेस्तानाबूद न किये जायंगे इस मुल्क में अमन चैन की सूरत पैदा न होगी निदान गवर्नर जेनरल ने हर तरफ़ से फ़ौजों को रवा- १८१७ ई० नगी का हुक्मजारी किया। और इस हुक्मसेयहां और दखन दोनों जगहमिलाकर एकलाख तेरह हज़ार आदमीका लश्कर ३०० तोपोंके साथ रवाना हुआ॥ बंगाले को इकसठ हज़ार सिपाह में से बड़ा हिस्सा गवर्नर जेनरल के साथ कानपुर में था। दहना बाज़ू आगरे में रहा॥ बायां बुंदेलखंड में उसके बायें और भी दो टुकड़े मिरज़ापुर के पास और बिहार की सर्हद्द पर थे बची हुई फ़ौज सर डेविड अक्टरलोनी के तहत में दिल्ली की हिफ़ाज़त को रही। दखन को बावन हज़ार सिपाहमंदराजके कमांडरइनचीफ़सर टी० हिस्लपनेपांचहिस्सों में बांटी॥ लेकिन मसल मशहूर है। बैल न कूदा कूदी गौन पिंडारों से तो अभी लड़ाई शुरू भी नहीं हुई थी। पेशवा

ने मुक़ाबले पर कमर बांधी ॥ त्रिम्बक टाणा के क़िले से भाग आया था ।पेशवा सर्कार के दिखलाने को तो उसके गिरफ़्तारी की कोशिश करताथा और छुपछुप कर उसे हर तरह कीमदद पहुंचाता था ॥ जब नयी सिपाह भरती करने लगा औरसर्कारी सिपाह को इधर से फोड़कर अपनी तरफ़ मिलाने की उसकी पैरवी ज़ाहिर हो गयी रज़ीडंट एलफ़िंस्टन साहिब ने अपनी फ़ौज को पूना के पूरब की छावनी छोड़कर उत्तर किरकी में रज़ीडंटी के पास आजाने का हुक्म दिया । पेशवा को यह बुरा लगा रज़ीडंट से कहला भेजा कि आप इसहर्कतसे बाज़ रहिये रज़ीडंट ने साफ़ जवाब दिया और जब देखा कि पेशवा के सिपाही रज़ीडंटी और छावनी के बीच में जमा होने लगे रज़ीडंटी छोड़कर किरकी की छावनी में चला आया ॥ पेशवा के सिपाहियों ने रज़ीडंटी लूटकर जला दी । पेशवा की फ़ौज में तख़मीनन् दस हज़ार सवार और दस ही हज़ार पैदल होंगे और सर्कारी सिर्फ़ पैदल सिपाही सो भी तीन हज़ार से कम लेकिन सर्कारी सिपाहियों ने हमला किया और पेशवा की सारी फ़ौज को भगा दिया पेशवा ने पुरंदर की राह ली ॥ वहां भी पैर न जमे सितारे गया । जब वहां भी न ठहर सका सेवाजी के जानशीन यानी सितारे के राजा को उस के कुनबे समेत साथ लेकर पहले दखन की तरफ़ बढ़ा ॥ फिर मालवे को फिरा । फिर पूना को जानिब मुड़ आया । निदान आगे आगे तो पेशवा * अपने नाम के अर्थ बमूजिब भागा चला जाता था और पीछे पीछे सर्कारी फ़ौज उसके रगेदने को परछाईं की तरह पीछा किये हुए थी । पूना के पास भीमा किनारे कोरा गांव में एक छोटी सी लड़ाई भी हो गयी ॥ खेत सर्कारी फ़ौजके हाथ रहा सितारेके क़िले पर सर्कार ने राजाका निशान चढ़ा दिया । और पेशवा की माज़ूली का उसकेउहदे से इश्तिहार जारी किया ॥ अष्टी की लड़ाई में पेशवा का

* फ़ारसी में पेश आगे को कहते हैं पेशवा का अर्थ जो आगेरहे इस का नाम बाजीराव था ॥

वफ़ादार जेनरल गोकला मारा गया। और सितारे का राजा अपने कुनबे समेत सर्कार की हिमायत में चला आया॥ निदान पेशवा इस क़दर हैरान और परेशान हुआ कि आख़िर थक कर और हार मानकर सन् १८१८ में आठलाख सालका पिंशन कुबूल कर लिया। और मुल्क से दस्तबर्दार होकर गंगासेवन के लिये बिठूर में आ रहा त्रिम्बक को सर्कार ने गिरफ़्तार करके जनम भर के लिये चनार के क़िले में क़ैद कर दिया॥ १८१८ ई०

इस पेशवाकी उखाड़ पछाड़में नागपुर के राजा आपासाहिब की नटखटी सर्कार को बख़ूबी साबित हो गयी वह पेशवा और पिंडारों से साज़िश रखता था। और पूना की रज़ीडंटी फूंकने के बाद उसने पेशवा का दिया हुआ ख़िताब सेनापति का इख़्तियार किया था और अपने झंडे पर पेशवाकानिशान यानी ज़रीपटका चढ़ा दिया था॥ जेन्किंस साहिब रज़ीडंट अपनी रज़ीडंटी की हिफ़ाज़त का उपाय करने लगे रज़ीडंट के पास उस वक़्त कुल तेरह सौ सिपाही थे और राजाकेपास बीस हज़ार सवार पैदल रज़ीडंटी और शहर के बीच में एक पहाड़ी सी है नाम उसका सीताबलदी उसी पर सर्कारीसिपाहियों ने मोरचा जमाया। सत्ताईसवीं नवम्बर सन् १८१७ को राजा की फ़ौज ने इनपर हमला किया इस लड़ाई में सर्कारी सिपाहियों ने निहायत बहादुरी दिखलायी यहां तक कि चौथाई कट गये पर खेत न छोड़ा॥ राजा की सारी फ़ौज को जो दलबादल की तरह उमड़ आयीथी तीन तेरह करकेभगा दिया जब राजा ने यह हाल देखा। कहलाभेजा कि फ़ौजने परवानगीलड़ी मुझेबड़ाअफ़सोस है मैं सर्कारका तावेहूंरज़ीडंट ने जवाब दिया कि अगर तूसच्चाहै फ़ौज छोड़कर हमारे पास चला आ॥ राजा रज़ीडंटी में चला आया।रज़ीडंट ने उसेफिर नये सिर से नागपुरकी गद्दीपर बिठाया॥ लेकिनयहनादानइस पर भी अपनी हर्कत से बाज़ न आया। सर्कार को दुश्मनऔर पेशवाकोदोस्त समझता रहा॥तबनाचार सर्कार ने उसे नज़रबंद करके इलाहाबाद कोरवाना किया। और उसकीजगह नागपुरकी

गद्दी पर रघुजी भोंसला के पोते को बिठाया ॥ लेकिन आपा रास्ते से भागकर नागपुर से ८० कोस पर नर्मदा के दखन एक पहाड़ी गोंद सर्दार की पनाह में चला गया। और वहां फ़ौज जमा करके
१८१८ ई० बखेड़ा उठाने लगा ॥ निदान सन् १८१८ में जब सर्कार ने उसके इलाज की तदबीर की वह उन जंगल पहाड़ों को छोड़कर सेंधिया के क़िले असीरगढ़ में जा घुसा और फिर फ़क़ीरी भेस में पंजाब की तरफ़ चला गया। सर्कार ने जोधपुर के राजा की फ़ेल ज़ामिनी पर इसे वहां रहने की इजाज़त दी और एक मुद्दत बाद उसी जगह इसका मरना हुआ ॥ सर्कार ने इस क़सूर पर कि असीरगढ़ के क़िलेदार ने आपा साहिब को पनाह दी थी और क़िलेदार को सेंधिया की पोशीदा परवानगी थी सेंधिया को सज़ा देने के लिये उस मशहूर मज़बूत क़िले को घेरकर अपने दख़ल में कर लिया। अब रह गया हुल्कर सो जस्वन्तराव था तो परलोक होगया था उसकी रानी तुलसीबाई ने एक लड़का गोद लेकर गद्दी पर बिठाया ॥ तुलसीबाई ने अपनी फ़ौज के डर से अपने यार गनपतराव समेत सर्कारी पनाह में चला आना चाहा। लेकिन फ़ौज ने इस में अपनी तबाही समझकर तुर्त उसका सिर काट डाला और लड़के राजा के नाम से सर्कार के साथ लड़ने का सामान किया ॥ मंदराज का कमांडरइनचीफ़ जो पास ही मौजूद था बिजली की तरह फ़ौज लेकर इनके सिर पर पहुंचा। और सिप्रा पार महीदपुर में इन्हें ऐसा कांटा मारा और भगाया कि तब से वह राज बिल्कुल सुस्त पड़ गया ॥ सन् १८१८ में सुलहनामा लिखा गया। क्या महिमा है सर्व शक्तिमान जगदीश्वर की कि सर्कार ने तो खाली लुटेरों और डाकू यानी पिंडारों का इस फ़ौज से नाश करना चाहा था लेकिन वहां उनके हिमायती बल्कि बानी मबानी यानी मूलकारण मरहठों ही का नाश होगया ॥ गोया बिल्कुल हिन्दुस्तान बेख़लिश हुआ और आप से आप सर्कार के सायेमें चला आया ॥ सिवाय सितारे के तमाम इलाक़े पेशवा के और अकसर इलाक़े नागपुर के

दखल में आ जाने से सर्कारी अमल्दारी बहुत बढ़ गयी अज-मेर भी इनके क़बज़े में आया। और कच्छ गुजरात और रज-पुताने के सब राजाओं ने बल्कि उदयपुर के रानाओं ने भी जिन्हों ने न मुसल्मानों के साम्हने और न मरहठों के आगे कभी सिर झुकाया था बड़ी ख़ुशी से सर्कार का हिफ़ाज़त का हाथ अपने ऊपर क़बूल किया॥ जब पेशवा ऐसे सर्दार की जो नव लाख घोड़ों का धनी कहलाता था बाई पच गयी तो अब पिंडारों का हम क्या हाल लिखें इतना ही लिखना काफ़ी है कि दखन की सर्कारी फ़ौज ने नर्मदा पार होते ही पिंडारों के बिल्कुल इलाक़ों में क़बूज़ा करके उन्हें तीनतेरह करदिया। और बंगाले की सर्कारी फ़ौज ने भी ख़ूब उनका शिकारकिया॥ अमीरख़ां ने जिसके जानशीन अब टोंक के नव्वाब कहलाते हैं अपनी लुटेरी फ़ौज दूर करके सर्कार को अहदनामा लिख दिया। करीमख़ां और वासिलमुहम्मद पिंडारों के सर्दारों ने जो महीदपुर में हुल्करकी फ़ौजके साथसर्कार से लड़ेथे अपने तईं सर्कार के हवाले कर दिया॥ सर्कार ने उन्हें खाने को गोरखपुर में जागीरें दीं वासिलमुहम्मद ने भागना चाहा था और जब भाग न सका ज़हर खाकर मर गया। इन पिंडारों का नामी सर्दार चीतू जो आपा साहिब के साथ असीरगढ़ तक गया था जंगल में शेर का लुकमा हुआ॥

लखनऊ का नव्वाब वज़ीर सआदतअलीख़ां सन् 1814 में मर गया था। उसके बेटे और जानशीन ग़ाज़ियुद्दीनहैदर ने अब सर्कारकीइजाज़त से लक़बबादशाहका इख़्तियार किया॥

मार्क्विस आफ़हेस्टिंग्ज़ सन् 1823 में गवर्नरजेनरलके उहदे से मुस्ताफ़ी होकर विलायत गया। और वहांउसेइनख़िदमतों के इनाम में छ लाख रुपये की क़ीमत का सर्कार से इलाक़ा मिला॥ इस के उहदे पर जार्ज केनिंग* मुक़र्रर हुआ था। लेकिन पीछेसे जब उस ने उससे इनकार किया लार्ड ऍम्हर्स्ट 1823 ई०

* इसी के बेटे लार्ड केनिंग ने सन 1857 का बलवा दबाया और इस मुल्क को तबाह होने से बचाया॥

गवर्नर जेनरल मुक़र्रर होकर पहली अगस्त को कलकत्ते में दाख़िल हुआ ॥

लार्ड अम्हर्स्ट

नयपालियों की तरह बर्म्हावालों का भी सिर फूल लाया। मुल्क बढ़ाने का शौक़ पैदा हुआ ॥ अराकान मनीपुर और आसाम फ़तह करके कचार पर चढ़ाई की। कचार के राजा ने सर्कार की पनाह ली सर्कार ने उसकी मदद को फ़ौज भेजी ॥ लेकिन बर्म्हावालों का तो सिर आसमान पर चढ़ा हुआ था गवर्नर जेनरल से कहला भेजा कि चटगांव ढाका और मुर्शिदाबाद भी किसी ज़माने में हमारे मुल्क का हिस्सा था भला चाहते हो तो अब भी छोड़दो गवर्नरजेनरल तो हंसकर चुप रहे लेकिन इन पागलों ने सर्कारी इलाक़ों को अपनी नानी जी की मीरास समझकर चटगांव के कनारे पर जो शाहपुरिया के टापू में सर्कारी चौकी के तेरह जवान थे तीन उन में से काट डाले। बाक़ी बचारे जान लेकर भागे ॥

१८२४ ई० निदान पांचवीं मार्च सन् १८२४ को सर्कार ने लड़ाईका इश्तिहार दिया। कुछ थोड़ी सी फ़ौज ने तो ब्रह्मपुत्र के कनारे कनारे जाकर बिल्कुल आसाम में दख़ल किया ॥ और दूसरी ने अराकान जा लिया। और बाक़ी ११००० फ़ौज ने जहाज़ों* में सवार होकर रंगून पर निशान चढ़ाया ॥ जब सर्कारी फ़ौज बर्म्हा की राजधानी आवा लेने के इरादे वहां से आगेबढ़ी। हर लड़ाई में बर्म्हावालों पर फ़तह पाती गयी ॥ लेकिन आबहवा की ख़राबी और बेगाना मुल्क होने के सबब आदमी और रुपया दोनों का बड़ा नुक़सान हुआ। बड़े बड़े बिकट जंगल और दलदलों में लड़ना पड़ा ॥ अंधे के हाथ जैसे बटेर लगे मेंगीमहाबंदूला के आदमियों ने कहीं चटगांव के ज़िले में रामूके दर्मियान ३५० सर्कारी सिपाही काट डाले थे राजाने इसेदूसरारुस्तमसमझा। सेनापति मुक़र्रर

*इन में डायना नाम पहला ही धुंए का जहाज़ था जो लड़ाई के लिये भेजा गया ॥

करके सर्कारी फ़ौज के मुक़ाबले को भेजा ॥ इसने भी बीड़ा उठाया कि बे फ़रंगियों के निकाले दर्बार में मुंह नहीं दिखलाऊंगा लेकिन सच उसने मुंह नहीं दिखलाया । कईलड़ाइयों के बाद डुनाव्यू के क़िले में बान लगकर मर गया ॥ निदान जब सर्कारी फ़ौज इन्हें शिकस्तदेतीइनके क़िलेऔरतोपख़ानेलेती फ़तहके निशान उड़ाती आवासे कुलचारमंज़िलइधरयंडाबू में जा पहुंची। राजानेघबराकरसुलहकरली ॥ चारक़िस्तोंमेंएक १८२६ ई०
करोड़ रुपया लड़ाई के ख़र्चबाबतदिया*। और आसाम अराकान और मर्तबान के दखन का बिलकुल मुल्क छोड़दिया॥

इसी लड़ाई के शुरू में सैंतालीसवीं पल्टन को और दो पल्टनों के साथ जो बारकपुर की छावनी में थीं रंगून जाने का हुक्म हुआ था। सिपाही समुद्र का नाम और बर्म्हा की आबहवा और रामू की क़त्लका हालसुनकर हिचकिचा गये जाने से इनकारकिया ॥ परेड पर दो गोरोंकी पल्टनें कलकत्ते से बुलायी गयीं सैंतालीसवीं के बहुतेरे सिपाही तोपसे उड़ा दिये गये बहुतेरे फांसी पड़े बहुतेरों ने क़ैद में मिट्टी काटी बाक़ी के नाम कट गये ॥

भरतपुर में (सन१८२३) राजा रंजीतसिंहके बेटेरणधीरसिंह के लावल्द मरने पर रणधीरसिंह का भाई बल्देवसिंह गद्दी पर बैठा। उसकभतीजे दुर्जनसालने इसझूठीबातपर कि मुझे रणधीरसिंहने गोद लिया था गद्दीका दावाकिया ॥ बलदेवसिंह ने अपने लड़के बलवन्त सिंहको रजपुतानेकेरज़ीडंट सर डेविड अक्टरलोनी की गोद में रख दिया। और कहा कि दुर्जनसाल ज़रूर मेरे बाद बखेड़ा करेगा मैं चाहता हूं कि आप मेरे रहते मेरे लड़के को सर्कार की तरफ़ से गद्दी पर

* लेकिन अपनी तवारीख़ों में यही लिखा कि किसी टापू के जंगली आदमी भूलकर इस मुल्क पर चढ़ आये थे जब भूखों मरने लगे दयावान महाराज ने करोड़ रुपया राहख़र्च देकर अपने वतन को लौट जाने की इजाज़त मरहमतफ़र्माई यह हाल है एशिया की तवारीख़ों का !

बैठा है रज़ीडंट ने ख़ुशी से यह बात क़बूल की और बलवन्तसिंह को गद्दी पर बैठा दिया ॥ सन् १८२५ में बलदेवसिंह का परलोकहुआ। दुर्जनसालने बलवन्तसिंह के मामू को मार डाला और बलवन्तसिंह को क़ैदकरके राजगद्दी पर आप बैठा ॥ सर डेविड अक्टरलोनी ने लड़ाई की तयारी की। लेकिन सर्कार ने उसकी यह तजवीज़ पसंद और मंज़ूर न की ॥ सर डेविड अक्टरलोनी ने उसी दम इस्तीफ़ा भेजा। और मेरठ के मुक़ाम में मरगया ॥ भरतपुरवालों का गुमान है कि उसने ज़हर खाया। उसके उहदेपरसरचार्लस मेटकाफ़ मुक़र्रर हुआ ॥ इस अर्से में दुर्जनसाल का भाई माधोसिंह उस से बिगड़ गया। और डीग में जाकर सिपाह भरतीकरने लगा सर्कार ने देखा कि पिंडारों की तरह यह लोग फिर लूट मार का बाज़ार गर्म करेंगे और होते होते सर्कारी अमल्दारी में फ़साद उठावेंगे दुर्जनसालकोबहुत समझाया। जब उसने कुछ न माना लार्डकम्बरमिअर कमांडरइन्चीफ़को बीस हज़ार फ़ौज देकर दुर्जनसाल के निकालने के लिये भेजा ॥ दसवीं दिसम्बर को सर्कारीलश्कर भरतपुरके साम्हने पहुंचा। और अठारहवीं जनवरी को सुरंगें उड़ा कर क़िला तोड़ा ॥ दुर्जनसाल * पकड़ा गया बलवन्तसिंह को सर्कार ने नये सिर से गद्दी पर बिठाया ॥

इन्हीं दिनों में यानी सन् १८२४ में सर्कारनेडच लोगों को सुमित्रा के टापू में बनकुलन देकरउनसे मलाका और सिंहपुर का टापू ले लिया ॥ और यही स्ट्रेट सेट्लमेन्ट कहलाया ॥

लार्ड बेंटिंक

१८२८ ई० *लार्ड अम्हर्स्ट के जाने पर वही लार्ड बेंटिंक जोसाबिक़ में मंदराज का गवर्नर था। वसीले के ज़ोर से गवर्नर जेनरल मुक़र्ररहो आया ॥ इसके वक़्त में लड़ाई भिड़ाई कोई नहीं हुई। बड़ी भारी बात यह हुई कि सती होने की बड़ी बुरी रसम यक क़लम मौक़ूफ़ की गयी ॥

* बनारस भेजा गया और उसी जगह मरा ॥

कुर्ग का राजा * अपने जुल्म के बाइस लखनसे बनारस क़ैद हो आया। और उस का इलाक़ा रय्यत की ख़ाहिश मुताबिक़ सर्कारी अमल्दारी में शामिल हो गया॥

लार्ड बेंटिंक ने सर्कारी ख़र्च की बहुत तख़फ़ीफ़ की। और हिन्दुस्तानियों को सर्कारी बड़े उहदोंके मिलनेकीनेवडाली॥

सन् १८३३ में कम्पनी को २० बरसकेलियेफिर सनदमिली। हिन्दुस्तान की तिजारत तो पहलेही इस के हाथसे निकल गयी थी अब इस सनद को रूसे चीन की भी बाक़ी न रही॥ १८३३ ई०

लार्ड अकलैंड

अगस्त सन् १८३५ में लार्ड बेंटिंकने कामछोड़ा। मार्चसन् १८३६ तक यानी लार्ड अकलैंड के पहुंचने तक सर चार्लस-मेंटकाफ़ ने गवर्नर जेनरल का काम किया॥ १८३५ ई०

लखनऊकाबादशाह नसीरुद्दीनहैदर † मर गया। पहलेतो इस ने दो लड़कों को अपना माना था लेकिन फिर इन्कार किया इसी सबब कर्नेल लो रज़ीडंटने उसके मरने पर उसके चचा नसीरुद्दौलाको जो सआदतअलीख़ां का तीसरा बेटाथा और मुसल्मानोंकी शरा मुताबिक़ वारिसहो सकताथा मस्नद पर बिठाना चाहा॥ बिल्कुल तयारी होचुकीथी। सिर्फ़मस्नद पर बैठने की देरथी॥ कि यकायक बादशाहबेगम यानी ग़ाज़ियुद्दीनहैदर की बेगम ने कुछ सिपाही म्हल में घुसाकर नसीरुद्दौला और रज़ीडंट दोनोंको घेर लिया। औरआप आकर उन दोनों लड़कों में से एक को जिस का नाममुन्नाजान था मस्नद पर बिठा दिया रज़ीडंटने बेगमको बहुतेरासमझाया कि यह क्या पागलपना है लेकिन जब देखा कि उसकीअक्ल बिल्कुल जाती रही है किसी ढब महल से बाहर निकल आया। और कुछ सर्कारी फ़ौज लेजाकरबेगम और उसकेपोते को तो पकड़कर क़ैद रहने को चनार के क़िले में भेजदिया १८३७ ई०

---

*इसने पीछे विलायत जाकर अपनी लड़की को अंगरेज़ी पढ़ाया और उस लड़की ने वहां एक अंगरेज़ से शादी की॥

† ग़ाज़ियुद्दीनहैदर का बेटा था॥

और नसीरुद्दौला को मुहम्मदअली शाहके नामसे मसनद पर बिठाया॥ इस में बेगम के तीस चालीसआदमीमारेगये। और घायल हुए॥ इक़बालुद्दौला नसीरुद्दौला के बड़े भाईका बेटा था। लेकिन उस ने बेगम की तरह बेवक़ूफ़ी न करके दूसरी तरह की बेवक़ूफ़ी की कोर्ट आफ़ डेरेक्टर्स के साम्हने अपना दावा पेश करने को खुद विलायत गया॥ और जब वहां से साफ़ जवाब पाया। बग़दाद में रहना इख़तियार कर लिया इस का बड़ा भाई यमीनुद्दौला बनारस में रह गया॥

इसी के थोड़े दिन बाद सितारे के राजा की भी कुछ अक़्ल मारी गई। यह न समझा कि उस ने यह अपने पुरखाओं की गद्दी सिर्फ़ सर्कार की मिहर्बानीसे पाया॥ आख़िर मरहठा था गांव में पुर्टगीज़ों से जोड़ तोड़ लगाने लगा कि उन की फ़ौज अंगरेज़ों को निकालकर इसे मुल्क का मालिक करे। और यह उन्हें धन और धरती दे॥ नागपुरवाले आपा-साहिब से भी चिट्ठी पत्री जारीकी। सर्कारी फ़ौजके सिपा-हियों के बहकाने की कोशिश होने लगी॥ सर्कार ने बहुत समझाया। आख़िर जब किसी तरह अपनी हर्कतोंसे बाज़ न आया क़ैद करके बनारस भेज दिया और उस के भाई को (सन् १८३८ ई०) गद्दी पर बिठाया॥

इस अर्से में अहमद शाह दुर्रानीके पोते शाहशुजाउलमुल्क को जो अफ़ग़ानिस्तान का बादशाह था। उसके भाई महमूद ने वहांसे निकाल दियाथा॥ शाहशुजा तो कुछदिन रंजीतसिंह की क़ैदमें रहकर और कोहनूर हीरा*खोकर पनाह के लिये

---

* कोहनूर हीरा शाहजहांने अपने तख़्त ताऊसमें लगाया तख़्त ताऊस दिल्ली से नादिरशाह लेगया नादिरशाहसे यह हीरा अहमदशाह के हाथ लगा उसके पोते शाहशुजासे रंजीत सिंह ने बहुत बुरी तरह से लिया वह बेचारा इस के पास मदद और पनाह मांगने आया था इस ने कोहनूर के लालच में पड़कर उस पर पहरे बैठा दिये और जबतक उसनेकोह-नूर न हवाले किया खाना पीना बंद कर दिया॥

अंगरेज़ी अमल्दारी में चला आया। और महमूद को इस लिये कि उस ने अपने वज़ीर फ़तहख़ां बारकज़ई को जिसकी मदद से तख़्त पाया अंधा करके मार डाला था फ़तहख़ां के बेटे दोस्त-मुहम्मदख़ां ने तख़्त से उतारकर काबुल पर अपना क़ब्ज़ा कर लिया॥ क़ंदहार दोस्तमुहम्मद के भाइयों के दख़ल में रहा। महमूद हिरात को चला गया और उस के बाद उस का बेटा कामरां वहां का बादशाह हुआ॥ कोंटसिमोनिच ने जो ईरान में रूस का एल्ची था। यह मौक़ा अपने मालिक का इस तरफ़ इख़्तियार बढ़ाने का बहुत ग़नीमत समझा॥ ईरान के बादशाह को उभारा कि अफ़ग़ानिस्तान पर दावा करे और उस का लश्कर हिरात के मुहासरे को भिजवाया। बल्कि फ़ौज ख़र्च के लिये कुछ रुपया भी अपने यहां से दिलाया॥ अगर्चे ईरान का लश्कर हिरात से हारकर लौट गया और जब इंगलिस्तान ने रूस से जवाब तलब किया। रूस के शाहंशाह ने असली बात छुपाकर कोंटसिमोनिच के बिल्कुल कामों से इन्कार कर दिया॥ लेकिन सर्कार कम्पनी को बख़ूबी साबित हो गया कि रूस का हिन्दुस्तान पर दांत है जब क़ाबू पावेगा। इधर पैर फैलावेगा॥ और अलकज़ंडर बर्निस साहिब ने भी जो सन् १८३७ में एल्ची होकर काबुल गये थे यही बयान किया कि दोस्तमुहम्मद बिल्कुल रूसवालों की सलाह में है और रूसवालों ने उस से पक्का वादा किया है कि हम पिशावर रंजीतसिंह से वापस ले देंगे। सर्कार ने ज़रा भी इस बात पर ग़ौर न किया कि भला रूसवाले इधर क्योंकर आसकेंगे॥ अगर कहें कि क्या वह ईरान तूरान तातार और अफ़ग़ानिस्तानवालों को बहकाकर और लालच दिखलाकर उन्हें हिन्दुस्तान पर नहीं चढ़ा सकते हैं तो टुक सोचना चाहिये कि अब वह महमूद ग़ज़नवी और चंगेज़ख़ां का ज़माना नहीं है कि जब नंगे पांव और नंगे सिर गक्खर* लोग महमूद के रिसालों को काटते थे। और

* अनन्दपाल की लड़ाई में गक्खरों ने महमूद ग़ज़नवी का लश्कर लूटा था॥

एक हाथी के भाग जाने से अनन्दपाल सरीखे राजा लड़ाई हार जाते थे॥ जब जंगल से सेंटे काट काटकर बैलों पर सवार जलालुद्दीन ख़ारज़्मवाले के आदमी सिंध सागर दुआब में चंगेज़ख़ां की फ़ौज से लड़ते थे। और बड़े बड़े बादशाह बिल्कुल मदार लड़ाई का अपना तीरंदाज़ों पर रखते थे॥ बराबर देखते चले आते हो कि कैसी कैसी दलबादल सेना शाह सुल्तान नव्वाब मरहठे नयपाली और बर्म्हांवालों की सर्कारी ज़रा ज़रा सी फ़ौज के साम्हने पीठ दिखा गयी। बात तो यह है कि डूप्ले और बस्सी सरीखे फ़रासीसियों की सिखलाई सिपाह भी अंगरेज़ी तोपख़ाने के साम्हने रूई के फाहों की तरह उड़ गयी॥ अगर कहें कि रूसवाले क्या अपनी फ़ौजें पंजाब तक नहीं ला सकते हैं तो टुक सोचना चाहिये कि रूस और पंजाब के दर्मियान कैसे कैसे जंगल उजाड़ और पहाड़ पड़े हैं पहले तो रूस में इतना रुपया नहीं कि पचास हज़ार भी अच्छी क़वायदवाली फ़ौज ज़रूरी तोपख़ाने के साथ इस राह लाने का ख़र्च देसके दूसरे जितने दिन उस फ़ौज को एक हिन्दूकुश पहाड़ के घाटे पार होने में लगेंगे हमारी सर्कार उस से दूनी फ़ौज धूंए के जहाज़ और रेलगाड़ियों पर इंगलिस्तान से सिंधु कनारे पहुंचा सकती है और फिर रूसवाले तो वहां रस्ते की सख़्ती से थके थकाये और अफ़ग़ानिस्तान में रसद की कमी और वहां की आबहवा नयी होने के सबब भूखे मांदे पहुंचेंगे। और अंगरेज़ सर्हद पर गोया अपने घर में होंगे पंजाब की ज़र्खेज़ी मशहूर है कैसी कुछ रसद पहुंचेगी। इसमें किसी तरह का शक नहीं कि उन पचास हज़ार रूसियों के तबाह करने को सर्कारी एक पल्टन गोरों की ख़ैबर के मुहाने पर काफ़ी होगी॥ निदान सर्कार ने ज़रा भी इस बात पर ग़ौर न किया और काबुल में फ़ौज लेजाकर शाहशुजा
१८३८ ई० को तख़्त पर बैठाने का मंसूबा बांधा रंजीतसिंह को भी उस में शामिल कर लिया और आपसमें अह्द पैमान होगया कि पिशावर वग़ैर: जो कुछ इलाक़े सिंधु उस पार ख़ाह इस पार रंजीतसिंह ने दबा लिये थे शाहशुजा या उस का कोई जानशीन कभी उन

पर कुछ दावा न करे। सिंध के अमीरों से भी क़ौलक़रार हो गया कि उस राह सर्कारी फ़ौज के जाने आने में कुछ रोक टोक न होवे॥ निदान ७५०० सर्कारी फ़ौज बंगाले और बम्बई की ११० तोपों के साथ सर जान कीन साहिब बम्बई के कमांडरइनचीफ़ के तहत में सिंध और बलूचिस्तान की राह सिंधु-नदी और बोलानघाटा पार होकर क़न्दहार में पहुंची। और १८३९ ई० आठवीं मई को शाहशुजा वहां तख़्त पर बैठा बड़ी धूम धाम से उसकी सलामी हुई॥ सरविलियम् मेकनाटन साहिब सर्कार की तरफ़ से एलची के तौर पर शाह के साथ थे। अलक्ज़ंडर बर्निस साहिब भी हमराह थे॥ इनको उमेद थी कि अफ़ग़ानिस्तान में दाख़िल होते ही रअय्यत शाह की तरफ़ रुजू हो जायगी। लेकिन वह बात बिल्कुल ज़ुहूरमें नहीं आयी॥ यहां तक कि शाह ने जब वहां के दस्तूर बमूजिब दस हज़ार रुपया नालबन्दी को और क़ुरान क़सम खाने को ग़िलज़ई सर्दारों के पास भेजा। उन्होंने रुपया तो ले लिया और क़ुरान वैसे का वैसा वापस किया॥ तेईसवीं जुलाई को बारूत से फाटक उड़ाकर सर्कारी फ़ौजने गढ़ ग़ज़नीलिया। और सातवीं अगस्तको फ़तह का निशान उड़ाती काबुलमें दाख़िल हुई दोस्तमुहम्मद तुर्किस्तान की तरफ़ भाग गया॥ शुजाके बटे शाहज़ादा तैमूरके साथ जो पांच हज़ार सिपाही पिशावर से काबुल को रवाना हुए थे और जिनकी मदद के लिये रणजीतसिंह ने छ हज़ार सिक्ख जेनरल वंतूराके तहत में तैनात किये थे। वह भी ख़ैबर घाटेकी राह अलीमस्जिद में लड़ते और जलालाबादका क़िला लेते तीसरी सितम्बर को काबुल में आन पहुंचे॥ जब सर्कार ने देखा कि शुजा काबुल में अपने बाप दादा के तख़्त पर बैठ गया। उस तख़्त की सुस्त बुनयादी पर मुतलक़ लिहाज़ न करके कुछ थोड़ी सी बंगाले की फ़ौज वहां इन्तिज़ाम के लिये छोड़ दी और बाक़ी सब को हिन्दुस्तान में वापस तलब कर लिया॥ क़न्दहार जाते वक़्त बलूचिस्तान के हाकिम मिहराबख़ां ने कुछ छेड़छाड़ की थी इसी लिये बम्बईकी फ़ौज ने लौटते वक़्त उस

का क़िला क़िलात तोड़ डाला। और वह भी उस लड़ाई में बहादुरी के साथ मारा गया॥ लार्ड अकलेंड को काबुल फ़तह होने की ख़ुशी में विलायत से अर्ल का ख़िताब आया। सर जान कीन बेरन हुआ औरभी बहुतोंका उनकी ख़िद्मत मुता-
१८४० ई० बिक़ दर्जा बढ़ा॥ चौथी नवम्बर को जब सर विलियम् मेकनाटन साहिब हवा खाकर अपनी कोठी को आते थे रास्ते में एक सवार ने ख़बर दी कि दोस्तमुहम्मद हाज़िर है और फिर दोस्तमुहम्मद ने बढ़कर और घोड़े से उतरकर तलवार नज़र दी। मेकनाटन साहिब ने उसकी बड़ी ख़ातिर्दारी की॥ नज़रबन्द रहने के लिये हिन्दुस्तान में भेज दिया इस अर्से में छोटे छोटे लड़ाई झगड़े बखेड़े हर तरफ़ होते रहे। लेकिन वह किसी गिनती में न थे॥ कभी कोई सर्दार मालगुज़ारी अदा करने में देर करता सर्कारी सिपाही उसका गढ़ क़िला तोड़ फोड़कर उसे होश में लादेते। कभी कोई दोस्तमुहम्मद के बेटे अकबरख़ां की मदद के लिये सिर उठाना चाहता वहां फ़ौज फ़ौरन पहुंच कर उसे उसी जगह दबा देते॥ यहां तक कि सर विलियम् मेकनाटन साहिब ने समझा कि अब मुल्क का इन्तिज़ाम बख़ूबी होगया और क़स्द किया कि अलक्ज़ेंडर बार्नेस
१८४१ ई० को अपने उहदे पर मुक़र्रर करके आप गवर्नरी के उहदे पर जो सर्कार से मिलाथा बम्बई चले आवें। और जो कुछ सर्कारी फ़ौज काबुल में रह गयी थी उसे भी हिन्दुस्तानकी तरफ़ रवाना कर दें॥ यह न सोचे कि अफ़ग़ानिस्तान मुसल्मानोंका मुल्क है। हिन्दू और मुसल्मान में ज़मीन और आसमान का फ़र्क़ है॥ वहांवाले ख़ूब समझे हुए थे कि शाहशुजा अंगरेज़ों का कठपुतली है और तमाशा यह कि अंगरेज़ों की बदौलत उसे अपने बाप दादा का तख़्त नसीब हुआ तौ भी वह इन से नाराज़ था। अपने मुल्क में इन का रहना हर्गिज़ पसंद नहीं करता था॥ उधर ईश्वर को भी मंज़ूर था कि चाहे जैसा कोई बड़ा ताक़त वाला अक़्लमन्द क्यों न हो एक दिन ठोकर खाजावे बल्कि यह उस को बड़ी मिहर्बानी है क्योंकि ऐसी ही ठोकरें

आने से आदमी अपनी अक़्ल और अपनी ताक़त का भरोसा न रखकर सदा परमेश्वर का सहारा ढूंढ़ता है और उसके डर से ज़ुल्म और ग़ैरवाजिब काम न करके पूरी तरक़्क़ी को पहुंचता है। जो ठोकर न खाय घमंड में डूबकर फ़िरऔन * की तरह यकबारगी नाश हो जाता है॥ निदान अब आगे अंगरेज़ी अफ़सरों के जो जो काम काबुल में सुनोगे बस यही कहोगे "विनाशकाले बिपरीत बुद्धिः" निदान वहां बलवा होने की असल यों बयान करते हैं कि किसी अफ़ग़ान सर्दार ने किसी अंगरेज़ी उहदेदार की कुछ शिकायत † उसके अफ़सर से की। अफ़सर ने कुछ भी नहीं सुनी॥ सख़्त सुस्त कहके निकलवा दिया और यह बात कुछ उसी के वास्ते या नयी नथी। उस अफ़ग़ान ने इसबात की शिकायत शुजा से की॥ शुजा के मुंहसे उस वक़्त दर्बारमें बेइख़्तियार यह निकलगया कि "अज़शुमाहेच नमेआयद" यानी तुमलोगों से कुछ भी नहीं बन पड़ता है बस इतना कहनागोया अफ़ग़ानों के बिगड़े हुए दिलों को भरी हुई तोप पर रंजक में फ़लीता पहुंचनाथा सबेरे ही दूसरी नवम्बर को काबुलवालों ने बलवा किया। दूकानें सब बंद हो गयीं दो तीन सौ बदमआशों ने बर्निस साहिब की कोठी में जाकर उन्हें और तमाम साहिब लोग मेम लड़के और हिन्दुस्तानी नौकरों को जो वहां उस वक़्त मौजूद थे मार डाला और तमाम माल असबाब लूटकर मकानों को फूंक दिया॥ बर्निस साहिब शहर में रहतेथे जब उनके मारे जाने की ख़बर छावनी में पहुंची इस बातकेबदले कि तुर्त सब जवान कमर कसकर शहर में चले आते और बलवाइयों को जैसा उन्हों ने किया था उसका मज़ा चखाते। उनके अफ़सर नाहक़ सिपाहियों को इधर उधर भेजने बुलाने

---

* मिसर का बादशाह था मूसा के ज़माने में ख़ुदाई का दावा किया था आख़िर दर्या में डुबाया गया॥

† यह शिकायत शायद किसी लौंडीके निकाल लेजाने के बाबमें थी॥

और बेफ़ाइदा जोड़ तोड़ जमाने में अपना क़ीमती वक़्त खोने लगे ॥ अगर बालाहिसार में भी चले जाते जहां शाहशुजा रहता था और शहर से लगा हुआ था। मक़दूर न था कि कभी कोई उन को उस क़िले से निकाल सकता ॥ लेकिन जेनरल एल्फ़िंस्टन के दिमाग़में ख़लल आगया था। और ब्रिगेडियर शिलटन जो उस कामदद्गार मुक़र्रर हुआथा हिन्दुस्तान लौटने की आर्ज़ू में जी देताथा ॥ दोनोंने सर विलियम मेकनाटन से यही कहा कि अब काबुल में रहना नामुम्किन जिस तरह बने जलालाबाद पहुंचने का बन्दोबस्त करो। और वहां से हिन्दुस्तान को चल दो ॥ बलवाइयों का ज़ोर इस अर्से में बहुत बढ़ा सारा काबुल पहाड़ी अफ़्ग़ानों से भर गया । शहर के बाहर भी जिधर देखो यही दिखलाई देते थे गोया सारे मुलक में बलवा हुआ बाईसवीं नवम्बर को अक्बरख़ां भी काबुल में आकर उन के शामिल हो गया ॥ निदान जब सर विलियम मेकनाटन ने देखा कि सर्कारी फ़ौज का हर तरफ़ नुक़्सान होता जाता है और उसके अफ़्सर सिवाय हिन्दुस्तान लौट चलने के और किसी बात पर मुस्तइद नहींहोते अकबरख़ां से काबुल छोड़ने की बातचीत शुरूकी और यह ठहरी कि दोनोंकी मुलाक़ात हो उस में सारी शर्तें ते पाजायें लोगोंने मेकनाटन साहिब से कहाकि अकबरख़ां का इतबार करना अक़्लमन्दी नहींहै। उन्हों ने इतनाही जवाब दिया कि हम ख़ूब जानतेहैं लेकिन ऐसी ज़िंदगीसे सौ दफ़ा मरना बिहतरहै ॥ निदान तेईसवींदिसम्बर को क़रीब दोपहर के सर विलियम मेकनाटन साहिब कप्तान लारंस* ट्रेवर और मिकंज़ी को साथ लेकर छावनीसे अक़्बरख़ां की मुलाक़ातको बाहर निकले अकबरख़ां इस्तिक़बालकरके उन्हें अपने डेरेपर लेगया। लेकिन वहां इन चारोंसे पिस्तौल और तलवारें छिनवाकर तीनको तो अपने सवारोंके पीछे बिठला किसी क़िले में भिजवा दिया। कप्तान ट्रेवर घोड़ेसे गिर जाने

* यही सर हेनरी लारंस सन् १८५७ के बलवे में अवध के चीफ़ कमिश्नर थे ॥

के बाइस रास्ते में मारा गया) और सर बिलियम मैकनाटन पर जब उन्हों ने अकबरख़ां के क़ाबूसे निकलना चाहा उसने तपंचा चलाया और फिर उस के साथियोंने इन्हें टुकड़े टुकड़े कर डाला ॥ फ़ौजवालोंकी इसपरभी आंख न खुली । फिर अकबरख़ां से सुलह की बात चीत की ॥ उस दग़ाबाज़ने यह शर्त ठहराई कि सर्कारी फ़ौज तमाम ख़ज़ाना और तोपख़ाना उसी जगह छोड़दे । सिर्फ़ छ: तोपों के साथ हिंदुस्तान की राह ले ॥ बर्फ़ पांच इंचसे ज़ियादा पड़गयी थी । सर्कारी फ़ौज साढ़ेचार हज़ार सवार सिपाही और बारह हज़ार बहीर लड़के लुगाइयों की गिनती नहीं छठी जनवरी को पहर दिन चढ़े बृहस्पतके दिन छावनी छोड़कर जलालाबाद रवाना हुई ॥ बीमारों को अकबरख़ां के सपुर्द किया । सातवीं को काबुलसे पांचकोस पर बुतख़ाक में डेरा पड़ा अफ़ग़ानों ने हर तरफ़ से हमला करना शुरूकरदिया ॥ सर्कारीफ़ौजको अपनी तोपें आपही कीलनी पड़ीं अकबरख़ां साथ था । बेईमान हिफ़ाज़तकेलिये आयाथा ॥ जब उस से कहा कि यह क्याहै । जवाब दियाकि बेक़ाबू हूं यह लोग मेरा कहना नहीं मानते फ़ारसीमें सर्कारी आदमियों को सुनाकर उन्हें धमकाता था कि ख़बरदार सर्कारी फ़ौज को हर्गिज़ न छेड़ो पस्तो * में उन्हें शह देताथा कि हां एक को भी इन में से जीता न छोड़ो मुआमला दीन का है ॥ आठवीं को ख़ुर्दकाबुल का घाटा पार होना था यह पांच मील लम्बा है । दोनों तरफ़ अक्सर पांच पांच सौ फ़ुट तक सीधे ऊंचे पहाड़ खड़े हैं तफ़ावत दोनों किनारों में ५० गज़ से ज़ियादा नहीं है॥ नदी जो उसमें ज़ोर शोर से बहतीहै । अट्ठाईसबार उतरनी पड़ती है ॥ ग़िलज़ई अफ़ग़ान उन पहाड़ों के ऊपर से गोलियों का मेहबरसातेथे । सर्कारी फ़ौज के हथियार निरे बेकाम थे ॥ ये जमीन पर । औरवे आसमानपर ॥ कहतेहैंकिउस रोज़ तीन हज़ार से ज़ियादा आदमी इस घाटे में मारे गये नवीं को नाहक ख़ुर्दकाबुल में मुक़ाम रहा अकबरख़ांने कहला

* अफ़ग़ानों कीज़ुबान ॥

भेजा कि मैम साहिब और बाबा लोगोंको तकलीफ़ में नहीं देख सकता हूं अगर इनको मेरे हवाले करदो मैं बहुतआराम और हिफ़ाज़तसे पहुंचवा दूंगा। फ़ौजके अफ़सर तो उसकेबस में हो गयेथे अपनी मेम और बच्चों को भी उस के हवाले कर दिया॥ दसवीं को तंगतारीक घाटे में जो शायद दस फ़ुट भी चौड़ानहीं है। नामही उसका तंगऔरतारीकहै॥ इतनेआदमी मारेगये। कि अब कुलदोसौ सत्तर सवारसिपाही और गोलंदाज़ और चार हज़ार बहीर के आदमी बाक़ी रह गये॥ सो यह बारहवीं और तेरहवीं को जगदलक और गंदमक के घाटों में तमाम हुए। क़िस्सा कोताह साढ़े सोलह हज़ार आदमियोंमें जो काबुल से चले थे सिर्फ़ एक डाकतर ब्रेडन साहिब जीते जागते जलालाबाद पहुंचे गोया इस तबाहीकी ख़बर पहुंचाने के लिये बच रहे॥ जलालाबाद में औरही क़िस्म का अफ़सर था। वहअसली सिपाही सरराबर्टसेल बहादुरथा॥ रुपया रसद गोला बारूत सिपाह जो कुछ लड़ाई का सामान है सब कम था। मगर दिल का वह बहुत दिलेरथा॥ काबुलवाले अफ़सरों का हुकम जो क़िला ख़ाली कर देने का पहुंचा था कुछ भी ख़याल में न लाया। और अकबरख़ां से मुक़ाबला करने का मंसूबाठाना॥ भूंचालसे क़िलेकी दीवार भी गिरगयी। तो उसने देखतेही देखते फिर बनाली॥ रसदघटगयी। तो घोड़ोंकेगोश्त से लोगों की भूख बुझायी॥ पर क़िला न छोड़ा। अकबरख़ांनेछ हज़ार फ़ौज लेकर इस क़िले पर हल्लाकिया पर सरराबर्टसेल बराबर उसका दांत खट्टा करता रहा॥ उधर क़ंदहार को जेनरल नाट दबायेरहा। बहुतेरे बलवाई उसके गिर्दजमाहुए वह सबको फटकारता रहा॥ ग़ज़नीमें कर्नल पामरथा। अगर वह शहर में किसीको रहने न देता कुछ न होता॥ लेकिन वह शहरवालों पर रहमकरगया। बर्फ़ के मौसिममें उन्हें बाहर निकालना इन्साफ़ न समझा॥ और यही उसकेहक़में ज़हर हुआ। शहर वालोंने शहरपनाह तोड़कर बलवाइयों को भीतर घुसा लिया कर्नल पामर क़िले में बंद हुआ॥ क़िले में

रसद की तंगी थी ईंधन भी मौजूद न था। बर्फ़ दो दो फ़ुट पड़ गयी थी नाचार कर्नल पामर ने वहां के तमाम सर्दारों से इस बात की क़सम लेकर कि जब तक बर्फ़ से राह बंद है सर्कारी सिपाह शहर में रहे और राह खुलनेपर सर्दारलोगउसे हिफ़ाज़त से पिशावर तक पहुंचा दें क़िला ख़ालीकर दिया॥ लेकिन जब बलवाई दूसरे ही दिन इन पर हमला करनेलगे। सिपाहियों ने घबराकर रात के वक़्त शहरपनाह में छेद किया और सब के सब बाहर निकल पड़े॥ उन्हें यह ख़यालथा कि पिशावर पच्चीसही तीस कोसहै धावा मारकरचले जायेंगे लेकिन बर्फ़ में क़दम कब उठसकता था। सुबह होतेही सबकेसबमारे और पकड़े गये अंगरेज़ों ने अपने तईं फिर नयी क़सम लेकर सर्दारों के हवाले कर दिया॥

लार्डएलनबरा

इस अर्सेमेंलार्ड अकलैंड विलायत चला गया। और लार्ड एलनबरा आख़िर फ़ेब्रुअरी में उसकी जगह गवर्नर जेनरल मुक़र्रर होकर आया॥ लार्ड अकलैंड ने जानेसे पहले जलालाबादवालों की कुमक के लिये पिशावर में फ़ौज जमा होने का हुक्म जारी कर दिया था। लेकिन अब एक दफ़ा फिरकाबुल तक जाना और अफ़ग़ानों को सर्कारी फ़ौज का ज़ोर दिखला देना बहुत मुनासिब समझा गया॥ यहफ़ौज अप्रैलमें जेनरल पालक के साथ पिशावर से काबुल की तरफ़ रवाना हुई पालक साहिब घाटों में पहले ही से कुछ कम्पनियां पल्टनों की दुतरफ़ा पहाड़ोंपर चढ़ादेते थे। इस बाइसअफ़ग़ानऊपरसे गोलियां नहीं चला सकते थे अगर चलाने को जमा भी होते सर्कारी सिपाही उनकी ख़ूब ख़बरलेते थे॥ सोलहवीं अप्रैलको जलालाबाद में दाख़िल हुए। क़िलेवालों के गोया सूखेहुएखेत फिर लहलहाये॥ अगस्त तकफ़ौज उसीजगहठहरीरही।अगस्त में फिर आगे बढ़ी॥ रास्ते में अकबरख़ां ने सोलह हज़ारअफ़ग़ानों के साथ सर्कारी फ़ौज का मुक़ाबला किया लेकिन कुछ पेश न गयी भागना पड़ा। पंदरहवीं सितम्बर को सर्कारीफ़ौज

१८४२ई०

काबुल में दाखिल हुई और सोलहवींको बालाहिसारपरसर्कारी निशान चढ़ाया ॥ शाहशुजा को नव्वाब ज़मांखां के बड़ेबेटेने मार्च ही महीने में मार डाला था शुजा बालाहिसार से निकलकर उस के साथ अपने लश्कर की तरफ़ जाता था उस ने रास्ते में उसपर दुनाली बंदूक़ चला दी। पसअबसर्कारी फ़ौज को सिर्फ़ अपने क़ैदियों की रिहाई बाक़ी रह गयी ॥ सिवाय इस के और कुछ भी अफ़ग़ानिस्तान में काम न था उधरसिंध से कुछ फ़ौज लेकर जेनरल इंगलैंड जेनरल नाट की कुमककी क़न्दहार पहुंच गया था लेकिन जेनरल नाटने बहुतसेआदमी जेनरल इंगलैंड के साथ सिंध को लौटा दिये सिर्फ़ थोड़ेसे चुने हुए सिपाही लेकर जेनरल पालक से शामिल होने को काबुल की तरफ़कूच किया। वहयही कहताथा कि एकहज़ारसर्कारी सिपाही पांच हज़ार अफ़ग़ानों के भगाने को बहुत काफ़ी हैं निदान जेनरल नाट भी लड़ता भिड़ता अफ़ग़ानों को हरतरफ़ मारता भगाता रास्ते में ग़ज़नी का क़िला तोड़ता फोड़तामहमूद गज़नवी के मक़बरे से सोमनाथ के संदली किवाड़ लेता सत्तरवीं सितम्बर को काबुल में आ दाखिल हुआ ॥ अकबरखां ने तमाम अंगरेज़ मेम और बाबा लोगों को जो उसके क़ाबू मेंथे एक अफ़ग़ान सालिहमुहम्मदखांके साथ बामियान्कीतरफ़ भेज दिया था उस का इरादा था कि इन्हें तुहफ़ा के तौरपर ग़ुलामी के लिये तूरानी सर्दारों को बांट दे। लेकिन सालिहमुहम्मद इन से मिल गया बीस हज़ार नक़द और हज़ाररुपये माहवारी पिंशन के वादेपर सही सालिम सर्कारी फ़ौजमेंपहुंचा दिया जेनरल एलफ़िंस्टन मर गया था तो भी सिवाय साहिब लोगों के लेडी मेकनाटन और लेडी सेल समेत तेरह मेम और उन्नीस लड़के इन क़ैदियोंमें थे॥ निदान इन क़ैदियोंको लेकर सर्कारी फ़ौज फ़तह फ़ीरोज़ी के निशान उड़ाती फ़ीरोज़पुरचली आयी गवर्नर जेनरल ने दोस्तमुहम्मदकोभी छोड़दिया। सर्कार का इस लड़ाई में कम से कम सत्तरह करोड़ रुपया ख़र्च पड़ा ॥

सिन्ध के अमीरों से सन् १८३२ में सर्कार का यह अहद पैमान होगया था कि सिन्ध नदीकी राह बेशकसर्कारीआदमी आवें जावें। लेकिन न कोई जंगी जहाज़ उसमें लावें और न लड़ाई का सामान इधर से कहीं को ले जावें॥ सन् १८३८ में यह भी ठहर गया कि एक सर्कारी रज़ीडंट वहां रहा करे। लेकिन जब सर्कार को मालूम हुआ कि ये अमीर ईरान के बादशाह से ख़त किताबत करते हैं लार्ड अकलैंडने सर्कारी फ़ौज काबुल जाने के वक़्त उनसे एक अहदनामा इस मज़मून का लिखवा लिया कि कुछ किसी क़दर सर्कारी फ़ौज उन के इलाक़े में रहा करे और उसका ख़र्च उन्हींके ज़िम्मेरहे॥ अमीर इस पर भी अपनी हर्कत से बाज़ न आये। काबुलकीलड़ाइयों में सर्कार के दुश्मनों से साज़िस करने लगे॥ औरसर्कारकोयह भी ख़बर पहुंची कि सिन्धु नदी पर अहदनामे के ख़िलाफ़ महसूल लगाते हैं निदान सन् १८४२ में लार्ड एलनबराने उन से इस मज़मून का अहदनामा तलब किया कि फ़ौज ख़र्च के बदल वह कुछ मुल्क सर्कार को नज़र करें सिक्का सर्कार का जारी करें। और जो धूएं की नाव सिन्धु नदी में चलें उन के लिये जलाने को लकड़ी दें न दें तो नाववालेजहां जोपेड़ पावें काट लें॥ अमीरों ने इस अहदनामे पर भीमुहर करदीलेकिन उन के बलूची सर्दार इस बात से बहुत नाख़ुशहुए मेजरऊटरम वहां रज़ीडंट था। और सर चार्लस नेपिअर वहांके इन्तिज़ाम के लिये कुछ फ़ौज लेकर सिन्ध की राजधानी हैदराबाद के पास पहुंच चुका था॥ अमीरों ने मेजर ऊटरम से साफ़ कह दिया कि सर चार्लस नेपिअर अगर हैदराबाद की तरफ़बढ़ेगा बलूची बलवा करेंगे सर चार्लस नेपिअर कब रुकनेवाला था। पन्दरहवीं फ़िब्रुअरीको बलूचियोंने बलवाकिया और रज़ीडंटी को जा घेरा॥ रज़ीडंट तो अपने आदमियों समेत नदीमें धूएं की नाव पर चला गया। लेकिनअसबाबकाबहुतनुक़सानहुआ॥ जब सर चार्लस नेपिअर हैदराबाद सेतीनकोस पर मियानीमें पहुंचा देखा कि अमीरों की फ़ौज बीस हज़ारसे जियादाबहुत १८४३ ई०

मज़बूती के साथ पड़ी है इस की सिपाह तीन हज़ार से भी कम थी लेकिन शेर क्या गीदड़ों की गिनती से हिचकता है फ़ौरन हमला कर दिया सख़्त लड़ाई हुई। अमीरों की फ़ौज ने शिकस्त खायी॥ पांच हजार खेतरहे बाक़ीभागगये।सर्कारी कुल बासठ आदमी काम आये॥ लड़ाई के बाद छ अमीरों ने अपने तईं सर चार्लस नेपिअर के हवाले कर दिया। औरवह फ़तह फ़ीरोज़ी के साथ हैदराबादमें दाख़िलहुआ॥ दूसरेमहीने में सर चार्लस नेपिअर ने इसी तरह डब्बा की लड़ाई में मीरपुर के अमीर को शिकस्त देकर मीरपुर में दख़ल किया। और कुछ सवार सिपाही भेजकर अमरकोट का मज़बूतक़िला ले लिया॥ जो कोई अमीरों में से इधर उधर बचरहाथा धीरे धीरे हर एक सर्कारकी क़ैदमें चलाआया। और सिन्धबिल्कुल सर्कारी अमल्दारी में शामिल होगया॥

इसी साल के अंदर ग्वालियर में दौलतराव संधिया का जानशीन भुनकूजीराव संधिया बे औलाद मरगया।उसकीरानी ताराबाई ने जो ख़ुद तेरह बरस की थी एक अपनारिश्तेदार लड़का आठ बरस का जयाजीराव गोद लेकर उसे गद्दी पर बिठा दिया साहिब रज़ीडंट की सलाह से महाराजका मामू यानी मामा साहिब राज का काम अंजाम देने लगा। लेकिन दादा ख़ासगीवाले ने रानी से मिलकर मामा साहिबको निकलवा दिया और काम सब अपने हाथमें लिया। साहिबरज़ीडंट ने यहहाल देखकर धौलपुरकीअमल्दारीमेंडेरा किया॥ संधिया की फ़ौज में फूट पड़ी कुछ लोगतो दादा ख़ासगीवाले की तरफ़ थे। और कुछ बापू सितोलिया की तरफ़ दोदिनतक आपस में गोले चलते रहे आख़िर रानी ने फ़ौज को आपसकी लड़ाई से रोका। दादा ख़ासगीवाला क़ैद करके आगरेभेजागया और बापू सितोलिया दीवान हुआ॥ इस अर्सेमें गवर्नरजेनरल का लश्कर ग्वालियर की सहद्द पर पहुंच गया था। लार्डएलनबरा ने ऐसा अच्छा मौक़ा इस ग्वालियर की तरफ़काखटका मिटाने का हाथसे जाने देना मुनासिब न समझा क्योंकिउधर

पंजाबमें भी फ़साद उठनेवाला मालूम होताथा। ग्वालियरवालो से साफ़ कहलाभेजा कि अगर सुलह रखनी मंजूरहै तो ग्वालियर में सर्कारी कांटिंजेंट की फ़ौज बढ़ादो। और उस के ख़र्च के लिये कुछ इलाक़े सर्कार के हवाले करो॥ और फिर साथही इस मज़मून का इश्तिहार देकर कि सर्कारी फ़ौज महाराजकी हिफ़ाज़त के लिये आयी है ग्वालियर की तरफ़ कूच किया। उन्तीसवीं डिसम्बर को महाराजपुर और पनिअर में सेंधिया की फ़ौजसे मुक़ाबला हुआ॥ ख़ूब सख़्त लड़ाई हुई। सेंधिया की फ़ौज ने हर तरफ़ से शिकस्त खायी॥ पांचवीं जनवरी को १८४४ ई० गवर्नर जेनरल ग्वालियर में दाख़िल हुए सेंधिया ने नया अह्दनामा लिख दिया कि जब तक वह अठारह बरस का न हो काम राजका रजीडंट की सलाह मुताबिक़ अहलकार अंजाम दें। कांटिंजेंट की फ़ौज बढ़ा दी जाय उसके ख़र्चके लिये कुछ इलाक़े सर्कार जुदा करले महाराज की सिपाह नौ हज़ार से कभी ज़ियादा न होने पावे और तोप बारह जंगी और कुल बीस ऐसी वैसी रहें॥ लार्ड एलनबरा ग्वालियर की मुहिम्म तै करके कलकत्ते मुड़ गया लेकिन वहां विलायत से उसकी बदली का हुक्म आया। उसकी जगह पर सर हेनरी हार्डिंग गवर्नर जेनरल मुक़र्रर हुआ॥

सर हेनरी हार्डिंग (लार्ड हार्डिंग)

रंजीतसिंह लार्ड अकलैंड की मुलाक़ात के बादही बीमार पड़ा। और सत्ताईसवीं जूनको (सन् १८३९) शामके वक़्त होश हवास के साथ ५८ बरस की उमर में परलोक को सिधारा॥ हक़ीक़त में इस आख़िरी ज़माने के दर्मियान इस मुल्क में यह बहुत बड़ा और नामी आदमी हो गुज़रा इस का दादा चतरसिंह सूकरचक नाम गांवके रहने वाले नोधसिंह सांसी जाट का बेटा गूजरांवाले में एक कच्ची गढ़ी सी बनाकर रहा करता था। और काम पड़ने से पच्चीस सौ सवार जमा कर सकता था॥ रंजीतसिंह ने अपना मुल्क सिंधकी सर्हदसे चीन की अमल्दारी तक पहुंचादिया। और ख़ैबरके घाटेसे सतलज

तक बिल्कुल अपने क़ब्ज़े में कर लिया ॥ इसमेंसे कुछ ऊपर करोड़ रुपयेका लोगोंको जागीर और मुआफ़ीमें दे रक्खा था। और बाक़ी की आमदनीका तख़मीनन् डेढ़ करोड़ रुपया उसके ख़ज़ानेमें आताथा ॥ मरतेवक़्त उसने दानपुण्य भी ख़ूबकिया। करोड़ रुपये से ज़ियादा तो जिस रोज़ वह मरनेको था उसी रोज़ ख़ैरातहुआ ॥ और तमाशा यह कि लिखना पढ़ना वहकुछ नहीं जानता था। सिर्फ़ नाम भर लिख सकता था ॥ और आंखभी एकही रखता था एक सीतलामें जाती रही। लेकिन आदमी की पहचान भगवान ने इसेऐसीदी ॥ कि विक्रमभोज और अकबर के बाद शायद इसी के दर्बार में नव रत्न गिने जा सकते थे। जब उसकी लाश को गंगाजल से नहला कर चन्दन के बिमान पर जो सोनेके फूलोंसे सजाहुआथा जलाने को ले चले ॥ चार रानियां अच्छीसेअच्छी पोशाकें और ज़ेवरपहने हुए उसके साथ गयीं। रानी कुन्दन रजपूत राजा संसारचंद कांगड़ेवाले की बेटी महाराज का सिर गोदमें लेकर चितापर बैठगयी बाक़ी तीनों जिनमेंदो सोलह सोलह बरसकी निहायत ख़ूबसूरत थीं पांच सात लौंड़ियों के साथ उसके चौगिर्द जा बैठीं ॥ इन सबके चिहरोंपर रंज का निशान कुछ भी न था बल्कि ख़ुशीका असर मालूम होताथा ॥ अजब एक समा देखनेवालोंके दिलकी क़लक़ हिलानेका था ॥ निदान चितामें आग लगायी गयी। और देखतेही देखते वह राखकीढेरी होगयी ॥ कहते हैं कि जब चिता जलती थी एक टुकड़ा बादल का नमूदार हुआ और कुछ बूंदें पानी की बरस गया। गोया ख़ुद आसमान महाराजके मरनेसे रोया ॥ रंजीतसिंहकेबाद उसका बेटा खड़गसिंह उसकी गद्दीपरबैठा। खड़गसिंह अपने बापके पुराने वज़ीर राजा ध्यानसिंहसे किसी सबब नाराज़ होगया ॥ ध्यानसिंह ने उसके बेटे नौनिहालसिंह को ऐसा उभारा। कि उसने खड़गसिंह को नज़रबन्द करलिया और राज काज सब आप करने लगा ॥ खड़गसिंह थोड़ेहीदिनों में बीमार होकर मर गया। कौन जाने ज़हरदिया या इलाजही बुरा किया ॥ जो हो

जब उसे जलाकर नौनिहालसिंह घरकीतरफ़ फिरा। रास्तेमेंएक दर्वाज़ा टूटकर ऐसा उस पर गिरा कि वहभी अपने बापकेपास सिधारा॥ उस के साथ राजा ध्यानसिंहका भतीजामीयांउत्तम सिंह भी वहां काम आया। कहते हैं कि यह सारा करतूत ध्यानसिंह और उस के भाई गुलाबसिंह काथा॥ लेकिनदर्वाज़ा गिरने का असली सबब आज तक किसीकोनहीं मालूमहुआ। सिक्खों ने अपने दस्तूर बमूजिब खड़गसिंह की रानी चन्दकुंवरि को मुल्क का मालिक बनाया॥ और गुलाबसिंहभीउसी की जानिब रहा। लेकिन ध्यानसिंह ने फ़ौज को खड़गसिंहके भाई शेरसिंह से मिला दिया॥ चन्दकुंवरि क़िले में बंद हुई फ़ौज ने चारों तरफ़ से घेर लिया। पांच दिन तक दोनोंतरफ़ से खूब गोला चला॥ गुलाबसिंह भीतर ध्यानसिंह बाहरथा। आपमें दोनों एक लोगों के दिखलाने को यह सवांग रचा था॥ आख़िर इस बात पर सुलह ठहरी कि शेरसिंह गद्दीपरबैठे। चन्दकुंवरि को नौ लाखकी जागीर दे॥ उसे कभी अपनी रानी बनाने का इरादा न करे। और गुलाबसिंह अपनी फ़ौजसमेत निशान उड़ाता क़िले से बाहर चला जावे कोई कुछ रोकटोक न करे॥ कहतेहैं कि गुलाबसिंहने अपनी सोलहतोपोंकी सोलह पेटियां एक एक तोप के लिये तीस तीस कारतूस रख कर बाक़ी बिल्कुल रुपयों से भरीं और पांच सौ तोड़े अशरफ़ियों के अपने पांच सौ जवानों के हाथ में थमा दिये जवाहिरजिस क़दर हाथ लगा अपनी अर्दली के घुड़चढ़ों को सपुर्द किया। और भी बहुत सा क़ीमती असबाब लिया॥ क़िलेसे निकलकर शाहदरे के नज़दीक डेरा किया। फिर कुछ दिनों बाद शेरसिंह से रुख़सत लेकर अपनी जागीर जम्बू की तरफ़ चला गया॥ ध्यानसिंह ने यह समझा कि शेरसिंह को मैं ने ही गद्दी पर बिठाया और शेरसिंह ने यक़ीन जाना कि जब तक ध्यानसिंह रहेगा मैं नाम ही का महाराज हूं यह बिल्कुल इख़्तियार अपनेहाथमें रक्खेगा। मुझेहरतरह से धमकावे और दबावेगा॥ दिलों में फ़र्क़ आया। एककोदूसरे

की तरफ़ से खटका पैदा हुआ ॥ सिंधांवालों ने इस क़ाबू को अपना दिली मतलब पूरा करने के लिये बहुत ग़नीमत पाया रंजीतसिंह की औलाद के बाद गद्दी का हक़ ये अपना समझते थे। और शेरसिंह से नाराज़ भी हो रहे थे ॥ एक रोज़ लहनासिंह और अजीतसिंह दोनों सिंधांवाले भाइयों ने अकेले में महाराज के पास जाकर यह गुल कतरा कि पृथिवीनाथ हम को ध्यानसिंह ने आप को जान लेने के लिये भेजा है। और इस ख़िद्मत की एवज़ साठ लाख रुपये की जागीर देने का वादा किया है ॥ उसका इरादा है कि आप को मारकर दलीपसिंह * को गद्दी पर बिठावे। और जब तक वह बड़ा न हो रियासत का काम बेखटके आप किया करे ॥ लेकिन हमने अपने नमक की शर्त से अदा होने के लिये आप को इस बेवफ़ा वज़ीर के बद इरादों से अच्छी तरह चितादिया आगे आप मालिक हैं शेरसिंह इस बात के सुनने से ज़रा भी न घबराया और अपनी तलवार दोनों सिंधांवाले सर्दारों के सामने रख कर बोला। कि अगर तुम मेरे मारने को आये हो तो लो मैं अपनी तलवार देता हूं तुम बेशक मुझको मार डालो मगर यादरक्खो कि जिसतरह अब वह तुम से मुझे क़तलकरवाता है बहुत रोज़नगुज़रेंगे कि तुम्हें भी क़तल करवा डालेगा ॥ सिंधांवालों ने अर्ज़ किया महाराज हम तो आप को मारने को नहीं बल्कि बचाने को आये हैं लेकिन ऐसे नमकहराम वज़ीर को तो अब छोड़ना मुनासिब नहीं ग़रज़ सिंधांवालों ने शेरसिंह से ध्यानसिंह के मारने की इजाज़त लिखवा ली और वहां से यह कह कर रुख़सत हुए कि अब हम अपनी जागीर पर जाते हैं वहां से अपने सिपाहियों को लेकर हाज़िरी देने के बहाने आपके पास आवेंगे। आप उस वक़्त ध्यानसिंह को हमारे सिपाहियोंकोमौजूदात लेने के लिये हुकम दीजियेगा हमारे सिपाहीउसको और

* रानी चन्दा से रंजीतसिंह का बेटा उस वक़्त निरा बालक था ॥

उस के बेटे हीरासिंह दोनोंको गोलीसे मारदेंगे ॥ फिर ये लोग ध्यानसिंहके पास गये। और उसको वह काग़ज़ दिखलाया जो शेरसिंह ने उस के मारने के लिये लिख दिया था ध्यानसिंह बहुत घबराया लेकिन जब सिन्धांवालोंने इक़रार किया कि तेरे लिये हम महाराज ही को मार डालेंगे तब तो उस ने इन के साथ बहुत से वादे किये ॥ इन्हों ने यहां महाराज के मारनेको भी वही जुगत ठहरायी । कि जो महाराजके सामने ध्यानसिंह को क़तल करने के लिये ठहरायी थी ॥ निदान दूसरे रोज़ सिन्धांवाले अपनी जागीर को गये । और थोड़ेही दिनों में वहां से पांच छ सौ सवार अच्छे मुस्तइद हथियारों में डूबे हुए मरने मारनेवाले ले आये ॥ ध्यानसिंह तो उन दिनों में बीमारी का बहाना करके अपने घर बैठ रहा था और महाराज बाग़ोंकी सैरमें मशग़ूल थे । वहतारीख़ महीने की पहली थी इसलिये दर्बार न था महाराज कुश्ती देखकर पहलवानों को इनआम और रुख़सत दे रहे थे ॥ कि एकबारगी सिन्धांवालों ने आकर वाह गुरूजी की फ़तह सुनायी । महाराज बहुत मिहर्बानी से उन की तरफ़ मुतवज्जिह हुए अजीतसिंह ने एक दुनाली बंदूक़ जिस की हर एक नली में दो दो गोलियां भरी थीं पेश करके हंस्ते हुए यह बातकही ॥ कि महाराज देखो चौदह सौ रुपये में कैसी सस्ती एक उमदा बंदूक़ मैंने लीहै अब अगर कोई तीन हज़ार भी देवे तो मैं उस को नहीं देने का । और जब महाराज ने बंदूक़लेने के लिये हाथ बढ़ाया अजीतसिंह ने उन की छाती पर ले जाकर उसे झोंक दिया ॥ शेरसिंह गोलियोंके लगतेही बेदम होकर गिर पड़ा । सिर्फ़ इतना ही जुबान से निकलने पाया" एकीदग़ा"॥ *क़ातिल महाराज का सिर काटकर उस जगह पहुंचे जहां महाराज का बड़ा बेटा तेरह चौदह बरस का कुंवर प्रतापसिंहथा । लहनासिंह सिन्धांवालेने तलवार उठायी कुंवर उसके पैरों पर गिर पड़ा ॥ इस संगदिल ने एकही झटके

*यानी यह कैसी दग़ाबाज़ी है ॥

में उस का काम तमाम किया अजीतसिंह तो उसी दम ३०० सवार और २५० पैदल लेकर लाहोर की तरफ़ दौड़ा। और लहनासिंह बाक़ी दो सौ सवारों के साथ धीरे धीरे उस के पीछे रवाना हुआ॥ आधे रास्ते पर ध्यानसिंह भी जो शेरसिंह के पास जाता था अजीतसिंह को मिलगया। अजीतसिंह ने उसे रोका॥ और कहा कि काम बिल्कुल ख़ातिरख़ाह अंजाम हुआ अब आप क़िले में चलकर बंदोबस्त फ़र्माइये। और अपने वादों को पूरा कीजिये॥ जब ये लोग क़िले के अंदर पहुंचे अजीतसिंह का इशारा पाकर एक सिपाही ने राजा ध्यानसिंह को गोली मार दी अजीतसिंह ने शहर में मुनादी करायी कि दलीपसिंह महाराज है और लहनासिंह सिंधांवाला उस का वज़ीर हुआ। ध्यानसिंह का बेटा राजा हीरासिंह सिंधांवालों के क़ाबूमें न आया॥ फ़ौज को अपनी तरफ़ कर लिया सो ज़बर तोपें लेकर क़िला जा घेरा। तमाम रात तोपें चलती रहीं सूरज निकलते ही हीरासिंह ने क़सम खायी कि जब तक मैं अपने बाप के मारनेवालों को मराहुआ नहीं देखूंगा खाना पीनाहरामहै रानीभी ध्यानसिंहकी लौंडियों समेत सती होने के लिये इस अर्से में चिता पर चढ़नेको तयारथी हीरासिंह ने सिपाहियोंसे पुकारकर कहाकिरानी तब सती होवेगी जब उसके मालिकके मारनेवालोंका सिरकाटकर उस के पैरों में रक्खा जावेगा॥ फ़ौज इस बात को सुनते ही जोश में आयी। दीवार टूट गयी थी क़िलेपर हल्लाकरदिया और बात की बात में अन्दर जा दाख़िल हुए अजीतसिंहका सिर काटकर ध्यानसिंह की रानी के पैरों में रक्खा वह उसे देखकर निहायत ख़ुश हुई और फिर ध्यानसिंह की कलग़ी हीरासिंह की पगड़ी में लगा कर आप तेरह औरतों समेत सती हो गई॥ लहनासिंह सिंधांवाला मारा गया फ़ौज लेन कोचली गयी। दलीपसिंह महाराज और हीरासिंह वज़ीर के

१८४३ ई० नाम से डौंडी फिरी॥ थोड़े ही दिनोंके बाद राजा हीरासिंह और उस के मोतमद पंडित जल्लाकी बाज़ी बातें ऐसी ज़ाहिर

होने लगीं कि फ़ौज का दिल उन से हट गया। हीरासिंह ने विज़ारत छोड़कर जम्मू की तरफ़ भाग जाने का इरादा किया और फ़ौज की क़वाइद देखने के बहाने से शहर के बाहर निकला॥ मगर शाहदरे से पांच सौ क़दम भी आगे न बढ़ा होगा कि सिख सवारों ने पहुंचकर घेर लिया। और यह कहा कि तू पंडित जल्ला को हमारे हवाले कर दे लेकिन पंडित ने अपनी जान बचाने के लिये आगे ही बढ़ने का इशारा किया और सिक्खों का कहना कुछ भी न सुनने दिया॥ जब दस बारह कोस निकल गये और दिन क़रीब दो पहर के आया क़िस्मत का मारा पंडित जल्ला घोड़े से गिर पड़ा। सिक्खों ने उसी दम उसे टुकड़े टुकड़े कर डाला॥ हीरासिंह प्यासकी शिद्दत से पानी पीने के लिये एक गांव में उतरा सिक्खों ने गांव में आग लगादी और हीरासिंह को उसी जगह क़तल किया हीरासिंह का सिर लाहोरी दर्वाज़े पर लटकाया गया। और पंडित जल्ला का सिर तमाम शहर में फिराने के बाद कुत्तों को खिलाया गया॥ निदान हीरासिंह के मारे जाने पर दलीप-सिंह का मामू जवाहिरसिंह वज़ीर हुआ। लेकिन इसी अर्से में कुंवर पिशोरासिंह ने बिगड़कर अटक का क़िला जा दबाया॥ जवाहिरसिंहके आदमियों ने पहले तो दम दिलासा देकर उसे क़िले से बाहर निकाला। और फिर रात के वक़्त मारकर अटक के दर्या में डुबा दिया॥ कुंवर पिशोरासिंह महाराज रंजीत-सिंह के लड़कों में से था। बहादुरी के बाइस फ़ौज का प्यारा था॥ इस के मारे जाने की ख़बर ज़ाहिर होते ही तमाम सिपाह के दिल में ग़ुस्से की आग भड़क उठी इक्कीसवीं सितम्बर सन् १८४५ को सारा लश्कर दिल्ली दर्वाज़े के नज़दीक आ पड़ा १८४५ ई० निदान जब जवाहिरसिंह ने देखा कि जान नहीं बचती महाराज दलीपसिंह को गोद में लेकर हाथी पर सवार हुआ और अपनी बहन यानी दलीपसिंह की मा रानी चंदा को भी जुदा हाथी पर सवार करा कर अपने साथ लिया॥ लेकिन जब सवारी फ़ौज के मुक़ाबिल पहुंची सिपाहियों ने उसके हाथी को

रोका और फ़ीलखान को धमका कर ज़बर्दस्ती बैठवा दिया ॥ महाराज को उस की गोद से छीन लिया। और उस का काम गोली और संगीनों से उसी जगह तमाम किया ॥ इस वज़ीर के मरने पर पंजाब के दर्मियान पूरी बदअमली फैलगई और फिर वहां कोई और वज़ीर मुकर्रर न हुआ। रानी चंद्रा का सलाहकार राजा लालसिंह रहा ॥ बिल्कुल काम काज उसी के कहने मुताबिक़ होने लगा। पर इख़्तियार सब बात में फ़ौज का था ॥ और फ़ौज को इस क़दर सामान लड़ाई का मौजूद होते हुए बे शग़ल ख़ाली बैठे रहना पसंद न था। बैठे बिठाये जैसे किसी का सिर खुजलाता है ख़ाहमख़ाह सर्कार अंगरेज़ बहादुर से लड़ना बिचारा ॥ बहुत लोग यह भी कहते हैं कि मंसूबा इस लड़ाई का रानी और सर्दारों ने उठाया था। और फ़ाइदा उस में यह सोचा था ॥ कि इस तरह तो फ़ौज लाहोर में कभी चुपचाप नहीं बैठी रहेगी। जैसे इतने राजा और सर्दारों को मार डाला अब जो बाक़ी रह गये हैं उनके ख़ून से दिल बहलावेगी ॥ इस से बिह्तर यही है कि ये लोग अंगरेज़ों से लड़ें अगर सिक्खों की फ़तह हुई तो बेशक यह कलकत्ते तक अंगरेज़ों का पीछा करते हुए चले जावेंगे जल्द लाहोर को न फिरेंगे। और जो इनकी शिकस्तहुई और अंगरेज़ोंके हाथसे मारे गये तो साहिबान आलीशान किसीको जानके ख़ाहांनहीं सब के पिंशन मुक़र्रर हो जावेंगे ॥ ग्वालियर की नज़ीर बहुतदिल पिज़ीर थी बचे हुओं ने अपनी जान का बचाव इसी में देखा कि फ़ौज लाहोरसे निकल जावे। और अंगरेज़ों से लड़ पड़े ॥ निदान फ़ौज को अंगरेज़ों पर चढ़ाई करने का हुक्म जारीहो गया। लार्ड हार्डिंग इस भरोसेपर कि दोनों सर्कारोंके दर्मियान सुलह और दोस्ती का अहदनामा बक़रार और क़ाइम था बिल्कुल ग़ाफ़िल रहा ॥ यहां तक कि राजा लालसिंह ने अपने बाईसहज़ार घुड़चढ़े और चालीसतोपों के साथ तेईसवीं नवम्बर को लाहोर से कूच किया। और सरदार तेजसिंह भी सोलहवीं दिसम्बर को फ़ौज समेत वहां से चल कर उस से आ शामिल

हुआ ॥ जबकि गवर्नर जेनरल को ख़बर पहुंची कि सिक्खोंकी फ़ौज फ़ीरोज़पुर के सामने आन पड़ी तो इधरसे भी दौड़ादौड़ पलटन और रिसालों का कूच होना शुरू हुआ । और कन्हाकी सरा * के डेरों से गवर्नर जेनरल ने लड़ाई का इश्तिहार जारी कर दिया ॥ सिक्खोंकी फ़ौज जो इसपार उतरीथी।अस्सी हज़ार से कम न थी ॥ तेजसिंह और लालसिंह दोनोंनेचाहा कि फ़ीरोज़पुर पर हमला करें लेकिन फ़ौज ने क़बूल न किया उन के दिल में यह बात समा रही थी कि फ़ीरोज़पुर के क़िले में अंगरेज़ों ने सुरंगें खोद कर बारूत बिछा रक्खी है जिस वक़्त सिक्ख लोग हमला करेंगे । बारूत में आगलगा देवेंगे ॥ ग़रज़ कई रोज़ तक इसी तरह चुपचाप फ़ीरोज़पुर के सामने डेरा डाले पड़े रहे । पर जब सुनाकि अंगरेज़ीफ़ौज का उन की तरफ़ कूच हुआ तो वे भी वहां से अम्बाले की तरफ़ रवाना हुए ॥ अठारहवीं दिसम्बर को तीसरे पहर जब कि राजा लालसिंह बारह हज़ार सवार और चालीस तोपोंके साथ बढ़कर मुदकी से दो कोस के फ़ासिले पर आन पहुंचा अंगरेज़ी फ़ौज बड़ालंबा कूच ते करके मुदकीमें पहुंची थी अभी डेरे भी खड़े नहीं हुए थे सिपाही लोग हाथ मुंह धोने और रोटी पकाने की फ़िकर में थे । गवर्नर जेनरल और कमांडरइनचीफ़ दोनों यह ख़बर सुनतेही अपने अपने घोड़ों पर हो गये ॥ और लश्कर में बिगुल लड़ाई का बजवादिया। जिस दम अंगरेज़ी फ़ौज झपट कर सिक्खों से मुक़ाबिल हुई गर्द उड़ने के सबब अपना और बिगाना कोई भी नहीं सूझता था ॥ सिक्ख लोग जो पहले ही से झाड़ियों की ओट में छुप रहे थे । फ़ुरसत के साथ अंगरेज़ी सवारों को अपनी बंदूक़ का निशाना बनाते थे ॥ जेनरलसेल जलालाबादवाले और और कई बड़े अंगरेज़ इस लड़ाई में मारेगये । पर आख़िर अंगरेज़ों के सामने सिक्ख लोग कहां तक ठहर सकते थे गीदड़ों की तरह शेर के सामने से भागनेलगे ॥ और खेतसाहिबानआली-

* अम्बाले के पास है ॥

शान के हाथ रहा। इक्कीसवीं दिसम्बर को अंगरेज़ी फ़ौज ने सिक्खों के मोरचों पर जो उन्हों ने फेरू * के पास जमाये थे हमला कर दिया॥ उस रोज़ रात को भी लड़ाई होती रही। और मेजर ब्राड़फुट अम्बालेका अजंटउसी लड़ाईमें काम आया। लेकिन सबेरा होनेके पहलेही दुश्मनोंमें से वहांएक भी बाक़ी न रहा॥ बहुत से तो उसी जगह अंगरेज़ी सिपाहियोंकेहाथ से कट मरकर मिट्टी में मिले और जो बाक़ी रहे सब के सब सतलज की तरफ़ चले। सुबरांव के पास हरी के पत्तन पर पहुंचकर डेराडंडातो अपना सतलजके दहने कनारेरक्खा और आप लड़ने के लिये सतलज के बायें कनारे रहे॥ सतलज में नावों का पुल बना लिया था सर्कारी फ़ौज भी उसी जगह उनके मुक़ाबिल जा पड़ी। और महीने भर से ऊपर दोनोंफ़ौज इसी तरह बे लड़ाईपड़ीरहीं॥ अंगरेज़लोगतो अपनेबड़े क़िला-शिकन तोपख़ाने के जिसे अंगरेज़ी में सीजट्रेन्कहतेहैं पहुंचने के इन्तिज़ार में थे। और सिक्ख लोग इस भरोसे पर थे कि अब ये दबकर सुलह कर लेंगे॥ इसी अर्से में जेनरल सर हारीस्मिथ ने लुधियानेके नज़दीक अलीवाल में सर्दार रंजोर-सिंह को जिस ने वहां कुछ सिक्ख जमा कियेथे मारहटाया। और राजा गुलाबसिंह तीन हज़ार आदमियों के साथ जम्बूसे लाहौर में दाख़िल हो गया॥ निदान दसवीं फ़ेब्रुअरीसन्१८४६ को नूर के तड़के सर्कारी फ़ौज ने सिक्खों पर जो अपनेमोरचों

१८४६ ई० के अंदर † ग़ाफ़िल पड़े हुए थे हमला किया। और थोड़ीही देर की सख़्त लड़ाई में उन का पैर मैदान से उखाड़दिया॥ ऐसी घबराहट के साथ भागे। कि उन के हुजूम से पुल भी टूट गया आधे से ज़ियादा आदमी सतलज में डूबकर मरे॥ ग़रज़ यह लड़ाई बड़ी भारी हुई। और इसी लड़ाईके हारने

*इस गांव का असली नाम फ़ीरोज़शहर बतलाते हैं और इसी को अंगरेज़ फ़ीरोज़शाह कहते हैं॥

† इस किताब का बनानेवाला उस वक़्त सिक्खोंके मोरचों में था सर्कार का भेजा हुआ गया था॥

से सिक्खों की ख़ुदमुख़्तार सल्तनत जो रंजीतसिंह ने इस मिह्नत से बनायी थी हमेशा के लिये ग़ारत हो गई ॥ सर्कारी फ़ौज उसी रोज़ दूसरे घाट पुल बांधकर सतलज पार उतरी । और फिर कोई ग़नीम सामने न रहने से बाफ़राग़त मंज़िल ब मंज़िल लाहौर की तरफ़ कूच करने लगी ॥ कसूर के डेरों में राजा गुलाबसिंह गवर्नर जेनरल की ख़िद्मत में हाज़िर हुआ । और फिर लुलियानी के डेरों में महाराज दलीपसिंह को भी ले आया ॥ बीसवीं फ़ेब्रुअरी को सर्कारी फ़ौज के साथ गवर्नर जेनरल लाहौर में दाख़िल हुए । और नवीं मार्च को आम दर्बारमें महाराजने अपनेसब सर्दारों समेत आकर नये अहदनामे पर मुहर दस्तख़त किये ॥ इस अहदनामे की रू से लाहौर के बिल्कुल इलाक़े जो सतलज इस पार थे । जलंधर दुआब समेत सर्कार की अमल्दारी में आगये ॥ ब्यासा सर्हद्द ठहरी पचास लाख रुपया लड़ाई के ख़र्च की बाबत महाराज ने नक़्द अदा किया । और एक करोड़ के बदले जम्बू और कश्मीर दे दिया कि वह सर्कार ने फिर रुपया लेकर महाराजगी के ख़िताब के साथ गुलाबसिंह को इनायत फ़र्माया ॥ जो बात रानी चंदा और उसके यार राजा लालसिंह ने गुलाबसिंह को ख़राबकरनेकीसोचीथी उसीसे गुलाबसिंह की सारी बातबनगयी । क्यामहिमा है सर्व शक्तिमान जगदीश्वर की ॥ जिस क़दर तोपें लड़ाई में गयी थीं । बिल्कुल सर्कार के हवाले कर दी गयीं ॥ निदान गवर्नर जेनरल ने महाराज और महारानी के कहने मुताबिक़ कुछ थोड़ी सी फ़ौज लाहौर में रहने दी । और बाक़ी सब अपनी छावनियों को रवाना हुई ॥ और यहभी ठहरगयी कि सिक्खों की फ़ौज में बीस हज़ार से ज़ियादा पैदल और बारह हज़ार से ज़ियादा सवार न रहें । और गवर्नमेंट की इजाज़त बिदून ग़ैर मुल्कके आदमी अफ़सर न बनायेजावें ॥ महाराजगुलाबसिंह ने जब कश्मीर में अपना क़ब्ज़ा करने के लिये आदमी और सिपाही भेजे वहां के सूबेदार शेख़ इमामुद्दीन ने सबको

मार कर निकाल दिया । और कश्मीर छोड़नेसेइन्कारकिया ॥ लेकिन लाहौर के अजंट हेनरी लारंस साहिब जब कुछ थोड़ी सी अंगरेज़ी फ़ौज लेकर गुलाबसिंह को दख़ल दिलाने के लिये पीरपंचाल के घाटे के पास जा पहुंचे इमामुद्दीन उन के साथ लाहौर चला आया । और कश्मीर में बख़ूबी गुलाब-सिंह का क़ब्ज़ा और दख़ल हो गया ॥ इमामुद्दीन ने गुलाब-सिंह को कश्मीर न देनेका सबब यह बयानकिया । कि राजा लालसिंह वज़ीर ने कश्मीर छोड़नें के लिये मना लिख भेजा था बल्कि लालसिंह का मुहरी ख़त भी इस मज़्मून का पेश कर दिया ॥ लालसिंह इस क़ुसूर में विज़ारत से मौक़ूफ़होकर नज़रबंद रहने के लिये पहले देहरे और फिर आगरेदोहज़ार पिंशन पर भेजा गया । और कारबार रियासत का सर्दारतेज-सिंह सर्दार शेरसिंह सर्दार शम्शेरसिंह सर्दार निधानसिंह सर्दार अतरसिंह सर्दार रंजोरसिंह दीवान दीनानाथ और ख़लीफ़ा नूरुद्दीन के सपुर्द हुआ ॥ इस अर्से में मीआद सर्कारी फ़ौज को लाहौर में रहने की पूरी हो गयी थी । और नज़-दीक था कि लाहौर छोड़कर सतलज इस पार चली आवे लेकिन सर्दारों ने यह बात न होने दी ॥ और फ़ौज रहने के लिये सर्कार से बहुत मिन्नत की । तब नाचार सर्कार ने उनकी अर्ज़ क़बूल करके यह तजवीज़ ठहरायी ॥ कि जब तक दलीपसिंह १६ बरस का न हो जितनीफ़ौज सर्कारमुल्क की हिफ़ाज़तके लिये काफ़ी समझैलाहौर में रक्खे । और उस का ख़र्च बाईस लाख रुपया साल लाहौर के ख़ज़ाने से मिला करे ॥ और मुल्क का बंदोबस्त और इन्तिज़ाम साहिबअजंट बहादुर की सलाह और हुक्म मुताबिक़होता रहे । औररानी चंदा के गुज़ारे को डेढ़ लाख रुपया साल नक़द ठहरजावे ॥ रानी चंदा इख़्तियार घट जाने के बाइस रोज़ ब रोज़ हर तरह के फ़साद उठाने लगी । और दलीपसिंह कोभीबहकाने और फ़ुसलाने लगी ॥ यहां तक कि जिस रोज़ सर्दारतेजसिंह को राजगी का ख़िताब देना ठहरा था दलीपसिंह ने साफ़

इनकार कर दिया कि हम इस को राजगी का तिलक नहीं करेंगे आख़िर जब सर्दारों ने देखा कि रानी लाहौरमें रहकर महाराज को भी ख़राब करेगी और मुल्क में फ़ुतूर डालेगी साहिब अजंट की सलाह के साथ गवर्नर जेनरल का हुक्म हासिल किया। और उसे पिंशन घटाकर शेख़ूपुरेमेंजोलाहौर से १६ कोस के फ़ासिले पर है नज़रबंद कर दिया॥

लार्डडलहौसी

लार्ड हार्डिंग अठारहवीं जनवरी सन् १८४८ को विलायत चले गये। और उनकीजगहपर लार्ड डलहौसी गवर्नरजेनरल मुक़र्रर हो कर आये॥

सन् १८४७ के आख़िरमें दीवान मूलराज मुल्तानके नाज़िम ने लाहौर में आकर अपनीनिज़ामतका इस्तेफ़ा दाख़िल किया और सबब इस का यह बयान किया कि जमा बढ़जाने और परमिट का बंदोबस्त दूसरी तरह पर हो जाने से उस को नुक़्सान पड़ा। और मुल्तानियोंका मुराफ़ा यानी अपीललाहौर में सुने जाने से उन पर उस का पहला सा दबाव बाक़ी न रहा॥ निदान इस्तेफ़ा मंज़ूर हुआ और अगन्यू साहिब और लेफ़्टिनेंट अंडर्सन साहिब इस मुराद से मुल्तान भेजेगये कि उस सूबे को मूलराज से लेकर सर्दार कान्हसिंह नये नाज़िम के सपुर्द कर दें अढ़ाई हज़ार पियादे और सवार और ६ तोपें उन के हमराह थीं उन्नीसवीं अप्रैल सन् १८४८ को जब दोनों साहिबों ने क़िले के अंदर जाकर बख़ूबी मुलाहज़ाकर लिया। मूलराज ने उसको उन के सपुर्द किया॥ वेगोरखालीपल्टनके दो कम्पानों को क़िले में छोड़कर बाक़ी आदमियोंके साथ अपने डेरोंकी तरफ़ लौटे। दीवान मूलराज* और सर्दारकान्हसिंह

१८४७ ई०

१८४८ ई०

* कहते हैं कि मूलराज साहिब के पास जाने को तयार था। लेकिन इसी अर्से में किसी ने उस के रिश्तेदार रंगराम को जिस ने उसे साहिब के पास जाने की सलाह दी थी ज़ख़्मी कर दिया इस बात से डरकर मूलराज अपने मकान को चला गया॥

दोनों साथ थे॥ क़िले के दर्वाज़े से बाहर निकलतें ही किसी सिपाहीने अगन्यू साहिबको बर्छी और तलवारसेघायल किया। और फिर थोड़ी ही दूर आगे अंडर्सन साहिबका भी यही हाल हुआ॥ मुजरिम भाग गये। साहिबों की उस के आदमी उठाकर डेरे में लाये॥ दूसरे दिन सुबह को क़िले से अंगरेज़ी लश्कर पर गोले चलनेलगे। शामतक अंगरेज़ी फ़ौज के सब लोग मूलराज से जामिले कुल पचीसतीस आदमीदोनों साहिबों के पास रह गये॥ इक्कीसवों को मूलराज की फ़ौजने निकलकर इन पर हमला किया। और दोनों घायल साहिबों को उसी जगह मार डाला॥ जबयह ख़बर लाहोरमें पहुंची उसी दम कुछ फ़ौज शेरसिंह के साथ मुलतान को रवानाकी गयी। और बहावलपुरके नव्वाबको और लेफ्टिनेंटइडवार्डिस को जो उन दिनों हज़ारे की कमान परथा और फ़ीरोज़पुरकी फ़ौज को हर तरफ़ से मदद के लिये कूच करने की ताक़ीद हुई॥ इसी अर्से में लाहोर के दर्मियान रानी के आदमियोंने सर्कारी फ़ौज के कुछ सिपाहियोंसे मिलकरइसतरहकी साज़िश की कि एकही दिन वहां सब साहिब लोगों को ज़हर दें और क़तल कर डालें लेकिन भेद खुल जाने के सबब रानी चंदा तो चनार के क़िलेमें क़ैद रहनेके लिये † बनारसभेजी गयी। औरउसकेआदमी गंगारामखानसिंह और गुलाबसिंह फांसीदिये गये बाक़ी मुफ़सिदों ने अपने अपने क़ुसूरके मुवाफ़िक़सज़ापाई गवर्नर जेनरल का इरादा था कि जाड़े तक यह मुहिम्म मुल्तवी रहे। लेकिन इक़बाल ज़बर्दस्तक्यों ऐसा बट्टा लगे॥ लेफ़्टिनंट इडवार्डिस जो सरहद्द परथा बारहसो जवान और दो तोप लेकर सिंधु इस पार उतर आया। और कर्नेलकोर्टलैंड के साथ जो कुछ थोड़ी सी फ़ौज मुलतानको तरफ़जाती

† चनारके क़िले से नयपाल भागी और वहां बहुत दिनों तक महाराज जंगबहादुर के पास रहकर दलीपसिंह के साथ इंगलिस्तान गयी मरने पर उसकी लाश दाहक्रियाके लिये गोदावरी के तीर पंचवटी में आयी॥

थी और नव्वाब बहावलपुरके यहां से जो कुछ थोड़ीसी फ़ौज पहुंच गयी थी शामिल करके अठारहवीं जून को किनेरी की लड़ाईमें और पहली जुलाईको सादूसेन की लड़ाईमें मूलराज को मार भगाया ॥ मूलराज मुल्तान के क़िले में बंद हुआ। जेनरल ह्विस लाहोर से सात हज़ार आदमी लेकर लेफ़्टिनंट इडवार्डिस की मदद को पहुंचा और सर्दार शेरसिंह को सिक्खोंकी फ़ौजके साथ मुल्तान जानेका हुकुम मिला ॥ इस अर्से में शेरसिंह का बाप सर्दार चतरसिंह जो हज़ारे की कमान पर था मूलराज की जानिब होगया और अटक का क़िला लेना चाहा। चौदहवीं सितम्बरको सर्दार शेरसिंह भी अपने पांच हज़ार सिक्खों के साथ मूलराज की तरफ़ चला गया ॥ इधर गुरू महाराजसिंह ने कुछ सिक्ख जमा करके होशियारपुर के पास लूट मार मचा दी उधर कांगड़े के पास कई छोटे छोटे राजा बाग़ी हो गये गोया तमाम पंजाब में ग़दर मचा। शेरसिंह की जमाअत बढ़ने लगी लाहोरको कूच किया ॥ काबुलवालों से भी साज़िश होने लगी अमीर दोस्त-मुहम्मदख़ां ने आकर पेशावर पर अपना क़ब्ज़ा किया। और वहांके अजंट मेजर लारंसको इन मुफ़सिदों ने क़ैदकरलिया ॥

उधर गवर्नर जेनरल बहादुर ने बम्बई से सात हज़ार आदमी को मुल्तान रवाना होनेका हुकुमदिया। और अकतूबर के आख़िर तक बंगाले का लश्कर भी फ़ीरोज़पुरमें जमा होने लगा ॥ सोलहवीं नवम्बर को चार गोरे को और ग्यारह हिन्दुस्तानी पलटनें और तीन गोरे के और दश हिन्दुस्तानी रिसाले और ९८ तोपें लेकर कमांडरइनचीफ़ लार्डगफ़ रावीपार उतरे। बाइसवीं को चनाब पर रामनगर में और तीसरी दिसम्बर को शाहदूलहापुर में लड़ाई हुई शेरसिंह ने पीछे हट कर झेलम पर चेलियानवाले में मोरचे जमाये। यहां तेरहवीं जनवरी को बड़ी कड़ी लड़ाई हुई खेत सर्कारके हाथ रहा। लेकिन चार तोप खोई गयीं और २३५७ आदमी और ८६ अफ़्सरों का नुक़सान हुआ ॥

बम्बई की फ़ौज पहुंचजाने से जेनरल ह्विशने मुलतान के क़िले पर हल्ला करने की तयारी की लेकिन २० दिन लड़ कर
१८४९ ई० और थक कर बाईसवीं जनवरी १८४९ को मूलराज ने क़िला हवाले कर दिया और जेनरल ह्विश के पास चला आया॥ जेनरलह्विश कमांडरइनचीफ़से जा मिला। और इसके शामिल होने से कमांडरइनचीफ़ के पास सौ तोप के साथ बीस हज़ार का लश्कर हो गया॥ शेरसिंह के पास भी गुजरात में ६० तोप और पचास हज़ार आदमियों की भीड़ भाड़ थी। बाईसवीं फ़ेब्रुअरी को लड़ाई हुई॥ सिक्खोंने शिकस्त खायी। ५३ तोप सर्कार के हाथ आयी अंगरेज़ों ने सिंध तक पीछाकिया। बारहवीं मार्च को शेरसिंह और चतरसिंहने जो कुछ रहगया था सब समेत अपनेतईं जेनरल गिल्बर्टके हवाले करदिया॥ दोस्त मुहम्मद अपने आदमी लेकर काबुल चला गया। एक लड़काउसकायहांखेतरहा॥ गुरू महाराजसिंह पकड़ागया पहाड़ी राजाओं ने भी अपने कियेका फल पाया॥ उन्तीसवीं मार्च को गवर्नर जेनरल लार्ड डलहौसी ने पंजाब की ज़ब्ती का इश्तिहार जारी फ़र्माया॥ ख़ज़ाना तोपख़ाना बिल्कुल सर्कार के क़ब्ज़े में आया। कोहनूर हीरा क़ैसरहिन्द एम्प्रेस विक्टोरिया को नज़र भेजा गया॥ दलीपसिंह पांच लाख रुपयेसाल पिंशनपर फ़तहगढ़ यानी फ़र्रुख़ाबादगये। और वहांसे ईसाई होकर इंगलिस्तान में जा रहे॥ सर्दार चतरसिंह शेरसिंह के साथ नज़रबंद रहने को कलकत्ते भेजा गया। मूलराज काले पानी यानी अंडमान टापू को रवाने हुआ लेकिन रास्ते ही में मरा॥

पंजाब की हुकूमत के लिये गवर्नर जेनरल ने बोर्ड आफ़ अडमिनिस्ट्रेशन मुक़र्रर किया उसमें सर हेनरी लारंस उन के भाईजान लारंस और मांसल तीन मिम्बर रहे। थोड़े ही दिनों बाद मांसल की जगह सर राबर्ट मांटगमरी आ गये॥ जिस तरह लार्ड एलनबरा ने सिंध अंगरेज़ी अमलदारी में मिलाया था लार्ड डलहौसी ने पंजाब मिलाया। लेकिन लार्ड

डलहौसी ने अपने विलायत जाने पर इस से बढ़कर ज़ियादा उमदा और बिहतर इन्तिज़ाम शायद हिंदुस्तान के औरकिसी हिस्से में नहीं छोड़ा ॥

सन् १८५२ ई० में बर्म्हा से दुबारा लड़ाई हुई। और अंगरेज़ी अमल्दारी पेगूतक पहुंची ॥ हाल उसका यह है कि सन् १८२६ के अहदनामे मुताबिक़ बर्म्हा के बन्दरोमें अंगरेज़ी सौदागरों की ख़ातिर्दारी होनी चाहिये थी। लेकिन अबरंगून के हाकिम ने उनपर ज़ुलम् और सख़्ती करनी शुरू की ॥ लार्ड डलहौसी लड़ना नहीं चाहता था लेकिन जब देखा कि बर्म्हावाले अक़्ल से दूर और उन को राह बतलाना निहायत ज़रूर आठ हज़ार आदमी जेनरल गाडविन के साथ रवाना किये। अपरैल सन् १८५२ में इन्हों ने बर्म्हावालों को शिकस्त देकर रंगून और मर्तबान उन से छीन लिया और दिसम्बर में लड़ाई ख़र्च के बदले और आगे को ऐसी हर्कत से रोकने के लिये कोर्ट आफ़ डेरेक्टर्स के हुक्म मुताबिक़ पेगू के सब इलाक़े अंगरेज़ी अमल्दारी में मिल गये गोया वहांवालों के दिन फिरे ॥ १८५२ ई०

याद होगा कि सन् १८१८ में अंगरेज़ों ने सितारा शिवाजी की औलाद कोदेदिया था और सन १८३९ में गद्दीनशीन राजा को ख़ारिज करके उसके भाई को बैठाना पड़ा था ॥ यहभाई सन् १८४८ में लावलद मरा। लेकिनउसनेमरते वक़्त एकलड़का गोद लिया था ॥ कोर्ट आफ़डेरेक्टर्सकी रायमें अहदनामेमुताबिक़ इस गोद लिये लड़के को गद्दी का हक़ नहीं पहुंचता था। पस रअय्यत के फ़ाइदे की नज़र से लार्ड डलहौसी ने उस लड़के का अच्छा पिंशन मुक़र्रर करके सितारा ले लिया ॥

इसी तरह सन् १८५३ में राजा के मरने पर नागपूर ज़ब्ती में आया। इसने कोई लड़का गोद नहीं लिया था तमाम इलाक़े में अंधेरखाता मच रहा था ॥ १८५३ ई०

झांसी की ज़ब्ती का भी ऐसा ही सबब हुआ शिवराव भाऊ के साथ जो वहां पेशवा की तरफ़ से था सन १८०४ में

अहदनामा होगया था। सन् १८१८ में जब बुंदेलखण्ड पेशवासे अंगरेज़ों ने लेलिया झांसी का इलाक़ा भाऊ के वारिस को बहाल रक्खा॥ उसके पोते राव रामचंद्र को सन् १८३२ में राजा का ख़िताब दिया। और उस ने सन् १८३५ में मरते वक़्त एक लड़का गोद लिया॥ सर चार्लस मेटकाफ़ ने गोदलेना नामंज़ूर करके भाऊ के एक लड़के राव गंगाधर को जो तबतक जीता था गद्दी पर बिठाया। इसके वक़्त में ऐसी बेइन्तिज़ामी हुई कि अठारह की जगह कुल तीन ही लाख वसूल होने लगा॥ इस ने भी सन् १८५३ में मरते वक़्त एक लड़का गोद लिया लेकिन सर्कार ने मंज़ूर नहीं किया। और दूसरा कोई वारिस न रहने के सबब सारा इलाक़ा ज़ब्त कर लिया॥

उसी साल कर्नाटक भी मंदराज हाते में मिला सन् १८०१ में अज़ीमुद्दौलाकोवहांकानव्वाबबनाया था। लेकिन अहदनामे में "नसलन् बाद नसलन्" यानी मौरूसी होनेका कुछज़िकर नहीं था॥ सन् १८५३ में जब उसका पोता लावलद मरा आज़मजाह उसके चचा ने दावा गद्दी का किया। सर्कार ने नामंज़ूर करके उसके और उसके कुनबे के लिये अच्छा ख़ासा पिंशन मुक़र्रर कर दिया॥

सन् १८०१ के अहदनामे मुताबिक़ हैदराबाद के नव्वाब को ५००० पियादे २००० सवार और चार बाटरी तोपख़ाने का ख़र्च जो सर्कार की तरफ़ से कांटिंजंट के तौर पर वहां रहता था अदा करना चाहिये था लेकिन इसमें हीला हवाला होने लगा। और रुपया बाक़ी पड़ा॥ सन् १८४३ में नव्वाबकोइत्तिला दीगयी कि अगर आगे रुपया बराबर अदा न होगा। कुछइलाक़ा निकाल लिया जायगा॥ मुआमला और भी बदतर हुआ नाचार १८५१ में लार्ड डलहौसी ने कहला भेजा कि अबइलाक़ा लेना पड़ा॥ जो नव्वाब के आदमियों ने रुपया अदा करने की कोशिश की लेकिन जब ज़ाहिरा नाउमेदी मालूम हुई सर्कार ने सन् १८५३ के अहदनामे मुताबिक़ फ़ौज ख़र्च के लियेबराड़ और इलाक़ों में अपना इन्तिज़ाम करलिया। और फिर

सन् १८६० के अहदनामे मुताबिक़ सिर्फ़ बराड़ काफ़ी समझकर बाक़ी सब इलाक़ों को छोड़ दिया ॥

सन् १७९९ में जबलार्ड विलिज़लीने मैसूर की रियासतफिर क़ायम की अहदनामे में यह शर्त लिखगयीथी कि जबज़रूरत होगी सर्कार अपना इन्तिज़ामकरलेगी । सन् १८३० में जबराजा की ग़फ़लत और ज़ियादतीसे रअय्यत ने सर्कशी और बग़ावत इख़्तियार की लार्ड बेंटिंकने वहां की हुकूमत अपने हाथ में लेली ॥ राजा को अहदनामे के मुताबिक़ आमदनी का रुपया जो ख़र्च से बचा हवाले किया । महसूल घटा रअय्यत को सुख चैन मिला ॥ ग़रज़ ऐसा अच्छा इन्तिज़ाम हुआ । कि जहां ४४ लाख मुश्किल से वसूल होता था ८२ लाख होने लगा ॥ लार्ड हार्डिंग से राजाने अपने इख़्तियार की बहाली चाही । लेकिन वह बात मंज़ूर न हुई ॥ सन् १८५२ में उसने लार्ड डलहौसी सेचाही । उसने भी नामंज़ूर की ॥ लार्ड डलहौसी को भरोसा कोर्ट आफ़ डेरेक्टर्स काथा । और कोर्ट आफ़ डेरेक्टर्स को निरा रअय्यत के फ़ाइदे का लिहाज़ था * ॥

इसी साल यानी जिसमें नागपूर झांसी और कर्नाटक वाले लावलद मरे बाजीराव पेशवा भी बिठूर में ७७ बरसका होकर लावलद मरगया । उसके गोद लिये लड़के नान्हाराव ने आठ-लाखका पिंशन जो सन् १८१८ में बाजीराव को दिया गया था अपने नाम बहाल चाहा ॥ यह क्योंकर होसकता था । पिंशन तो हीनहयात था ॥ नान्हाने विलायत मुख़्तार भेजा । यहां और विलायत दोनों जगह से उसका दावा डिसमिस हुआ ॥

---

* राजा अपने इख़्तियार की बहाली बराबर चाहतारहा और जो जो गवर्नर जेनरल हुए सब की तरफ़ से बहाली क्या लड़का गोद लेना और नाम की रियासत का वारिस बनाना भी नामंज़ूर होता रहा लेकिनसन् १८६६ में सैक्रेटरी आफ़स्टेटने दोनों बातों को मंज़ूर करलिया लड़काअभी (१८७०) नाबालिग़ है जब बालिग़ होकर इसके लाइक समझा जायगा इख़्तियार बहाल होजायगा ॥

अब कुछ हाल अवध की ज़ब्ती का सुनो यह भारी काम लार्ड डलहौसी का गोया आख़िरी था। सन् १७७६ हीमेंवारन हेस्टिंगज़् ने नव्वाब आसिफुद्दौला को रअय्यत की तबाही और बद इन्तिज़ामी से चिताया था॥ लार्ड कार्नवालिस और सरज़ान शोर भी चिताता रहा। यहां तक कि जब अंगरेज़ों की मदद से सआदतअलीख़ां नव्वाब हुआ लार्ड विलिज़्लीने सन् १८०१ में इस बात का कि रज़ीडंट की सलाह मुताबिक़ इन्तिज़ाम दुरुस्त करे एक अहदनामा लिखवालिया॥ तीस बरस बाद लार्ड बेंटिंक को बख़ूबी मालूम होगया कि बे मुदा-ख़लत काम न चलेगा। कोर्ट आफ़ डैरेक्टर्स से इजाज़तहासिल कर के नसीरुद्दीनहैदर को धमकाया कि अब इख़्तियार छिन कारपिंशन मुक़र्रर होजायगा॥

इस धमकी से कुछ बहुत काम नहीं निकला। लार्ड अकलैंड और ज़ियादा ज़रूरी मुहिम्मों में फंसा रहा॥ सन् १८४६ में यानी पहली पंजाब की लड़ाई ख़तम होने पर गव-र्नमेंट ने फिर अवध की तरफ़ तवज्जुहकी। और रअय्यत की तबाही और परेशानी की ख़बर ली॥ लार्ड हार्डिंग खुद लखनऊ गये और बादशाह * को ज़ुबानी समझाया। और फिर जल्दही सन् १८५१ में लार्ड डलहौसी ने कर्नल स्लीमन को वहां का रज़ीडंट मुक़र्रर किया॥ और हुक्म दिया कि बिलकुल इलाक़े में दौरा करके अपनी आंखों से रअय्यत की हालत देखे। और वहांके इन्तिज़ाम का रिपोर्ट करे॥ रिपोर्ट आया। लेकिन उससे बदतर होना मुमकिन न था॥ गोया दुनया के ज़ुलम और ज़ियादतियों की फ़िहरिस्तथी। रअय्यत की तबाही और परेशानी से भरी थी॥ बादशाह ऐश में डूबे हुए थे। अदालत के मालिक गवैये बजवैये थे॥ उहदेदार अपनेउहदे नज़राना देकर मोल लेतेथे। और फिर रअय्यत को लूट कर अपनी जेब भरतेथे॥ तोभी लार्ड डलहौसी ने
१८५५ ई० ज़ब्ती मुलतवी रक्खी। और सन् १८५४ में जेनरल ऊटरमको

* बादशाह का ख़िताब मिलने काहालऊपर लिखआयेहैं॥

रज़ीडंट मुक़र्रर करके नये सिरस तहक़ीक़ात का हुक्म दिया जिस से मालूम हो कि कर्नल स्लीमन के रिपोर्ट पर बादशाह ने इन्तिज़ाम की क्या दुरुस्ती की ॥ जेनरल ऊटरम ने खूब तहक़ीक़ करके बहुत अफ़सोस के साथ लिखा कि दुरुस्ती कुछ भी नहीं हुई है । और न होने की कुछ उमेद है ॥ लार्ड डलहौसी ने देखा कि अब चुप रहना गुनाह में दाख़िल होगा कोर्ट आफ़ डेरेकृर्स को लिख भेजा कि बादशाह बनारहे । लेकिन दीवानी फ़ौजदारी का इख़्तियार ले लिया जावे ॥ जेनरल लो जो कर्नल स्लीमन से पहले रज़ीडंट थे । अब कौंसल में भरती होगये थे ॥ सब मिम्बरों ने लार्ड डलहौसी की राय से इत्तिफ़ाक़ किया । लेकिन दो मिम्बरों ने सिवाय ज़ब्ती के और किसी तद्बीर में कुछ फ़ाइदा न देखा ॥ दो महीने के कामिल ग़ौर बाद कोर्ट आफ़ डेरेकृर्स ने बोर्ड आफ़ कंट्रोलकी मंज़ूरी के साथ ज़ब्ती का हुक्म लिख भेजा बादशाह को १८५६ ई० पंद्रह लाख पिंशन दिया । बादशाह ने अपना डेरा कलकत्ते में जा किया ॥

कम्पनी की सनद में जो मीआ़द गुज़र्ने पर सन् १८५३ में नयी मिली । नयी बात तीन दर्ज हुई ॥ पहले यह कि कोर्ट आफ़ डेरेकृर्स के मिम्बरों की तादाद तीस से अठारह होगयी । उस में भी छ की मुक़र्ररी शाही अहल्कारों के इख़्तियार में रही ॥ दूसरे बंगाले और पंजाब का एक एक लेफ़्टिनेंट गवर्नर जुदा मुक़र्रर हुआ । तीसरे सिविल सर्विस के लिये इम्तिहान का क़ाइदा मुक़र्रर होकर उस पर से कोर्ट आफ़ डेरेकृर्स का इख़्तियार उठ गया ॥

लार्ड केनिंग

ग़रज़ लार्ड डलहौसी अपनी मीआ़द ख़तम होने पर विलायत चले गये । और यहां उन की जगह पर लार्ड केनिंग आये ॥

अब मुख़्तसर सा कुछ हाल बलवे का लिखते हैं । अंगरेज़ लोग अब तक इस के असली सबब पर बहस करते हैं ॥ उन को शायद इस से बढ़ कर कभी कोई तअ़ज्जुब न हुआ होगा

और हुआही चाहे। जिनके मुल्क इंगलैंड में ज़ियादा आदमी एकही क़ौम और एकही मज़हब के बसते हैं क़ानून मुताबिक़ बकालतन् बादशाही करते हैं अपने मुल्क के लिये जान देने को तयार रहते हैं औरतें भी मुल्कदारी के मुआमलों में दख़ल देती हैं गोया सो स्याने एक मत की मसल पर चलते हैं वह क्यों न इस बात से तअज्जुब में आवें कि सिर्फ़ एक चिकनाई लगे कारतूस काममें लाने के हुकुम से बंगाले की सारी फ़ौज बिगड़ जावे॥ वह फ़ौजजो सेकड़ों लड़ाइयों में सर्कारके एमल की शर्त्त बजा लायी और अपने अफ़सरों को मा बाप समझती रही अब उन्हीं अफ़सरों का गला काटे। फ़ौज के बिगड़तेही सारे हिन्दुस्तानमें खलबली पड़ जावे॥ बदमआश हरतरफ़ लूट मार मचा देवें। रईस अमीर जो अंगरेज़ों के बढ़ाये बढ़े और जिनके बुलाये अंगरेज़ आये कुछ परवा न करें बल्कि जिनको ऐसे वक़्त में सर्कार के लिये जान माल सब निछावर करना चाहिये था बहुतेरे उन में से अलग रह कर तमाशा देखा करें॥ लेकिन हम लोगों के लिये इस में कोई तअज्जुब की बात नहीं है फ़ौज में तो सिपाहियों को यक़ीन हो गया था कि इस तरह पर कारतूसों के काम में लाने का हुकुम जान बूझकर सिर्फ़ उनको जात लेने के लिये दिया गया है। उन नये कारतूसों में इस लिये कि बंदूक़ की नली में फँस न रहें चर्बी की चिकनाई लगायी जाती थी और चर्बी का छूना हिन्दुओं को मना है। ये बेख़बरे सिपाही इतना कहां सोच सकते थे कि वह कारतूस दूसरी तरह पर भी काम में आ सकता है जिस में उनको जात न जावे। और ज़रूर कुछ लिहाज़ होगा अगर अच्छी तरह इन मुश्किलों की ख़बर सर्कार तक पहुंचाई जावे॥ सिपाहियों ने समझा कि बड़ी बे-इज्ज़ती हुई। ग़रज़मंद और मतलबी यारों ने उनको और भी भड़काया कि यह उनकी बे इज्ज़ती जान बूझ के की गयी॥ निदान देखते ही देखते यह बलवे की हवा सारे हिन्दुस्तान में फैली बिरली ही छावनियां तो इसके ज़हर से बची हुईं

बाक़ी सब में सिपाहियों ने आफ़त मचायी॥ जब सिपाही बिगड़े तो फिर बदमआशों का उभड़ना क्या तअ़ज्जुब है। हाकिम का डर न रहने से लूट मार में कौन सा तरद्दुद है। जब ऊंची जात वाले सिपाहियों ने मेरट में अपने अफ़सरों पर गोली चला कर जेलख़ाना खोल दिया। तो गूजरों का क्या क़ुसूर है जिसकी लाठी उसकी भैंस सब ने इसीपर अमल किया॥ और अगर पूछो कि शरीफ़ों ने रईसों ने बड़े आदमियों ने बलवा दबाने में सर्कार को मदद क्यों नहीं दी। तो हम यही कहेंगे कि इनमें ऐसी हिम्मत और बहादुरी किसने पायी॥ भला यह बनिये महाजन लाला बाबू हथियार चलाने लाइक़ हैं? बनज बेवपार रुपये पैसे का काम जो चाहो इन से ले लो॥ राजा महाराजा अपने इलाक़ों की आमदनी ऐश आराम में ख़र्च करते हैं हिफ़ाज़त का भरोसा सर्कार पर रखते हैं जुलूस के लिये कुछ सवार पियादे रख लिये तो क्या वह सर्कार के क़वाइद सीखे सिपाहियों से लड़ सकते हैं ज़रा ग़ौर करो॥ ये लोग अपनी ही जान बचाने की फ़िक्र में पड़ गये थे। हां सर्कार की फिर सल्तनत जमने की दुआ दिल से मांगते थे॥ सिवाय इसके "लायलटी,, यानी सर्कार की ख़ैरख़ाही के मानी में फ़रंगिस्तान और हिंदुस्तान के दर्मियान बड़ा फ़र्क़ है जिसके नाम की डौंड़ी पिटे उसका हुक्म मानना यही यहां की ख़ैरख़ाही है। सैकड़ों बरस से जो बादशाहियों का उलट पुलट देखा किये हैं अब उसकी परवाही नहीं है॥ पठान मुग़ल मरहठों के जुल्म ज़ियादती ने इन को ऐसा बिगाड़ दिया। कि "पेट्रिआटिज़्म" के लिये हम को यहां की बोलीमें कोई लफ़्ज़ ही नहीं मिला॥ इन के ख़याल हीमें वह आज़ादी नहीं आ सकती जिसके लिये अंगरेज़ों ने स्टुआर्ट के ख़ानदान को तख़्त से उतारा। न वह इटालीवालों की ख़ुद मुख़्तार होने की ख़ुशी या जर्मनीवालों की क़ौमी हमदर्दी इनके ख़यालमें आ सकती है जिस से यह मुल्क एक होकर ऐसी बड़ी "इम्पायर,, यानी शाहनशाही बन गया॥

ग़रज़ यह सन् १८५७ के बलवे की जड़ सिर्फ़ हिन्दुस्तानी फ़ौज की बिगड़ जाना है कि जिस का इलाज उस वक़्त विलायती यानी गोरों की फ़ौज यहां कम रहने के सबब जैसा चाहिये तुर्त न हो सका। और बग़ावत के मानी तो कुल इतने ही लग सकते हैं कि बदमआश और मुफ़सिदों को जैसे अंधे के हाथ बटेर लग जाय मन मानता मौक़ा मिल जाने से ग़दर मच गया॥

अब कुछ थोड़ा थोड़ा सा हाल इस बलवे के बड़े बड़े
१८५७ ई० हंगामों का लिखा जाता है बाईसवीं जनवरी सन् १८५७ को कलकत्ते के पास दमदमे में जहां तोपख़ाना और फ़ौज रहती है सत्तरहवीं हिन्दुस्तानी पल्टन के कमान अफ़सर (कमांडिंग अफ़िसर) को मालूम हुआ कि सिपाही लोग यह अफ़वाह सुनकर कि कारतूसों में गाय और सूअर की चरबी लगी है निहायत घबरा गये हैं और जड़ इस अफ़वाह की यह बतलाते हैं कि तोपख़ाने के किसी ख़लासी ने वहां किसी सिपाही से पानी पीने को लोटा मांगा जब सिपाही ने अपना लोटा देने से इन्कार किया तो ख़लासी ने कहा "ख़ैर हमको लोटा देने से तो तुम्हारी जात जाती है। लेकिन जब गाय और सूअर की चरबी मले कारतूस दांत से काटोगे तब देखेंगे तुम्हारी जात क्या होती है॥ सिपाहियों से यह भी मालूम हुआ कि इस तरह की ख़बर तमाम हिन्दुस्तान में फैल गयी है। और अब छुट्टी लेकर घरजाने पर घरवाले काहे को साथ खायें पीयेंगे यह बड़ी दहशत लगी है। इस बात की तहक़ीक़ात हुई और उसी महीने की सत्ताईसवीं को गवर्नर जेनरल ने हुक्म दे दिया कि चरबी की जगह जो सर्कारी मेगज़ीनों में लगायी जाती थी सिपाही ख़ुद बाज़ार से तेल और मोम ख़रीद कर अपने हाथ से कारतूसों में लगा लेवें पंजाब को भी यही हुक्म भेजा गया। लेकिन अफ़सोस है कि न गज़ट में छापा गया और न तमाम छावनियों में फ़ौज को समझाया गया॥

यह हवा दमदमे से बहरामपुर पहुंची। वहां उन्नीसवीं हिन्दुस्तानी पल्टन थी॥ उन्नीसवीं फ़रवरी को रात के वक़्त

परेड पर जमा हुई। कमान अफ़सर १८० सवार और दो तोपें लेकर आया सिपाहियों ने कहा कि साहिब यह सुनकर कि हम लोगों से ज़बर्दस्ती कारतूस कटवाने को गोरे बुलवाये गये हैं बड़ा डर पैदा हुआ है कर्नल मिचिल ने समझाया कि अब कारतूस दांतसे नहीं काटने पड़ेंगे हाथसे तोड़कर बंदूक़ में भरे जावेंगे पलटन अपनी लेनको चली गयी॥ लार्ड केनिंग ने इस ख़याल से कि दूसरी पलटनें भी उन्नीसवीं का तरीक़ा न इख़्तियारकरें उन्नीसवीं पलटनको कलकत्तेके पास बारकपुर की छावनीमें बुलवाकर उसकानाम कटवा दिया। इसीके बाद वहां बारकपुर में चौतीसवीं पलटन के किसी सिपाही ने अपने किसी अफ़सर पर चोट चलायी उसके साथियों ने उसेगिरफ़्तार तक न किया॥ सज़ा में इस चौतीसवीं पलटन की भी सात कम्पनियों का नाम काटा गया। और दो आदमियों के लिये फांसी का हुक्म हुआ॥ सतरहवीं के दो आदमी काले पानी भेजे गये गवर्नमेंट का इरादा था कि इस तरह पर झटपट सज़ा देदिलाकर सरकशी दबादेवे लेकिन सिपाही उलटे और भी बिगड़गये॥ पांचवीं मईको मेरटमें तीसरे रिसालेके पचासी सवारों ने कारतूस काममें लानेसे इनकार किया। और सबों को कोर्टमार्शलसे उन्हेंसख़्त मिहनतकेसाथ जुदा जुदा मीआद की क़ैदका हुक्म मिला॥ दूसरेही दिन तमाम हिंदुस्तानी फ़ौज ने जो उस वक़्त वहां छावनी में थी यानी उस रिसाले के साथ दो पलटनों ने मिल कर बलवा किया। क़ैदियों को जेलख़ानेसे निकाल दिया॥ अपने अफ़सरोंपर गोली चलायी। छावनी में आग लगायी॥ फ़रंगी जो हाथ लगे सब को मार डाला। न औरत न बच्चा उन पापियों के हाथसे बचा॥ और तअज्जुब यह कि बाईस सौ गोरों की फ़ौज वहां मौजूद थी लेकिन कमान अफ़सर ने कुछ हाथ पैर न हिलाया। तमाम बलवाइयों को मज़ेसे दिल्ली चले जाने दिया॥ इन्होंने दिल्ली में भी वही मेरट का सा हाल किया। शाह आलम के पोते बहादुरशाह को जो वहां क़िले में गवर्नमेंट से पिंशन पाताथा

बादशाह बनाया ॥ बलवाई अपने जोश में बावले बन गये थे । भला बुरा या वाजिब ग़ैर वाजिब कुछ नहीं देखतेथे ॥ दिल्ली में गोरों की फ़ौज नथी । यही बड़ी आफ़तों की जड़ हुई बहुतेरे मुसल्मान दिल्ली की बादशाही फिर क़ाइम होना चाहते थे । वे ईसाइयों की हुकूमत से निकल कर फिर पुराने लंबे चौड़े ख़िताब और बड़ी बड़ी जागीरों के मिलने का ऐसे वक़्त में पूरा भरोसा रखते थे बाज़े अक़्ल के पूरे हिन्दू भी उनके शामिल होगये ॥ निदान देखते ही देखते यह बलवे की आग ऐसी फैली । कि एक दफ़ा तो गोया दुआब अवध और रुहेलखंडसे सिवाय मेरटकी छावनी लखनऊ की रज़ीडेंटी और आगरे और इलाहाबाद के क़िले के बिल्कुल अंगरेज़ी अमल्दारी ही उठ गयी ॥ कान्हपुरमें सिपाहियोंने पांचवीं जून को बलवा किया । और नान्हाराव को अपना सर्दार बनाया ॥ नान्हा को सर्कार से अपना एवज़ लेने का यह अच्छा मौक़ा मिला । जेनरल ह्वीलर बारकोंमें मोरचे लगाकर सातसौ अंगरेज़ों के साथ कि जिसमें ज़ियादा मेमबच्चे और न लड़नेवाले साहिब लोग थे बंद हुआ ॥ बाईस दिन तक बड़ी बहादुरी के साथ लड़कर जबखाने और लड़नेका सामान न रहा जानकी अमान का क़ौल क़रारलेकर सबने अपने तईं नान्हाकेहवाले करदिया । उस कमबख़्त ने सबको कटवा डाला मेम और बच्चों का भी कुछ ख़याल न किया ॥ नव्वाब तफ़ज़्ज़ुल हुसेनख़ांकी बग़ावत के सबब जो साहिब लोग फ़तहगढ़ (फ़र्रुख़ाबाद) से निकल आये थे उनको भी इसने जानली । जो मेम और बच्चे बचरहे थ जुलाई में सर्कारी फ़ौज पास पहुंचने पर उन सब बेचारों की गर्दन मारी ॥ सिर्फ़ दो साहिब इसके हाथसे बच निकले । गोया इस मुसीबत की कहानी सुनाने को जीते रहे ॥

अवध की फ़ौज जून के शुरूहीमें बिगड़गयी । और बादशाह बेगम उस के लड़के बिर्जीसक़दर के नाम से फिर पुरानी नव्वाबी चमकी ॥ तअल्लुक़ेदारोंका ज़ोर ज़ुल्म अंगरेज़ी अमल्दारी में दबारहा । अब बिर्जीसक़दर के झंडे तले फिर

सिर उठाने का अच्छा मौक़ा पाया ॥ सर हेनरी लारेंस रज़ीडंटी यानी बेलीगारद में अंगरेज़ों के साथ बंदहुए । कुछ उन में लड़नेवाले थे और कुछ न लड़नेवाले ॥

रुहेलखंड को नव्वाब ख़ां बहादुर ख़ां ने दबाया । मऊ नीमच नसीराबाद की फ़ौजें और हुलकर और सेंधिया के कंटिंजेंटों ने भी बलवा मचाया ॥ झांसी की रानी और बांदे के नव्वाब ने बुंदेलखंड पर क़बज़ा किया । दिल्ली तो गोया बलवे का मर्कज़ था जो फ़ौज जहां बिगड़ी सबने सीधा दिल्ली का रस्ता लिया ॥

जैसा बड़ा बलवा हुआ † वैसाही लार्ड केनिंग भी बड़ा गवर्नर जेनरल था ॥ तुर्त मंदराज और बम्बई से फ़ौजें इधर को रवाना कराईं । जो गोरों की पल्टनें चीन को जाती थीं रास्तेही से सब यहां मंगालीं ॥ लेकिन सर्कारका बड़ा सहारा पंजाब था । सरहद होने के सबब और जगहों से वहां गोरों की फ़ौज ज़ियादाथी सर जान लारेंस * को जिन हिन्दुस्तानी पल्टनों की नमकहलाली और वफ़ादारी का भरोसा न हुआ तुर्त सब से हथियार रखवा लिया ॥

कमांडर इनचीफ़ने सातहज़ार फ़ौज † से आठवीं जूनको दिल्ली की पहाड़ी पर मोरचा जा जमाया । बलवाइयोंका ज़ोर था धीरे धीरे मुहासरा बढ़ा के चौदहवीं सितम्बर को धावा कर दिया ॥ क़दम क़दमपर लड़ाई हुई और लहू बहा । यहां तक कि उन्नीसवीं को क़िला भी हाथ आगया और दिल्ली में

---

* एक रोज़ शिमला में मुझे कुछ काग़ज़ पढ़ने के लिये बुलाया जब काम होगया ख़ुशीमें आकर फ़र्मानेलगे तू जानता है हम को ये अफ़ग़ानी क्या कहते हैं अर्ज़ किया हुज़ूर नहीं बोले ज़बर्दस्त जान लारेंस । इस में किसी तरहका शक नहीं कि वह सच मुच ज़बर्दस्त थे ॥

† ज़ियादा इस फ़ौज में गोरे थे और पंजाब से लिये गये थे लेकिन हिंदुस्तानियों में सिरमौर वाली गोरखों की पल्टन और गाइड कोरने बड़ा नाम पाया ॥

फिर सर्कारी अमल हुआ ॥ आदमी दोनों तरफ़ के बहुतकाम आये । शायद सन् १७३९ की नादिरशाही में भी शहरकेअंदर इस से बढ़ कर नहीं मारे गये ॥ बहादुरशाह कुनबे समेत क़ैद किये गये । औररंगून जाकर कुछदिनोंबाद उसीक़ैदमेंमरे॥

जुलाई के शुरू में जेनरल हेवलाक साहिब दो हज़ार आदमी और कुछ तोपें लेकर कान्हपुर और लखनऊ लेने को चले । बारहवीं और पंद्रहवीं को नान्हा की फ़ौज फ़तहपुर और पांडु नदी से भगा कर सत्तरहवीं को कान्हपुर में दाख़िल हुए । लेकिन लखनऊ में बेलीगारदवालों की चौबीसवीं सितम्बर तक मदद न पहुंचा सके ॥ नवीं नवम्बर को नये कमांडर इन चीफ़ सर कालिन कैम्बल तीन हज़ार आदमियों के साथ लखनऊ जाकर बेलीगारदवालों को कान्हपुर निकाल लाये । बाग़ी और बलवाई सब देखते के देखतेही रहगये ॥ जेनरल ऊटरम को कुछ फ़ौज के साथ लखनऊ के बाहर आलमबाग़ में छोड़ आये थे । कान्हपुर में एक भारी लश्कर
१८५८ई० इकट्ठा करके मार्च सन् १८५८ के शुरू में फिर लखनऊ गये ॥ एक हफ़्ते की बड़ी कड़ी लड़ाई के बाद सोलहवींको लखनऊ हाथ आया । महाराज सरजंगबहादुर ने जो अपने गोरखोंकी फ़ौज लेकर नयपाल से मदद को आये थे अच्छा काम दिखलाया ॥ बेगम और बिर्जीसक़दर नान्हा समेत तराई की तरफ़ भागे । और फिर न सुनाई दिये ॥

निदान दिल्ली और लखनऊ के हाथ आने से बलवा ख़तम हुआ । और जब उधर रुहेलखंड भीलेलिया और इधरझांसी को सर ह्यू रोज़ ने साफ़ किया सब जगह अमन चैन होगया॥

पर विलायत में पार्लामेंटवालों की यह राय ठहरी कि अब हिंदुस्तान की हुकूमत कम्पनी से ले ली जाय सच है पैदाकरनेवाले मालिक को जो कुछ काम इस कम्पनी से लेना था वह पूरा हो चुका । देखो पलासी की लड़ाई से इस सौ बरस के अंदर सर्कार कम्पनी बहादुर ने क्या क्या कामकरदिखलाया और हमारे हिंदुस्तान के मुलक को कहां से कहांपहुंचाया॥

जिस ज़मीन में लोग गाय भी नहीं चराते थे वहां अब सुन्दर खेतियां होती हैं। जहां ज़मींदार नित बाक़ी मालगुज़ारी की इल्लत में पकड़े बांधे जाते थे वहां अब पक्के बन्दोबस्त की बदौलत क़िस्त ब क़िस्त मालगुज़ारी अदा करके पांव फैलाये सोते हैं॥ जिन रास्तों में बकरी का गुज़र न था वहां बग्गियां दौड़ती हैं। जहां अशरफ़ियों की बहली मयस्सर न थी वहां आनों पर रेल गाड़ियां हाज़िर हैं॥ जहां क़ासिद नहीं चल सकता था वहां तार की डाक लग गई है। जहां क़ाफ़िलों की हिम्मत नहीं पड़ती थी वहां अब एक एक बुढ़िया सोना उछालती चली जाती है॥ जहां हज़ारों की तिजारत होती थी वहां करोड़ों की नौबत पहुंच गयी है। जिन्हें दिन भर मज़दूरी करने पर भी पाव भर सत्तू या चना मिलना कठिन था उनकी उज्रत अब चार आने रोज़ और आठ आने रोज़ से कम नहीं है॥ जिन किसानों की कमर में लंगोटी दिखलायी नहीं देती थी उनकी घरवालियां गहने झमकाती फिरती हैं क्या पुल और क्या नहर क्या मुसाफ़िरख़ाने और क्या दारुश्शिफ़ा क्या पुलिस और क्या कचहरी क्या इंसाफ़ और क्या क़ानून क्या इल्म और क्या हुनर क्या ज़िंदगी का ज़रूरी असबाब और क्या ऐश का सामान जो कुछ इस कम्पनी के राज में देखा गया न पहले किसी के ख़याल में आया था न आज तक कहीं सुना गया। गोया जंगल पहाड़ झाड़ झंखाड़ से इस देश को बाग़ हमेशा बहार बना दिया॥ क्या महिमा है अपरम्पार सर्व शक्तिमान जगदीश्वर की कि

इंगलिस्तान के जिन सौदागरों ने और दूकानदारों ने कम्पनी बन कर अपने बादशाह से हिंदुस्तान में तिजारत करने को सनद ली। आज उन्होंने इस सारे हिंदुस्तान "जन्नत निशान" ख़ुलासे जहान की पूरी सल्तनत अपने बादशाह शाहन्शाह क़ैसर-हिंद एमपरेस विकटोरिया को (ईश्वर दिन दिन बढ़ावे प्रताप उसका) नज़र की॥ दूसरी अगस्त १८५८ को पार्लमेंट ने यह हुक्म दिया कि अब आगे को ईस्ट इंडिया कम्पनी के साझी हिंदुस्तान से कुछ इलाक़ा न रक्खें। जो कुछ उनका रुपया

लगता है उसका सूद ख़ज़ाने से ले लिया करें ॥ बादशाही हिंदुस्तानमें बादशाह की रहे। यहभीखुशनसीबी हिंदुस्तान की थी सौदागरों के तहत से निकल कर ख़ास बादशाह के तहत में आया काले आदमी भी एम्परेस विक्टोरिया केख़ास रअय्यत कहलाये ॥ कोई मुसल्मान बादशाह होता इसबलवे के बाद यहां क़त्ल आम और शहरों को ढाह कर गधे का हल चलाने के लिये हुक्म देता। लेकिन कृपानिधान दयाधान् क्षमासागर जगतउजागर श्रीमती महारानी एम्परेस विक्टोरिया ने जो इश्तिहार भेजा और पहला नवम्बर को लार्ड केनिंग गवर्नर जेनरल ने आप पढ़कर इलाहाबाद में सब लोगों को सुनाया उसके सुनने से सारी प्रजाका मन कमल की कली सा खिल गया ॥ उसकी नक़ल नीचेलिखीजातीहै ये पढ़नेवालोअपने पैदा करनेवाले मालिक से यही दुआ मांगो कि हमारीएम्परेस विक्टोरिया क़ैसर हिंदकी सल्तनत लाज़वालहोवे। औरऐसी रअय्यत पर्वर शहन्शाह हम लोगों के शिरपर सदाबनीरहे ॥

इश्तिहार

(जैसा पहली नवम्बर १८५८ ई० के गवर्नमेंट गज़ट में छपाहै)

——000——

श्री महारानी का कौंसल के इजलास में हिंदुस्तान के रईस और सर्दार और सब लोगों के लिये ॥

श्री महारानी विक्टोरिया ईश्वर की कृपासे ग्रेटब्रिटेन और आयर्लैन्ड और उन सब देशों की जो यूरप और एशिया और अफ़रीका और अमरीका और आस्ट्रेलेशिया में उन के आधीन हैं और स्वमत प्रतिपालक ॥

क्योंकि कई तरह के भारी सबबों से हमने धर्म सम्बन्धी और राज्य सम्बन्धी प्रधानों और प्रजा के मुख़तारों की जो पार्लामेंट में जमा हुए सलाह और मंज़ूरी के साथ इरादा किया है कि हिंदुस्तान के मुल्क का बन्दोबस्त जो हमने आजतक आनरेबल ईस्ट इण्डिया कम्पनी को अमानत सौंप रक्खाथा अपने अख़्तियार में लावें ॥

इसलिये अब हम इश्तिहार देते हैं और प्रगट करते हैं कि ऊपर लिखी हुई सलाह और मंज़ूरी के बमूजिब उक्त अधिकार अपने हाथ में ले लिया और इस इश्तिहार की रूसे अपनी सब प्रजा को जो उस मुल्क में है ताकीद फ़र्माते हैं कि हमारे और हमारे वारिस और जानशीनों के साथ वफ़ादारी और सच्ची ताबेदारी करे और जिस किसी को हम अपने नाम और अपनी तरफ़ से अपने उस मुल्क के बंदोबस्त के लिये वक़्त ब वक़्त आगे मुकर्रर करना मुनासिब समझें उसका हुक्म मानती रहे॥

और क्योंकि फ़र्जन्द अर्जमन्द और मोतबर सलाहकार चार्लस जान वैकौंट केनिंग साहिब बहादुर की वफ़ादारी लियाक़त और समझ पर हमको ख़ास करके पूरा भरोसा और दिलजमई हासिल है इसलिये उक्त वैकौंट केनिंग साहिब बहादुर को हमारे उस मुल्कका बंदोबस्त हमारे नाम से और उमूमन् सब काम हमारी ओर और हमारे नाम से करने के लिये हमारे उनसब हुक्म और क़ानूनों के बमूजिब जो हमारे किसी बड़े वज़ीर की मारिफ़त उसके पास वक़्त ब वक़्त पहुंचे हमने उस मुल्क का अपना पहला वैसराय अर्थात् क़ाइम मुक़ाम और गवर्नर जेनरल मुक़र्रर फ़र्माया॥

और जो सब लोग कि अब किसी उहदे पर क्या मुल्की और क्या फ़ौजी सर्कार अनरेबल ईस्ट इन्डिया कम्पनी की नौकरी में दाख़िल हैं इस इश्तिहार की रूसे हम उन सब को अपने उहदों पर बहाल और क़ाइम रखते हैं लेकिन वह सब लोग हमारी आयन्दा मर्ज़ी और उन सब आईन और क़ानूनों के ताबे रहेंगे जो इसके बाद जारी किये जावें॥

और हिंदुस्तान के रईस और सर्दारों को हम इत्तिला देते हैं कि जो क़ौल क़रार और अहदनामे अनरेबल ईस्ट इन्डिया कम्पनी ने उनके साथ कियेहैं या उसकी इजाज़त से किये गयेहैं हम उन सबको क़बूल और मंज़ूर फ़र्मातेहैं और बहुत इहतियात से बहाल और बक़रार रक्खेंगे और उमेद है कि उन

सब रईस और सर्दारों की ओर से भी ऐसाही लिहाज़ रहेगा ॥

जो सबमुल्क कि अब हमारे क़ब्ज़े मेंहैं हम उन्हें बढ़ाना नहीं चाहते और जब कि हम ऐसा न होने देवेंगे कि दूसरे लोग हमारे मुल्क या अधिकारों पर निःशंक हाथ बढ़ावें तो हम भी दूसरों के मुल्क या अधिकारों पर हाथ बढ़ाये जाने की इजाज़त न देवेंगे हम हिन्दुस्तान के रईस और सर्दारों के अधिकार और दर्जे और उनकी प्रतिष्ठा ऐसी ही समझेंगे जैसी अपनी समझतेहैं और हमारी इच्छा है कि वे सब और हमारी अपनी प्रजा भी उस बढ़ती और चाल चलन की दुरुस्ती को हासिल करें कि जो केवल मुल्क में सुलह और अच्छा बंदोबस्त रहने से हो सकती है ॥

जो काम कि हमको अपनी और सब प्रजाके वास्ते करने उचित और कर्तव्यहैं वही हिंदुस्तानवालोंके लिये भी हम अपने ऊपर वाजिब समझेंगे और सर्बशक्तिमान परमेश्वरकी कृपासेउन सबकामों को वफ़ादारी के साथ सच्चे दिलसे करते रहेंगे ॥

यद्यपि हमको ईसाई मतके सच्चे होने का दृढ़ निश्चय है और उस मतसे जो तसल्ली कि हासिल होती है उसको हम शुकरगुज़ारी के साथ स्वीकार करते हैं तथापि न अपना हम इस बात में अधिकार समझते हैं और न हमको इस बात की इच्छा है कि ज़बर्दस्ती अपनी प्रजा को भी उसका निश्चय दिलावें यह हमारा बादशाही हुक्म और मर्ज़ी है कि न किसी को उसके मतके कारन पच्छकी जावे और न किसी को उसके कारन तकलीफ़ दी जावे बरन सब लोग बराबर एक ही तौर पर बिना पक्षपात क़ानून के बमूजिब रक्खे पावें और जो लोग कि हमारे तहत में इख़्तियार रखते हैं हम उनको बड़ी ताकीद से हुक्म देतेहैं कि वे हमारी किसी प्रजा के मतके निश्चय और पूजा में कभी कुछ दस्तन्दाज़ी न करें नहीं तो उनपर हमारा अत्यन्त कोप होगा ॥

और यहभी हमारा हुक्म है कि जहां तक बन पड़े हमारी प्रजा को चाहे जिस जात और चाहे जिस मत की

क्यों न हो उनकी विद्या योग्यता और दियानतदारी के बमूजिब जिन उहदों का काम कि वे हमारी नौकरी में अनजाम दे सकें उनको बे रोकटोक और बिना पक्षपात के दियेजावें॥

हिंदुस्तान के लोग धरती के साथ जो उनके पुरखाओं से उनके अधिकार में चली आयी है बड़ी मुहब्बत रखते हैं यह बात हमको बखूबी मालूम है और हमको इस बात का बड़ा लिहाज़ है और हमको मंजूरहै कि वाजिबी मुतालबे सर्कारी अदा करने पर उनके उस धरती के सारे अधिकारों की रक्षा करें और हम हुक्म देते हैं कि क़ानून बनाने और जारी करने में हिंदुस्तान के पुराने अधिकार और दस्तूर और रीत रसमों का उमूमन ठीक लिहाज़ रक्खा जावे॥

जो आफ़तें और ख़राबियां कि हिंदुस्तान पर उन फ़सादी लोगों के कर्तब से पड़ी हैं जिन्हों ने झूठी झूठी अफ़वाहों से अपने देशवालों को बहकाकर उन से खुले बन्दों बलवा करवा दिया हमको उनका बड़ा अफ़सोस है हमारी शक्ति तो रणभूमि में उस बलवे के दबाने से प्रगट हो गयी अब हम उन लोगों के अपराध क्षमा करके जो इस ढब से बहकावट में आगये लेकिन फिर इताअत की राह पर चलना चाहते हैं अपनी दया प्रगट करते हैं॥

इस बिचार से कि अब अधिक ख़ूनरेज़ी न होवे और हमारे हिंदुस्तान के देशों में झटपट अमन चैन हो जावे हमारे वेसराय और गवर्नर जेनरल बहादुर ने एक इलाके में जिन सब लोगों ने कि इस दुखरूप बलवे में हमारी सर्कार के विरुद्ध अपराधकिये हैं बहुतों को उन में से कईएक शर्तोंपर अपराध क्षमा होने की आसा दी है और जिनके अपराध कि क्षमा होने की पहुंच से बाहर हैं उन्हें जो सज़ा दी जायगी वह भी ज़ाहिर कर दी है हम अपने वेसराय और गवर्नर जेनरल का यह काम मंज़ूर और क़बूल करते हैं और उसके सिवाय नीचे और भी हुक्म ज़ाहिर फ़र्माते हैं॥

साबित हो कि उन्हों ने आप सर्कार अंगरेज़ की प्रजा के क़तल में शराकत की बाक़ी सारे अपराधियों पर हमारी दया होगी क्योंकि जिन्हों ने आप सर्कार अंगरेज़की प्रजा के क़तल में शराकत की उन पर दया करना इनसाफ़की रूसे मना है॥

जिन लोगों ने क़तल करनेवालों को जान बूझ कर पनाह दी या बलवाइयों के सर्दार और उनके बहकानेवाले बने उनके केवल जीवदान का वादा हो सकता है लेकिन ऐसे आदमियों को वाजिब सज़ादेनेमें उनसब बातोंका जिनके सबबसे बहक कर अपनी इताअत से फिरगये पूरा लिहाज़ किया जायगा और उनलोगों के वास्ते जो बिना सोचे बिचारे फ़सादियों की झूठी बातों को मानकर गुनहगार बनें बड़ी रिआयत की जावेगी॥

बाक़ी और सभोंसे जो सर्कार के मुक़ाबलेमें हथियार बांधे हुए हैं इस इश्तिहार में हम वादा करते हैं कि जब वे अपने डेरों को लौट जावें और सुलह के कामोंमें हाथ लगावें उनके बिल्कुल क़ुसूर हमारी निस्बत और हमारी सल्तनत और हमारे मर्तबे की निस्बत बेशर्त माफ़ और दरगुज़र और फ़रामोश कर दिये जावेंगे॥

और हमारी यह बादशाही मर्ज़ीहै कि ये रहम और माफ़ करने की शर्तें उन सब लोगों के वास्ते हैं जो पहली तारीख़ जनवरी सन् १८५९ ई० से पहले उनकी तामील करें

हमारी यह जी से अभिलाषा है कि जब परमेश्वरकी कृपा से हिंदुस्तान में फिर अमन चैन हो जावे तो वहां सुलह के उद्यमों को उन्नति देवें और प्रजा के सुख की चीज़ें बनावें और ऐसा बंदोबस्त करें कि वहां की सारी हमारी प्रजाको लाभ हो उनकी वृद्धि से हमारी शक्ति है उनकी संतुष्टता से हमारी रक्षाहै और उनकी शुकरगुज़ारी यहीहमको बड़ी प्राप्ति है सर्वशक्तिमान परमेश्वर हमको और जो लोग कि हमारेतहत में इख़्तियार रखतेहैं सबको ऐसी शक्तिदे कि जिससे हमारीयह अभिलाषाहमारी प्रजा की भलाईके लिये भलीभांति परिपूर्णहो॥

॥ इति ॥